अक्टूबर 2025 रु.20/-

गाँव गिराँव

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

विश्व की तीसरी आर्थिक शक्ति के दहलीज पर भारत

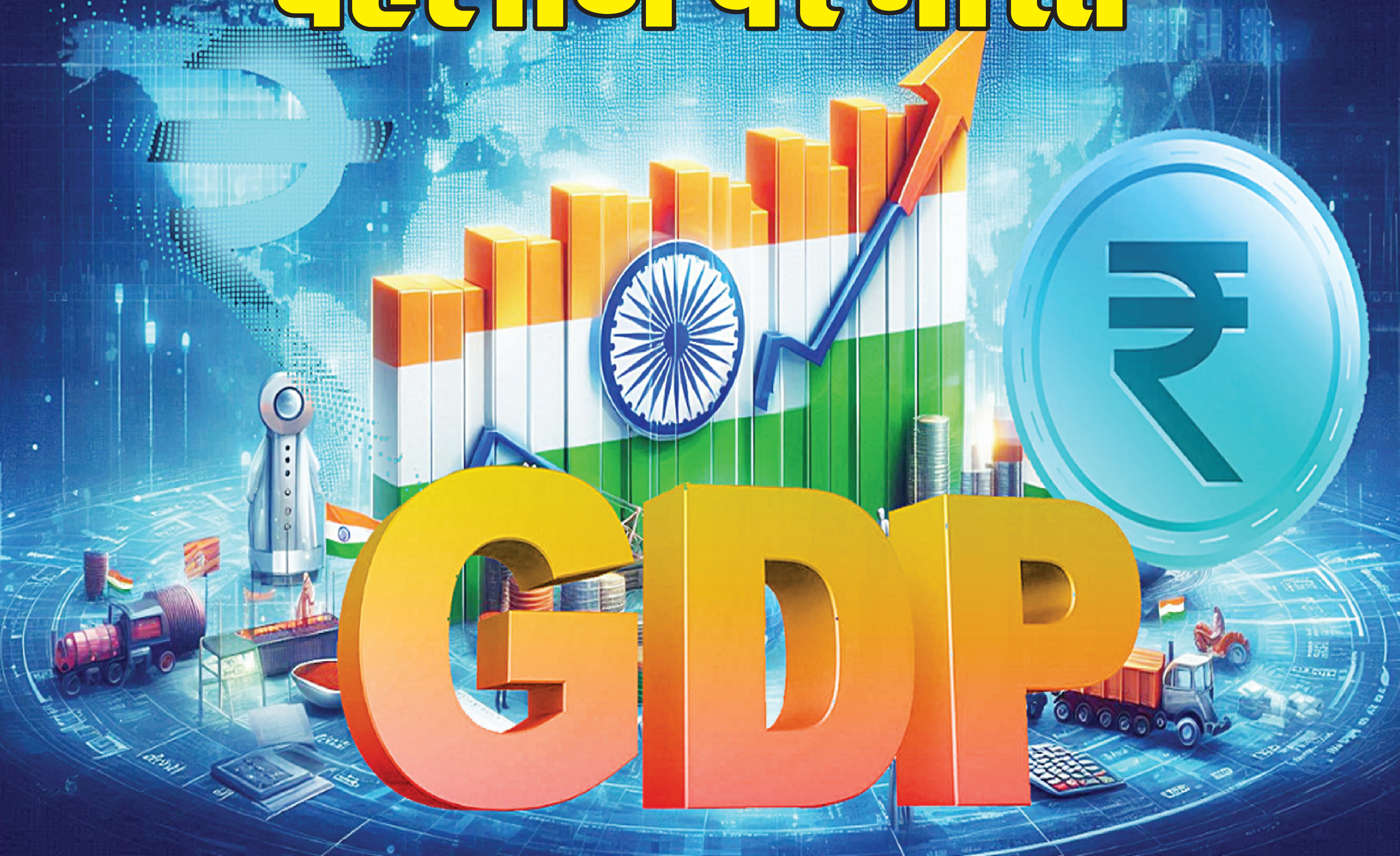

विश्वास करेंगे एक बार, इस्तेमाल करेंगे बार-बार...

SRI HARIVANSH ENTERPRISES

Corp. Of Goel Tower Anura Kala, Chinhat Lucknow-226028 (U.P.)
Production Unit: Sandauli Umarpur, Safedabad, Barabanki - 225003 (U.P.)
Customer Care No.: +91 9415867528

गाँव गिराँव

वर्ष : 14, अंक : 11, अक्टूबर 2025, पृष्ठ 44, मूल्य : 20/-

सलाहकार सम्पादक - योगेन्द्र नारायण, दिनेश चंद्र
सम्पादक - श्रीधर द्विवेदी
समाचार सम्पादक - डॉ. पंकज कुमार ओझा
प्रबन्ध सम्पादक - गुरु प्रसाद शुक्ल
सहायक सम्पादक - कमलेश पाण्डेय, रविन्द्र प्रताप सिंह गोपाल मौर्य, महेश कुमार यादव
उप सम्पादक - वीरेन्द्र कुमार विन्द नागेश्वर सिंह, रामप्रसाद यादव
विज्ञापन प्रबन्धक - उमेश चन्द जैन
डिजिटल एग्जिक्यूटिव - इ. अमित पटेल
लेआउट व डिजाइन - मंजीत कुमार गुप्ता

नेशनल मीडिया एक्जक्यूटिव
महेन्द्र प्रसाद गांधी-9415874679

राज्य प्रभारी - दिल्ली - यश सिंह 8882678591
चंडीगढ़ - ओ.पी. राय 8009069795
लुधियाना - गुरदीप सिंह-9815453958
पटना - अमित मिश्रा- 9263056540
पूर्वी उ0प्र0 - प्रदीप राय- 8546055042
पश्चिमी उ0प्र0- अनिल कुमार बाजपेयी-8052159000
लखनऊ - डा. विजयकांत पाण्डेय - 8795506060
प्रयागराज- मनोज पाण्डेय - 9140410568
मिर्जापुर - राजेश कुमार मिश्र- 6393139610
म0प्र0 - प्रहलाद पटेल - 7566126043
रीवा- नन्दलाल पाण्डेय- 9981962439

विशेष प्रतिनिधि- अरविन्द सिंह (वाराणसी) 9919442266
कालीदास त्रिपाठी (चन्दौली) 9838454120, ओमकार नाथ- 9415698795, अशोक जायसवाल- 9451891800, मनोज यादव- 9598155820

कार्पोरेट आफिस

गाँव गिराँव मीडिया प्रा0लि0
मिथिलेश कुमार (ब्यूरो चीफ)
सी-216, सेक्टर-63 नोएडा, गौतम बुद्धनगर
उत्तर प्रदेश पिन-201309
मो0 - 9811191394, 9910768136
ई-मेल – gaongiraw@gmail.com
बेवसाइट - www.gaongiraw.in

मुम्बई ब्यूरो- 704/25 सोनम मारी गोल्ड, राम मन्दिर के पास, ओल्ड गोल्डेन नेस्ट-3 मीरा भयन्दर रोड भयन्दर, (ईस्ट) थाणे महाराष्ट्र-401105
8850955358, 9930046946

हेड ऑफिस पत्राचार- 13, दीपशिखा अपार्टमेंट गांधीनगर, सिगरा, वाराणसी, उप्र-221010
मो.- 9450825966, 7525825966

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीधर द्विवेदी द्वारा युग सत्य प्रिंटिंग प्रेस, शिवपुर वाराणसी उ0प्र0 से मुद्रित व शि.15/137 भरलाई शिवपुर, वाराणसी (उ0प्र0) 221009 से प्रकाशित।

RNI No - UPHIN/2012/41296

भीतर के पन्नों पर

विचार बिन्दु :
युद्ध नहीं शांति की ओर लौटने का वक्त... 2
कवर स्टोरी :
तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था 3-5
जीएसटी 2.0 से क्या... 6-7
समीक्षा
आर्यकल्प : जानकी प्रसाद शर्मा 8-9
कहानी
ढीठ 10-11
माँ-बेटे 12-13
माँसी-माँ 14-15
लघुकथा
परम्परा के बेड़ियाँ 16
कविता
पवन शर्मा की पाँच कविताएं 17
अशोक सिंह की कविताएँ 18-19
ऊर्जा
सौर पीवी परियोजना की आधारशिला 20
सोलपर पीवी प्रोजेक्ट का उद्घाटन 21
सराहनीय
मंत्री ने खुर्जा एसटीपीपी... 22
उपलब्धि
एनटीपीसी ने जीते 127 पुरस्कार 23
स्मृति शेष 24-26
पर्यटन
गुजरात का गौरव 'रानी की वाव' 27
ब्यूटी फैशन
बालों को बनाएं स्मूथ व शाइनी 28
खेती बाड़ी
ग्रामीण क्षेत्रों में डिटिजल... 29-30
एआई और खेती 31-32
धर्म-कर्म
काशी : आध्यात्मिकता का... 33
शक्ति व साहस का पर्व है नवरात्रि 34-35
ज्योतिष 36
स्वास्थ्य- रजोनिवृत्ति : समस्या और समाधान 37
बच्चों में फैल रहा हैंड फुट माउथ सिंड्रोम 38
खेल-खिलाड़ी 39

पाठकों से– पत्रिका के लिए आपके प्रतिक्रिया, सुझाव, विचार आमंत्रित हैं। ई मेल–gaongiraw@gmail.com पर भेजें। – सम्पादक

नोट– पत्रिका में प्रकाशित लेख, विचार लेखकों के अपने हैं, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। पत्रिका में दिये गये पद अवैतनिक हैं। समस्त विवादों का न्यायक्षेत्र वाराणसी न्यायालय क्षेत्र में ही मान्य होगा।

युद्ध नहीं शांति की ओर लौटने का वक्त...

कश्मीर के विभिन्न स्थानों किश्तवाड़, कठुआ और रियासी आदि जनपदों में बादल फटने के बाद प्रशासन ने अमरनाथ यात्रा पर रोक लगा दी। माँ वैष्णों देवी यात्रा के मुख्य मार्ग को भी बंद किया गया था परंतु पुराने रास्ते से आवागमन चल रहा था। प्रशासन की ढील से चेतावनी के बाद भी समान्य दिन की भाँति आवागमन चलता रहा। पूरे क्षेत्र को बंद करके अलर्ट जारी करने में देरी की वजह से वैष्णों देवी दर्शन यात्रा में सैकड़ों लोग हताहत हुए। पूरे कश्मीर में लगभग 150 से अधिक जानें चली गयी। इस दैवीय आपदा के पीछे मानव जनित भौतिक सुख प्रबंधन सबसे ज्यादा नुकसान दायक रहा है।

आज दुनिया भर में कई जगहों पर युद्ध हो रहे हैं। विश्व के कई हिस्सों में अस्थिरता का माहौल बना हुआ है। एक दूसरे पर बम, मिसाइल, रॉकेट और ड्रोन से हमले किए जा रहे हैं जिनमें लाखों की संख्या में लोग मारे जा रहे हैं। संपूर्ण मानव जाति का अस्तित्व आज खतरे में नज़र आ रहा है। हिंसा इतनी साधारण सी बात हो चुकी है कि कोई भी देश इसे अनैतिक नहीं समझता। अतीत में इन ग़लतियों के कारण मानव जाति को भीषण परिणाम भुगतना पड़ा है।

प्रथम विश्व युद्ध (1914–1918) मानव इतिहास के सबसे विनाशकारी युद्धों में से एक था। इसमें असाधारण मात्रा में जान-माल की हानि हुई। इस युद्ध में लगभग 1.5 करोड़ (15 मिलियन) लोग मारे गए एवं लगभग 2 करोड़ (20 मिलियन) लोग घायल हुए, जिनमें से कई अपाहिज हो गए या मानसिक आघात के शिकार हो गए। यूरोप के कई शहर, गांव, उद्योग पूरी तरह तबाह हो गए। सड़कों, रेलवे, पुलों और भवनों का ढांचा नष्ट हुआ।खेती योग्य भूमि युद्ध, बारूदी सुरंगों और जहरीली गैसों से बर्बाद हो गई। युद्ध के कारण विश्व की अर्थव्यवस्था बुरी तरह चरमरा गई। ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी जैसे देशों पर भारी कर्ज चढ़ गया। 'लॉस्ट जनरेशन' नामक एक पूरी पीढ़ी युद्ध में झुलस गई या मानसिक रूप से टूट गई और पूरे समाज में अशांति, अस्थिरता और अवसाद की भावना फैल गई।

इसके कुछ वर्षों बाद ही द्वितीय विश्व युद्ध (1939–1945) लड़ा गया जो कि मानव इतिहास का सबसे विनाशकारी युद्ध साबित हुआ। इस युद्ध में वैश्विक स्तर पर जान-माल की अत्यधिक हानि हुई। इस युद्ध में लगभग 7 से 8 करोड़ लोग मारे गए, जो उस समय की वैश्विक जनसंख्या का लगभग 3% था। इस दौरान लगभग 2.1 से 2.5 करोड़ सैन्य बल एवं लगभग 4.5 से 5 करोड़ आम नागरिकों की मृत्यु हुई (जिनमें से कई भूख, बमबारी, नरसंहार और परमाणु हमलों में मारे गए)। इसी युद्ध में अमेरिका द्वारा जापान के दो शहरों हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम गिराए गए जिसमें लाखों निर्दोष लोग मारे गए। युद्ध के कारण भारी आर्थिक क्षति हुई। वारसा, स्टेलिनग्राद, ड्रेसडेन, टोक्यो जैसे यूरोप और एशिया के कई बड़े शहर इस युद्ध में पूरी तरह से तबाह हो गए। कई बड़े उद्योग, कारखाने, रेलवे, पुल, स्कूल, अस्पताल आदि हमेशा के लिए नष्ट हो गए और विश्व की (विशेषकर यूरोपीय देशों की) अर्थव्यवस्था चरमरा गई। 6 करोड़ से अधिक लोग अपने घरों से बेघर हो गए और लाखों लोगों को शरणार्थी शिविरों में रहना पड़ा। यह सब कुछ इतिहास के पन्नों में दर्ज है। इतने विनाशकारी परिणाम होने के बाद भी हमने कोई सबक़ नहीं सीखा। मौजूदा परिस्थिति यह है कि आज हमारे सामने तीसरे विश्व युद्ध का खतरा मंडरा रहा है। मौजूदा समय में कई देशों में जंग जैसे हालात हैं। हाल ही में हमने ईरान और इज़रायल के बीच भीषण संघर्ष को देखा। ये दोनों देश परमाणु हथियारों से लैस हैं और ये एक दूसरे का नामों निशान मिटा देना चाहते हैं। इन दोनों देशों के बीच छिड़ी जंग अब सिर्फ इन दो देशों तक सीमित नहीं रही इसकी आग पूरे मध्य पूर्व में फैल गई है।

विश्व के कई हिस्सों में छिड़ी यह जंग मानव विनाश का कारण बन गई है। किसी न किसी के अहम की इस टकराव में जनहानि हो रही है। यह समय युद्ध का नहीं बल्कि शान्ति से आर्थिक मजबूती की ओर बढ़ने का है। यह दुनिया के विकसित देशों की सामूहिक जिम्मेदारी है कि वह प्रकृति संतुलन के लिए युद्ध की विभीषिका को रोके।

तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दहलीज़ पर भारत

डॉ. प्रभात कुमार

'21वीं सदी भारत की होगी'—यह वाक्य अब केवल एक नारा नहीं रहा, बल्कि धीरे-धीरे वास्तविकता में बदलता दिखाई दे रहा है। अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थान, वैश्विक रेटिंग एजेंसियाँ और आर्थिक विशेषज्ञ लगातार इस ओर संकेत कर रहे हैं कि वर्ष 2030-31 तक भारत जर्मनी को पीछे छोड़कर विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। सवाल यह है कि ऐसा कैसे संभव होगा? किन आधारों पर यह आकलन किया जा रहा है? और इस यात्रा में भारत के सामने कौन-सी चुनौतियाँ होंगी?

पिछले तीन दशकों में भारतीय अर्थव्यवस्था ने जबरदस्त परिवर्तन देखा है। 1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद भारत की विकास दर ने गति पकड़ी और धीरे-धीरे दुनिया ने भारत को गंभीरता से लेना शुरू किया। वर्ष 2025 में भारत की जीडीपी लगभग 4.2 ट्रिलियन डॉलर के करीब पहुँच चुकी है।

आज दुनिया के कई बड़े देशों की इकॉनमी संघर्ष कर रही है जबकि भारत की अर्थव्यवस्था तेजी से आगे बढ़ रही है। वित्त मंत्रालय के एक अनुमान के मुताबिक साल 2030 तक भारत की इकॉनमी सात ट्रिलियन डॉलर तक पहुंच सकती है। भारत आज ब्रिटेन और फ्रांस जैसी पुरानी औद्योगिक शक्तियों से कहीं आगे निकल चुका है। भारत की यह आर्थिक प्रगति केवल आँकड़ों का खेल नहीं है, बल्कि यह देश की सामाजिक संरचना, राजनीतिक स्थिरता और तकनीकी क्रांति का प्रतिफल है।

आर्थिक विकास के प्रमुख स्तंभ

भारत आज दुनिया का सबसे युवा देश है जहांलगभग 65% आबादी 35 वर्ष से कम उम्र की है।हर साल लाखों युवा नौकरी के बाज़ार में प्रवेश करते हैं।यही युवा शक्ति उपभोग, उत्पादन और नवाचार तीनों को गति देती है। यदि शिक्षा और कौशल विकास सही दिशा में किया जाए तो यही युवा शक्ति भारत की सबसे बड़ी आर्थिक ताकत साबित होगी।

भारत का आईटी सेक्टर वैश्विक स्तर पर पहचान बना चुका है। बंगलुरु को 'सिलिकॉन वैली ऑफ इंडिया' कहा जाता है।आईटी और BPO सेवाओं के निर्यात से भारत हर साल 200 अरब डॉलर से

अधिकविदेशी मुद्रा अर्जित करता है।अमेरिका और यूरोप की बड़ी कंपनियाँ भारतीय तकनीकी विशेषज्ञों पर निर्भर हैं।इसके अलावा स्वास्थ्य सेवाएँ, फार्मा इंडस्ट्री और शिक्षा सेवाएँ भी भारत को मजबूती देती हैं।

'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' अभियानों ने विनिर्माण एवं औद्योगिक विकासके क्षेत्र को नई गति दी है। मोबाइल फोन निर्माण में भारत अब वियतनाम को पीछे छोड़कर दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देश बन गया है। ऑटोमोबाइल, रक्षा उपकरण और इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पादन में तेज़ वृद्धि हो रही है। प्रोडक्शन लिंक्डइंसेंटिव (पीएलआई) योजना ने बहुराष्ट्रीय कंपनियों को निवेश करने के लिए आकर्षित किया है।

किसी भी अर्थव्यवस्था का विकास मजबूत अवसंरचना पर निर्भर करता है।आज भारत में हर दिन 38 किलोमीटर से अधिक हाईवे का निर्माणहो रहा है। मेट्रो रेल, स्मार्ट सिटी, औद्योगिक गलियारे, बंदरगाह और एयरपोर्ट का विस्तार लगातार तेज़ गति से हो रहा है। डिजिटल अवसंरचना में ळइघ्ट और आधार जैसी पहलों ने पूरी दुनिया को चौंका दिया है।

भारत की लगभग आधी आबादी अब भी कृषि से जुड़ी है। अब कृषि को तकनीक, मूल्य संवर्धन और कृषि-उद्योग से जोड़ा जा रहा है। इससे किसानों की आय बढ़ेगी और ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक गतिशीलता आएगी।

वस्तु एवं सेवा कर (GST)ने आज पूरे देश को एक संयुक्त बाज़ार में बदल दिया है। इससे व्यापार में पारदर्शिता और सरलता आई है।GST 2.0 के आ जाने से कर संरचना प्रणाली और भी सरल होगी तथा व्यवसायों को अनुपालन (म्दस्ज्र्त्हम) में आसानी होगी।इसके जरिए राजस्व पारदर्शिता बढ़ेगी और उपभोक्ताओं को वस्तुओं व सेवाओं की कीमतें अपेक्षाकृत सस्ती मिलेंगी। इसके साथ ही UPI, आधार बेस्ड पेमेंट , डायरेक्ट बेनीफिट ट्रांसफर (DBT) जैसी योजनाओं ने भ्रष्टाचार और लीकेज को कम किया है। आज भारत में डिजिटल भुगतान की संख्या अमेरिका और चीन से भी अधिक है। PLI योजना, स्टार्टअप इंडिया, स्किल इंडिया और आत्मनिर्भर भारत जैसी नीतियों ने घरेलू और विदेशी निवेशकों को आकर्षित किया है। हाल ही में शुरू किए गए राष्ट्रीय सेमीकंडक्टर मिशन, का उद्देश्य भारत को सेमीकंडक्टर विनिर्माण और डिज़ाइन के वैश्विक केंद्र के तौर पर स्थापित करना है।

अगर ऊर्जा क्षेत्र की बात करें तो भारत आज अपनी नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता बढ़ाकर जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता कम करना चाहता है। इसके लिए बड़े पैमाने पर सोलर पार्क, विंड फार्म और ग्रीन हाइड्रोजन हब स्थापित किए जा रहे हैं।यह न केवल पर्यावरण संरक्षण में सहायक होगा बल्कि ऊर्जा सुरक्षा और हरित रोजगार सृजन में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा। जलवायु परिवर्तन पर हुई बैठक (COP26) में भारत ने साल 2070 तक शून्य कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य हासिल करने का संकल्प लिया है।

चुनौतियाँ जो सामने हैंः

न्यायायिक सुधार करना आज के व्यक्त की जरूरत है। आज भारत की अदालतों में छः करोड़ से ज्यादा मामले लंबित है। निवेशक अक्सर ऐसे बाजारों से कतराते है, जहां अनुबंध लागू नहीं हो सकते। भारत के श्रम कानून केंद्र और राज्य सरकारों के नियमों के एक जाल में उलझे हुए है जहां कंपनियां औपचारिक रूप से नियुक्तिकरने से डरती हैं वहीं वर्कर असुरक्षा में फंसे रहते है।

भूमि भारत का सबसे विवादित संसाधन बना हुआ है। पुराने रिकार्ड, अस्पष्ट स्वामित्व और प्रशासनिक बाधाएं बुनियादी ढांचे और आवासीय परियोजनाओं में देरी का कारण बनती है। भारत में आज भी करोड़ों लोग सामाजिक सुरक्षा के बिना काम कर रहे हैं। सरकार की ओर से भी सबके लिए सामाजिक सुरक्षा कवर उपलब्ध न होने से लोग जोखिम लेने से डरते है और गरीबी के दुष्चक्र में फंसे रहते है। भारत के शहर देश की जीडीपी में दो तिहाई से अधिक योगदान करते है लेकिन उनका प्रशासनिक ढांचा कमजोर है। ज्यादातर शहरों में फैसले लेने में सक्षम मेयर या स्वतंत्र बजट की व्यवस्था नहीं है। शहरों में समुचित इंफ्रास्ट्रक्चर की घोर कमी है। गुरुग्राम, दिल्ली जैसे बड़े शहरों में भी गंदगी, कचरे का लगा हुआ है क्यूकि वेस्ट डिस्पोजल की व्यवस्था ठीक नहीं है। सुचारु रूप से ड्रेनेज व्यवस्था न होने के कारण जल निकासी की भारी समस्या है।

भारत में लॉजिस्टिक्स लागत जीडीपी

का लगभग 14 प्रतिशत है, जबकि चीन में यह केवल 8 प्रतिशत है। उच्च लॉजिस्टिक्स लागत भारतीय उत्पादों की प्रतिस्पर्धात्मकता को कम करती है। दक्षिण कोरिया और जापान ने अपने विकास मॉडल में इन्फ्रास्ट्रक्चर को रीढ़ की हड्डी बनाया और परिवहन तथा ऊर्जा क्षेत्र में बड़े पैमाने पर निवेश किया। भारत को भी अपनी अर्थव्यवस्था को और अधिक एकीकृत करने तथा लॉजिस्टिक्स लागत घटाने के लिए राजमार्गों, बंदरगाहों, रेलवे और डिजिटल कनेक्टिविटी में निवेश की गति तेज करनी होगी। बढ़ते निर्यात और थोक वस्तुओं के आयात की जरूरतों को पूरा करने के लिए आधुनिक और सुदृढ़ बंदरगाह अवसंरचना विकसित करना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि देश का लगभग 90 प्रतिशत व्यापार समुद्री मार्ग से होता है।

भारत में लगभग 90 करोड़ लोग कामकाजी उम्र के हैं, लेकिन इनमें से केवल करीब सात करोड़ लोग ही पेरोल पर काम कर रहे हैं। शेष लगभग 83 करोड़ लोग अनौपचारिक अर्थव्यवस्था के हिस्से के रूप में बिना किसी सामाजिक सुरक्षा या लाभ के कार्यरत हैं। औद्योगिक उत्थान के दौरान चीन ने अपने कामगारों को सक्रिय रूप से औपचारिक अर्थव्यवस्था में शामिल किया और उन्हें खेती से हटाकर कारखानों में पेरोल पर लगाया। इसी प्रकार, ब्राजील ने भी कंपनियों को टैक्स छूट देकर औपचारिक रोजगार को बढ़ावा दिया और आर्थिक विकास में सफलता हासिल की।

भारत की युवा आबादी देश के लिए अवसर है, लेकिन यदि पर्याप्त रोजगार उपलब्ध नहीं हुए, तो यह सामाजिक और आर्थिक बोझ भी बन सकती है। इसलिए MSMEs और स्टार्टअप्स को प्रोत्साहन देना अत्यंत आवश्यक है, ताकि रोजगार सृजन बढ़े और नवाचार को बढ़ावा मिले।भारत की शिक्षा प्रणाली को आधुनिक उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालना होगा। व्यावसायिक शिक्षा और अनुसंधान में अधिक निवेश करना होगा, ताकि युवा प्रतिभाओं को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाया जा सके।तेज़ विकास के बावजूद अमीर और गरीब के बीच की खाई लगातार बढ़ रही है। इस असमानता को कम करने के लिए सामाजिक सुरक्षा योजनाओं और समावेशी विकास पर जोर देना आवश्यक है।भारत आज भी तेल और गैस का बड़ा आयातक है, जिससे चालू खाता घाटा (CAD) और महँगाई पर दबाव पड़ता है। इसके अलावा अमेरिका-चीन प्रतिस्पर्धा, रूस-यूक्रेन युद्ध और पश्चिम एशिया के संकट जैसी वैश्विक चुनौतियाँ भारत की अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर सकती हैं। ऐसे में भारत को संतुलित और रणनीतिक कूटनीति अपनानी होगी।

भारत को आर्थिक महाशक्ति बनने के लिए अपने व्यापार घाटे को कम करना अनिवार्य है। इसके लिए निर्यात बढ़ाने और आयात कम करने पर ध्यान देना होगा। उच्च मूल्य वर्धित (High Value-Added) उत्पादों का उत्पादन कर वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ानी होगी। साथ ही, घरेलू उद्योगों को सशक्त बनाकर आयात पर निर्भरता घटाई जा सकती है। भारत को अपनी सैन्य सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए रक्षा आयात कम करने की जरूरत है। इसके लिए घरेलू रक्षा उत्पादन और रक्षा अनुसंधान को बढ़ावा देना होगा। स्वदेशी हथियार और उपकरण विकसित करने से विदेशी मुद्रा की बचत होगी और आत्मनिर्भरता बढ़ेगी। साथ ही, स्थानीय उद्योगों और MSMEs को रक्षा क्षेत्र में भागीदारी देने से रोजगार और तकनीकी क्षमताएँ भी मजबूत होंगी।

हाल ही में अमेरिका द्वारा लगाए गए 50% टैरिफ शुल्क से भारतीय अर्थव्यवस्था को कुछ झटका अवश्य लगा है, किंतु IMF और विश्व बैंक के नवीनतम आँकड़ों के अनुसार भारत की विकास दर 6-7% बनी रहने की संभावना है, जो विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में सर्वाधिक है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि वर्ष 2030 तक भारत का सकल घरेलू उत्पाद (GDP) 7-8 ट्रिलियन डॉलर के स्तर तक पहुँच सकता है। साथ ही, वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में हो रहे बदलाव और चीन पर अत्यधिक निर्भरता को कम करने के प्रयास भारत के लिए नए अवसरों का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। निस्संदेह आने वाला दशक भारत के लिए निर्णायक सिद्ध होगा और यदि सही नीतिगत कदम उठाए गए तो 'विश्वगुरु भारत' और 'आर्थिक महाशक्ति भारत' का सपना केवल कल्पना न रहकर ठोस वास्तविकता के रूप में साकार हो सकता है। ●

जीएसटी 2.0 से क्या पूरी होंगी उम्मीदें?

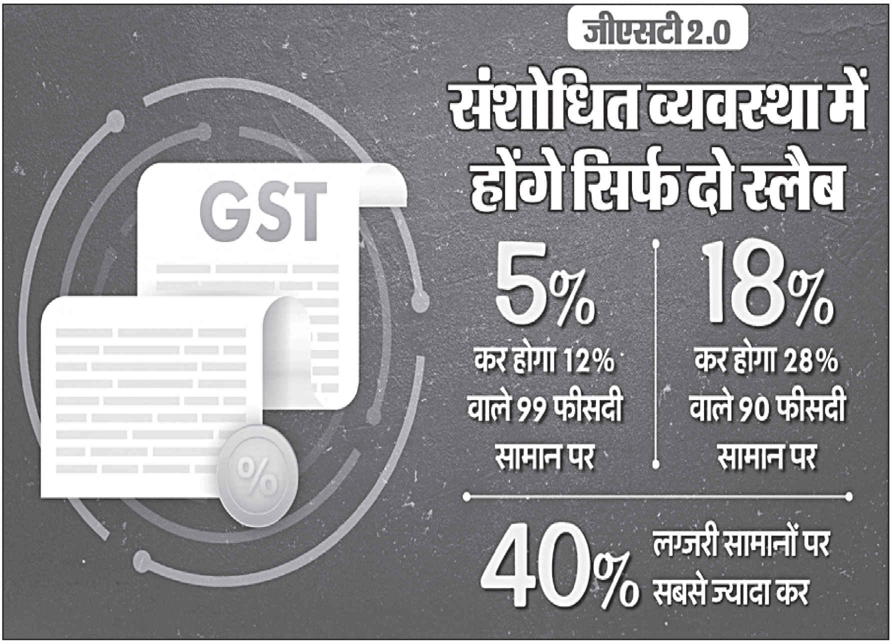

वस्तु व सेवा कर यानी जीएसटी के दूसरे संस्करण का डंका बज रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसे 'बचत उत्सव' का नाम दिया है। वे हर मंच से इसका प्रचार कर रहे हैं साथ ही लोगों से स्वदेशी खरीदने की अपील कर रहे हैं। सरकार के आर्थिक सलाहकार मान रहे हैं कि अमेरिका की ओर से टैरिफ बढ़ाने का जवाब जीएसटी 2.0 है। लेकिन क्या सचमुच ऐसा है? क्या सचमुच लोगों को इसका बहुत लाभ मिल रहा है? क्या सचमुच जीएसटी 2.0 से वस्तुओं और सेवाओं के बाजार में बहुत बड़ी तेजी आने वाली है? क्या जीएसटी के दो स्लैब हटाने और रोजमर्रा की वस्तुओं पर लगने वाला टैक्स कम करने या समाप्त करने से लोगों के हाथ में जो पैसे बचेंगे उसे वे बाजार में खर्च करेंगे और इससे विकास की गति बढ़ेगी?

प्रधानमंत्री दावा कर रहे हैं कि जीएसटी में कटौती से लोगों को ढाई लाख करोड़ रुपए का फायदा होगा। क्या यह ढाई लाख करोड़ रुपया खर्च होकर बाजार में तेजी लाएगा? यह सवाल इसलिए है क्योंकि भारत के आम घरों का बचत ऐतिहासिक रूप से निचले स्तर पर है। तभी कई जानकार यह भी कह रहे हैं कि लोग खर्च करने की बजाय पैसा बचाएंगे। हालांकि जीएसटी का नया दौर शुरू होने के बाद पहले कुछ दिनों में तो खरीदारी में तेजी दिख रही है। लेकिन उसका बाजार पर क्या असर होता है यह दो या तीन तिमाही के बाद पता चलेगा। अभी तो ऐसा लग रहा है कि लाल किले से 15 अगस्त को प्रधानमंत्री की घोषणा के बाद लोगों ने जो खरीदारी रोक दी थी वह लोग जीएसटी छूट के बाद खरीदारी कर रहे हैं। वैसे भी त्योहारों में खरीदारी ज्यादा होती है।

इस तिमाही यानी जुलाई से सितंबर और फिर अक्टूबर से दिसंबर के आंकड़ों से पता चलेगा कि इसका कितना असर हुआ है। 'बचत उत्सव' के बीच पिछली तिमाही के औद्योगिक उत्पादन यानी आईआईपी के विकास दर का चार फीसदी का आंकड़ा आया है, जो पहले से कम है। इसमें कितनी बढ़ोतरी होती है उससे अंदाजा लगेगा कि मांग कितनी बढ़ी है। इसके अलावा त्योहारों का सीजन खत्म होने के बाद बाजार में कितनी मांग बनी रहती है, इस पर भी बहुत कुछ निर्भर करेगा। आर्थिकी के जानकार मान रहे हैं कि लाल किले से प्रधानमंत्री की घोषणा के बाद लोगों ने खरीदारी रोक दी थी। गणेश उत्सव और ओणम जैसे त्योहारों के दौरान पहले जैसी खरीदारी नहीं हुई। करीब सवा महीने के विराम के बाद खरीदार बाजार में लौटे हैं इसलिए अभी तेजी दिख रही है।

बहरहाल, जीएसटी का नया संस्करण लागू होने के एक हफ्ते बाद कराए गए एक सर्वेक्षण के मुताबिक बड़ी संख्या में लोगों का कहना है कि उन्हें जीएसटी कटौती का पूरा लाभ नहीं मिल रहा है। उनका कहना है कि दुकानदार ज्यादातर उत्पादों पर पुरानी कीमत वसूल रहे हैं। यही कारण है कि एक हफ्ते में ही कई हजार शिकायतें दर्ज कराई गई हैं। लोकलसर्कल्स की ओर से देश के 323 जिलों में यह सर्वे कराया गया, जिसमें 27 हजार के करीब लोग शामिल हुए।

एक सर्वेक्षण के मुताबिक सिर्फ 10 फीसदी ग्राहकों ने कहा कि उनको पैकेज्ड फूड पर टैक्स कटौती का लाभ मिला है, जबकि इस पर सरकार ने टैक्स 18 से घटा कर पांच फीसदी कर दिया है। इसी तरह 62 फीसदी लोगों ने कहा कि उनको दवाओं पर हुई कटौती का लाभ नहीं मिला है। व्हाइट गुड्स और इलेक्ट्रोनिक्स आइटम पर 34 फीसदी लोगों ने पूरा लाभ मिलने की बात कही तो इतने ही लोगों ने कहा कि कोई लाभ नहीं मिला है। वाहन खरीद करने वाले लोगों को सबसे ज्यादा लाभ मिला है। उसमें सबसे ज्यादा 76 फीसदी लोग संतुष्ट हैं कि उनको

कटौती का लाभ मिला है। यह वाहनों की बिक्री में भी दिख रहा है।

इस सर्वे से एक खास बात यह भी उभर कर आई है कि ई कॉमर्स कंपनियां ग्राहकों को लाभ नहीं दे रही हैं और पुरानी कीमत पर ही अपने उत्पाद बेच रही हैं। गौरतलब है कि महानगरों और दूसरी व तीसरी श्रेणी के शहरों में लोग ई कॉमर्स कंपनियों जैसे ब्लिंकिट, अमेजन, बिग बास्केट आदि पर निर्भर हो गए हैं। ये कंपनियां ग्राहकों को पूरा लाभ नहीं दे रही हैं। तभी सबसे ज्यादा शिकायतें इनके खिलाफ दर्ज कराई गई हैं।

हालांकि यह इकलौती समस्या नहीं है, जो जीएसटी के दूसरे संस्करण के लागू होने के बाद दिख रही है। एक समस्या यह भी है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से लाल किले से टैक्स कटौती की घोषणा किए जाने के बाद कंपनियों ने अपने उत्पादों की कीमत में बदलाव कर दिया। उन्होंने जीएसटी 2.0 लागू होने से पहले ही उत्पादों की कीमत बढ़ा दी, जिससे टैक्स कटौती के बाद भी ग्राहकों को पूरा लाभ नहीं मिल रहा है। खाने पीने की चीजों में यह समस्या ज्यादा दिख रही है। बाजार का सर्वेक्षण करने वाली एजेंसियों ने बताया है कि दूध से लेकर मक्खन की टिकिया और ड्राई फ्रूट्स तक कई उत्पाद हैं, जिन पर टैक्स कटौती से पहले 10 फीसदी दाम बढ़ा दिए गए। बड़ी कंपनियों ने भले यह काम नहीं किया लेकिन बड़ी कंपनियों के ब्रांडेड उत्पादों के मुकाबले छोटी कंपनियों का बाजार ज्यादा बड़ा है। उन्होंने 10 फीसदी दाम बढ़ा दिए और बाद में जब खाने पीने की चीजों पर टैक्स 12 से घटा कर पांच फीसदी किया गया तो अपनी कीमत में सात फीसदी कटौती कर दी। इस तरह कंपनियां पहले के मुकाबले तीन फीसदी ज्यादा दाम पर उत्पाद बेच रही हैं।

इसके अलावा एक समस्या तैयार सामान पर टैक्स कम करने और वह सामान तैयार करने में इस्तेमाल होने वाले कच्चे उत्पाद पर टैक्स बढ़ा देने की वजह से खड़ी हो रही है। ऐसा कई उत्पादों के मामले में हो रहा है। कपड़ा इस तरह का एक उत्पाद है। कपड़ा बनाने के लिए जिस धागे या यार्न का इस्तेमाल होता है उस पर सरकार ने टैक्स 12 फीसदी से घटा कर पांच फीसदी कर दिया लेकिन धागा तैयार करने में इस्तेमाल होने वाले उत्पादों पर टैक्स 12 से बढ़ा कर 18 फीसदी कर दिया। तभी कंपनियों के सामने कीमत कम करने में समस्या आ रही है। ऐसा ही एक मामला नोटबुक यानी कॉपियों का है। सरकार ने नोटबुक पर टैक्स घटा कर शून्य कर दिया लेकिन उसे तैयार करने में इस्तेमाल होने वाले कागज पर टैक्स बढ़ा कर 12 से 18 फीसदी कर दिया। नोटबुक पर जीरो टैक्स का मतलब है कि निर्माताओं को इनपुट टैक्स क्रेडिट नहीं मिलेगा। दूसरी ओर उनको कागज पर ज्यादा टैक्स देना होगा। तभी नोटबुक सस्ती होने की बजाय महंगी हो जाएगी।

इसी तरह दवाओं पर सरकार ने टैक्स कम कर दिया है कि लेकिन एपीआई यानी दवा निर्माण में इस्तेमाल होने वाले कच्चे माल पर टैक्स 12 से बढ़ा कर 18 फीसदी कर दिया है। इसका असर दवाओं की कीमत पर दिखेगा। ऐसे ही सरकार ने जॉब वर्क पर टैक्स 12 से बढ़ा कर 18 फीसदी कर दिया है। इसका मतलब है कि अगर कोई छोटी कंपनी अपना कच्चा माल बड़ी फैक्टरी में देकर सामान तैयार कराती है तो उसे ज्यादा टैक्स देना पड़ेगा। इसका असर तैयार उत्पादों की कीमत पर पड़ेगा। जीएसटी 2.0 में सरकार ने माल ढुलाई पर टैक्स 12 से बढ़ा कर 18 फीसदी कर दिया है। चूंकि ट्रांसपोर्टेशन हर उत्पाद से जुड़ा हुआ है इसलिए इस बढ़ोतरी का असर रोजमर्रा की जरुरत की हर चीज की कीमत पर पड़ेगा। कच्चे माल की ढुलाई से लेकर फैक्टरी में तैयार माल के थोक विक्रेता तक पहुंचने और थोक विक्रेता के गोदाम से निकल कर खुदरा व्यापारी तक माल पहुंचने का खर्च बढ़ जाएगा। इसका असर भी कीमत पर पड़ेगा। तभी थोड़ा इंतजार करने की जरुरत है। जब प्रचार का गर्दो गुबार थम जाएगा और आंकड़े आएंगे तब पता चलेगा कि इसका असल में कितना असर हुआ।

जीएसटी 2.0 में कृषि क्षेत्र को ये फायदा

कृषि मद	पुरानी दर	नई दर
ट्रैक्टर टायर और पार्ट्स	18%	5%
ट्रैक्टर	12%	5%
तय जैव-कीटनाशक, सूक्ष्म पोषक तत्व	12%	5%
ड्रिप सिंचाई प्रणाली और स्प्रिंकलर	12%	5%
मिट्टी की तैयारी, खेती, कटाई आदि के लिए कृषि, बागवानी या अन्य मशीनें	12%	5%

आर्यकल्प : जानकी प्रसाद शर्मा पर विशिष्ट अंक

हीरालाल नागर

पत्र-पत्रिकाओं ने साहित्य, संस्कृति और कला अभिरुचि को समृद्ध करने में सदैव सार्थक भूमिका अदा की है। कुछ पत्र-पत्रिकाएं समकालीन साहित्य की अभिव्यक्ति के साथ-साथ प्रमुत लेखकों तथा साहित्यकारों पर केन्द्रित अंक निकालकर अपनी जिम्मेदारी को और भी अधिक प्रखर व महत्वपूर्ण बनाती हैं। वाराणसी से प्रकाशित पत्रिका आर्यकल्प ने पिछले कई वर्षों से वरिष्ठ रचनाकारों तथा लेखकों पर केन्द्रीभूत अंक निकालकर हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है। इस बार इस पत्रिका का अंक हिन्दी, उर्दू तथा फारसी के बहुचर्चित विद्वान लेखक जानकी प्रसाद शर्मा के व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर केन्द्रित है। 560 पृष्ठों का यह अंक चौदह खंडों में समायोजित किया है। इन खंडों से पहले हरियशश राय और महेश दर्पण की संपादकीय टिप्पणियाँ हैं।

गालिब के शेर का हिन्दी तर्जुमा देखें- 'आयुरूपी अश्व अपनी गति में है। देखें, कहाँ जाकर थमता है। न हाथ लगाम हैं, और न रकाब में पांव हैं।' इस तर्जुमा को पढ़कर मुझे लगा जैसे यह कोई वेद वाक्य है, जो संस्कृत साहित्य से उठाया गया है, लेकिन यह गालिब के इस शेर का हिन्दी आशय है-

रौ में है रख्शे-उम्र कहां देखिए थमे,
ने हाथ बाग पर हैं, न पा है रकाब में।

महान शाइर गालिब की शायरी की महानतम उपलब्धियों से कौन प्रेरित और संप्रेषित नहीं है। जानकी प्रसाद शर्मा गालिब की पूरी रवायत और कायनात को ही अपनी रचनाओं में खींच लाते हैं और हिन्दी वालों को उससे रूबरू कराते हैं।

बहरहाल, 'रौ में है रखशे-उम्र' शीर्षक से डॉ. जानकी प्रसाद शर्मा का यह आत्मकथ्य उनकी सतत् सर्जनात्मकता का आईना है, जो विभिन्न पड़ावों से होकर यहां तक के सफर की छोटी-सी झलक बयां करता है। यहां वे बहुत ईमानदारी के साथ अपने निर्माण में डॉ. विजय बहादुर सिंह, शलभ श्री राम सिंह तथा कवि वेणुगोपाल को याद करते हुए तरक्की पसंद लेखकों की संगति का खुलासा करते हैं। वे यह स्वीकार करते हैं कि इस संगत से 'विचारधारा और साहित्य के संबंधों का नया दरीचा खुला।'

बहरहाल, हरियश राय ने अपने संपादकीय 'सब में कहां बातों के करीने।' ....में डॉ. जानकी प्रसाद शर्मा के व्यक्तित्व को अपने नजरिये से खोलने का बेहतर उपक्रम किया है। वे लिखते हैं कि डॉ. जानकी प्रसाद शर्मा संपादक हैं, आलोचक हैं, हिन्दी गजल कहने वाले कवि हैं और इन सबसे बढ़कर वे हिन्दी-उर्दू साहित्य के दोआबा भी हैं- इस मायने में कि वे हिन्दी साहित्य की अकेली शख्सियत हैं जो हिन्दी-उर्दू साहित्य के लेखक हैं और अनुवादक भी। 'उनके समग्र काम पर नजर डालें तो पता चलेगा कि उनका काम कितना विविधतापूर्ण, कितना चुनौतीपूर्ण और कितना समावेशी है।'

जानकी प्रसाद शर्मा ने उर्दू भाषा का विधिवत अध्ययन किया और फिर अनुवाद का कार्य आरंभ किया। उर्दू पर पूरी तरह पूरा कमांड होने के बाद ही उन्होंने सज्जाद जहीर साहब की उर्दू में महत्वपूर्ण पुस्तक 'रौशनाई' का हिन्दी में अनुवाद किया। 'आर्यकल्प' के इस विशिष्ट अंक के दूसरे संपादक महेश दर्पण हैं। वे लेखक जानकी प्रसाद शर्मा को 'भाषायी मेल-मिलाप की एक खुली खिड़की' कहते हैं। यह डॉ. शर्मा के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का महत्वपूर्ण हिस्सा है उनका 'हिन्दी-उर्दू' साहित्य का पुल होना। उन्होंने महत्वपूर्ण तथा अछूते उर्दू साहित्य का हिन्दी में अनुवाद किया और उर्दू की अहमियत से हिन्दी जगत को अवगत कराया।

डॉ. जानकी प्रसाद शर्मा अपने व्यक्तित्व में जितने गंभीर दिखते हैं. उससे भी अधिक गहन-गंभीर उनका लेखन है। उपन्यास, कहानी, गजल, कविता, अनुवाद, उर्दू साहित्य की परंपरा और उसके सरोकार, भारतीय संस्कृति से उनका सीधा साक्षात्कार आदि उनके सृजन के बहुआयामी क्षेत्र हैं, जिनको समेटना इतना आसान न था, पर संपादकों द्वय ने अपनी सूझ-बूझ से चौदह खंडों में समीकृत कर अपनी संपादन क्षमता का परिचय दिया।

खंड-1 में विद्वान लेखक से महेश दर्पण, कमलेश भट्ट कमल, योगेन्द्र दत्त शर्मा, मजीद अहमद, सुधांशु गुप्त और मणि मोहन की बातचीत है- शीर्षक दिया है- चलो बात करके देखते हैं। इसमें महेश दर्पण की बातचीत जानकी प्रसाद के साहित्यिक जीवन पर केन्द्रित पेज 23 से शुरू हुआ साक्षात्कार पेज 95 पर खत्म होता है- लेकिन 'गुफ्तगू बंद न हो' के बुनियादी सरोकार का यह 72 पेज का इंटरव्यू बड़ा ही अंतरंग और दिलचस्प है।

खंड-2 में शर्मा जी के लेखन और उनके जीवन को करीब से जानने-समझने वाले लेखकों के विचार हैं। इस खंड में विजय बहादुर सिंह, लीलाधर मंडलोई, संतोष चौबे, प्रो. सादिक, निरंजन श्रोत्रिय, चंद्रभान ख्याल, विश्वनाथ त्रिपाठी, आनंद प्रकाश और इब्बार रबी के विचार हैं। उर्दू अदब की आलोचना- यह पत्रिका के तीसरे खंड का शीर्षक है। यह सभी जानते हैं कि डॉ. जानकी प्रसाद शर्मा ने उर्दू के कुछ महत्वपूर्ण शायरों, लेखकों और संपादकों के उर्दू साहित्य का हिन्दी में अनुवाद किया है।

मौर के यहां विस्तार- शीर्षक से अशोक वाजपेयी अपने आलेख में कहते हैं- 'जानकी प्रसाद शर्मा उन लोगों में से हैं, जो हिन्दी और उर्दू के समान अध्येता हैं। इधर उनकी नई पुस्तक 'उर्दू साहित्य की परंपरा' वाणी प्रकाशन से आई है। मैं उसे उलट रहा था कि 'मीर के तीर' शीर्षक अध्याय में मेरा ध्यान, उनके दिलाए, इस सुखद तथ्य की ओर गया कि मीर ने जब-तब संस्कृत शब्दों का प्रयोग किया है।' (पृष्ठ-179) इस खंड में मधुरेश, डॉ. राजकुमार शर्मा, राजेश जोशी, शकील सिद्दीकी, सुरेश सलिल, कुलदीप कुमार, नौमान शौक और मुशर्रफ अली जैसे विद्वानों ने

लेख लिखे हैं।

इस पुस्तक का खंड-4 एक और विशिष्ट खंड है- जिसे जिजीविषा का स्रोत इसमें उनकी पत्नी सरोज शर्मा, पुत्र दुष्यंत शर्मा, सुपुत्री मनीषा शर्मा और पुत्र-वधू द्वय शिवानी शर्मा और देवयानी शर्मा के लेख पढ़सकते हैं। लेखन, पठन-पाठन, संपादन आदि को सफल बनाने में घर-परिवार के सदस्यों का कितना योगदान होता है यह एक अलग सवाल है, लेकिन वे अपने पति, पिता और दादा लेखक के बारे में क्या सोचते हैं- यह जानना महत्वपूर्ण है।

खंड-5 में डॉ. जानकी प्रसाद शर्मा की कथा-आलोचना पर द्वारिका प्रसाद चारुमित्र, नीरज खरे और प्रज्ञा ने लिखा है। 'कहानी का वर्तमान' 1998 में प्रकाशित डॉ. जानकी प्रसाद शर्मा की 'कहानी आलोचना की पहली पुस्तक है। इसमें पिछले दिनों कहानी पर लिखे लेख हैं। जिसे पढ़कर आप उनकी कहानी की आलोचना पद्धति को समझ सकते हैं। दूसरी किताब 'कहानी- एक संवाद' है। इस पर प्रज्ञा लिखती हैं- 'कथा आलोचना के एक लंबे कालखंड पर अपनी नजर सामने रखते हुए आलोचक जानकी प्रसाद शर्मा कथा के अनेक दौर, आंदोलनों, प्रवृतियों का मूल्यांकन करते हुए अनेक पीढ़ियों के कथाकारों के सबल और अबल पक्षों को सामने लाते हैं।' खंड-6 में कथाकार शानी के उर्दू-हिंदी में रचनात्मक अवदान को मूल्यांकित किया है- डॉ. जानकी प्रसाद शर्मा ने। यह ध्यातव्य है कि डॉ. जानकी प्रसाद शर्मा ने शानी रचनावली का संपादन किया है। जाहिर है कि उन्हें हिन्दी के साथ उर्दू भाषा तथा साहित्य का विशद अध्ययन है। शानी रचनावली के बारे उनके पुत्र फिरोज शानी का एक आलेख भी है। रचनावली के विमोचन के अवसर कुलदीप कुमार की रिपोर्टिंग भी बड़े मायने रखती है। संपादक जानकी प्रसाद शर्मा पर पूर्णचंद रथ, सुनील मिश्र के लेख भी पठनीय हैं। जानकी प्रसाद शर्मा ने शानी पर उर्दू में मानोग्राफ भी लिखा जिसके बारे में जकी तारिक बताते हैं।

खंड-7 डॉ. जानकी प्रसाद शर्मा के अनुवाद का दरीचा है। अनुवाद करना भी एक मौलिक रचना-संधान है। तीन दशक पूर्व उर्दू से हिन्दी में अनूदित कृति भारतीय संस्कृति का मुसलमानों पर प्रभाव का अनुवाद जानकी प्रसाद शर्मा के सामाजिक-राजनीतिक सरोकारों से युक्त ऐसा ही एक उपक्रम है। इस खंड में जाहिद खान, हक्कानी अल-कासमी, महमूद मलिक के लेख प्रभावशाली हैं। डॉ. जानकी प्रसाद शर्मा ने दारा शिकोह पर उर्दू उपन्यास के अंश का भी अनुवाद किया है। जो यहां दिया गया है।

प्रगतिशील विचारों की पत्रिका 'उद्भावना' के कुछ विशेषांकों का संपादन भी किया है- डॉ. जानकी प्रसाद शर्मा ने। मजाज, मॅंटो, इस्मत चुगताई और साहिर लुधियानवी पर केन्द्रित उद्भावना के अंकों के सम्पादन क्रम में निश्चित रूप से उन्होंने उर्दू भाषा में लिखे इन लेखकों के साहित्य का भी अध्ययन किया होगा। खंड 8 में उद्भावना के संपादक अजेय कुमार का आलेख 'उसूलों पर जहां आंच ना आये टकराना जरूरी है' में उन्होंने जानकी प्रसाद शर्मा जी की संपादन के उसूलों पर चर्चा की है। इस खंड में शामिल विभूति नारायण राय, खुद जानकी प्रसाद के आलेख अत्यंत पठनीय हैं।

खंड-9 में जानकी प्रसाद शर्मा से प्रज्ञा और हरियश राय है, जबकि खंड-10 में डॉ. शर्मा की कविता आलोचना पर लेख हैं।

ग्यारहवें खंड में डॉ. जानकी प्रसाद की आलोचना पद्धति को समझने के लिए उनके कुछ समीक्षात्मक लेख दिए गए हैं, जिसमें नजीर की कविता, धर्मनिरपेक्ष मूल्यों का संदर्भ, गालिब की फारसी मनस्वी 'चिराग-ए-दैर', शमशेर : हमारी ही हिन्दी हमारी ही उर्दू जैसे महत्वपूर्ण आलेख हैं। इन लेखों में उन्होंने विस्तार से विचार किया है। इस खंड में डॉ. साहब के उपन्यास 'अंधेरी गली का मकान' का अंश छपा है।

खंड-13 में डॉ. जानकी प्रसाद शर्मा की गजलों पर आलोचकीय लेख हैं। इस खंड में कमलेश भट्ट कमल का एक आलेख डॉ. जानकी प्रसाद की ग़ज़लों पर है और उनकी ग़ज़लें भी दी गई हैं। डॉ. जानकी प्रसाद शर्मा की चार गजलें दी गयी हैं। इनकी ग़ज़लों पर नरेन्द्र वशिष्ठ की राय भी दी गई है।

खंड-14 में विभिन्न साहित्यकारों द्वारा जानकी प्रसाद शर्मा को लिखे पत्रों का मसविरा है, जिसमें कमलेश्वर, गिरिराज किशोर, शानी, डॉ. धनंजय वर्मा, वाली आसी काजी अब्दुल सत्तार, गोपीचंद नारंग, विश्वनाथ त्रिपाठी, राजेन्द्र यादव, हरिभाऊ जोशी, निदा फाजली और फजल ताबिश के कुछ खास पत्र हैं।

इन पत्रों में जानकी प्रसाद शर्मा के बहुआयामी व्यक्तित्व और उनके आर-पार फैले कृतित्व का महत्वपूर्ण पक्ष उभरकर सामने आता है। और हम यह समझने लगते हैं- डॉ. जानकी प्रसाद शर्मा हिन्दी साहित्य के लिए कितने जरूरी रचनाकार और आदमकद इंसान हैं।

आर्यकल्प (185-189)

सं. लोलार्क द्विवेदी - अतिथि संपादक :
हरियश राय, महेश दर्पण,
सम्पादकीय कार्यालय -बी-2/1/143-ए,
भदैनी वाराणसी-221001,
मो. 9839575796, मूल्य रु. 200/-

ढीठ

इला सिंह

लॉक डाउन चरम पर था।सड़कें सूनी, गलियां वीरान - केवल मानव जाति से थीं, प्रभु की बाक़ी क्रिएशन को पूरी आज़ादी थी।

पक्षी अपनी भरपूर, पुरानी,खो चुकी बुलंद चहचहाहट से खुले नीले आसमान को, घर की छतों की मुंडेरों को, बालकनी-बरामदों को गुंजायमान किए थे।

महानगरों में गाँव जैसे दृश्य उपस्थित हो रहे थे। सड़कों पर कही मोर निकलते देखे गए तो कही हिरन।जैसे प्रकृति ने मौक़ा दिया था 'जंगलजाति' को 'मानव सफारी' देखने का।

घरों में कैद,खिड़कियों से झाँकते लोग, बाल्कनी या छतों की मुँडेर से झाँकते, आसमान ताकते लोग...पशु पक्षी उन्हें देखकर शायद हैरान ही हो रहे होंगे। पहली बार सड़कों पर आदमी नहीं पशु पक्षियों का राज चल रहा।

अफ़सोस...मगर कैमरा अभी भी आदमी के ही हाथ था।

जब से करोना महामारी का तांडव शुरू हुआ और लॉक डाउन प्रक्रिया चली है, जिंदगी की जद्दोजहद बढ़गई है।

रति की हेल्पर का आना भी बंद हो गया है।घर में काम बहुत बढ़गया था।बच्चे,पति, बीमार सास-ससुर।

बच्चे ...जो, कुछ करना नहीं चाहते...पति जिन्हें कभी काम सिखाया नहीं गया।माता -पिता बुजुर्ग ...सो सारी ज़िम्मेदारी आ गई थी रति के कंधों पर।कब उसकी सुबह हो रही थी कब शाम, वह जान ही नहीं पा रही थी।

घर में लोगों का खा़सकर रूपेश का समय लॉकडाउन में नेट पर दिन रात बिज़ी रहने के बावजूद काटे नहीं कट रहा था। भूख भी तो आजकल ज्यादा ही लग रही थी या फिर मन लगाने के लिए कुछ -कुछ स्पेशल खाने का मन करता ही रहता था।

और वहीं रति थोड़े पल चाहती रहती कि कभी फ़ुरसत हो तो शाम को वो थोड़ा बालकनी में ही जा खड़ी हो।

डूबता सूरज ही देख ले...।कितना पक्षियों का कलरव गूंज रहा है दो-चार फ़ोटो ही ले ले . ..। मगर ये उसकी चाह पूरी होती नज़र तो नहीं आ रही थी।पता नहीं कब तक ...। यह लॉकडाउन तो अनंत तक चलने वाला लग रहा था।

झाड़ू- पोछा, बरतन, खाना, कपड़े रात दिन बस यही।

बस इतना सुकून था कि मेहमान रिश्तेदार की आमद नहीं थी। ना कोई आ रहा था, ना जा रहा था। दरवाजे की घंटी बस सुबह एक बार बजती, जब गार्ड दूध के पैकेट देकर जाता।वरना तो दो चार दिन में ऑनलाइन सामान की खरीददारी की कोई डिलीवरी आती, तभी घंटी की मधुर आवाज़ घर में गूंजती।

दोपहर का समय था। सभी दोपहर के भोजन के बाद ड्राइंग रूम में दशहरी आमों का मज़ा ले रहे थे। रति रसोई समेट अपने भोजन की थाली उठाए एसी रूम की तरफ़ जा रही थी।

बस यह उसका खाना खाने का ही समय एक ऐसा समय होता,जो उसका अपना होता था। जब वह ए सी में बैठ,एक हाथ में मोबाइल पकड़ती और एक हाथ से कौर मुँह में डालती जाती।

पति रूपेश की भौंहे थोड़ा चढ़जाती या कभी -कभी बोल भी देते - 'सुकून से खाओ,मोबाइल में क्यों लगी हो?

लेकिन रति अनजान बनी रहती। मौका कहाँ था फिर?... यही समय होता है जब वह कभी वाट्सएप, कभी फ़ेसबुक, कभी नेटफ्लिक्स,प्राइम वीडियो पर घूमघाम आती थी और एक- एक घंटा खाना खत्म करने में लगा देती।

अचानक कॉल बेल की तीखी आवाज़ से रति ठिठक गयी। और थाली वापस रसोई में रखते हुए थोड़ा झुंझला गई। दरवाज़ा खोलने का काम और आए हुए सामान का कीटाणुशोधन करना सब उसी के ज़िम्में था आजकल।

रति ने दरवाज़ा खोला तो सामने एक छोटे क़द की लड़की पूरा चेहरा दुपट्टे से लपेटे हुई खड़ी थी।रति ने नेट डोर के अंदर से ही पूछा,'क्या बात है?'

'अरे, भाभी! पहचान नहीं रही हैं? 'कह लड़की ने दुपट्टा नाक के नीचे खिसका दिया।

'अरे, निशा तुम!' रति चौंकी और तत्काल नज़र उस के पेट की तरफ गयी।

रति की नजर लक्ष्य कर निशा खिल्ल से हंस पड़ी-'बिटिया हुई है, आज पच्चीस दिन की हो गयी।'

रति भी मुस्करा पड़ी, 'ओओ...!वाह!! ...मैं तो घबरा गयी तुम्हें देख। मुझे लगा था अभी समय है डिलीवरी में। कैसी है बच्ची?'

'अच्छी है, भाभी! मगर थोड़ा कमजोर है अभी।'

'इतनी जल्दी कैसे उठ गयीं।और फिर, लॉक डाउन भी चल रहा है।'

'क्या करें भाभी, ये तो बिलकुल खाली बैठे हैं आजकल। कोई प्रेस के लिए कपड़े दे ही नहीं रहा।'

'हाँ, आना- जाना लगभग खत्म ही है। कपड़ों पर कोई कहाँ आयरन करवाएगा।'

'आप देंगी कपड़े?'

'कपड़े? 'रति सोच में पड़ गयी।

कपड़े तो लॉक डाउन में शरीरों की शोभा बढ़ाना भूल ही गये हैं मानो, अब तो अलमारियों से झांक मुंह चिढ़ाते हैं केवल।

'कपड़े कहाँ है निशा, अभी साहब आफिस ही नहीं जा रहे हैं।' थोड़ा संकोच से ही रति बोली। एक तरफ मन में वह विचार करने लगी क्या कुछ हैं ऐसे कपड़े जो प्रेस कराए जा सकें।

'तो कुछ रुपये दे दीजिए,हम वापस कर देंगे।'निशा ने एक झटके से कह अपना दुपट्टा फिर नाक के ऊपर तक चढ़ा

लिया।अब उसकी केवल आँखे नजर आ रही थीं।जिनमें संकोच, पीड़ा, बेबसी, झुंझलाहट जैसे अनगिनत भाव रंग बदलते नज़र आ रहे थे। और उन भावों के बोझ से ही मानो निशा की आँखें नीचे झुक आईं। उंगलियों के नाखूनों से दरवाजे के बाहर बारामदे की रेलिंग पर ठक-ठक करती इधर उधर नजरें घुमा आँखे बचाने लगी।

'तीन मई से शायद साहब ऑफ़िस जाने लगे, तब जरूरत पड़ेगी।क्या रवि घर पर आकर कर देगा प्रेस?' रति की आवाज़ से निशा चौंक कर पलटी।

'हाँ- हाँ आ जाएंगे ना,घर पर ही करा लीजिए...आप फोन कर देना।' रुपये हाथ में लेते हुए एक चमक आँखों में तैर आई।

'ठीक है,मैं फोन करूंगी...बीच में जरुरत हो तो और ले लेना पैसे।'रति ने पांच -पांच सौ के चार नोट निशा के हाथ पर रख दिए।

चेहरा तो पूरा ढका था निशा का, पर पता नहीं क्यों रति को लगा निशा मुस्कुरा रही है।शायद आँखों की चमक से ही धोखा खाई हो, वरना वह देख पाती उन आँखों में चमक खुशी की नहीं...लज्जा,आहत स्वाभिमान, निरुपायता की थी जो चमकीला पानी बन आँखों में तैर रही थी।

पैसे हाथ में ले हड़बड़ाहट में ही चेहरा दुपट्टे से लपेट निशा तेजी से सीढ़ियों से उतर गयी।

दरवाजा बंद कर रति पलटी तो रूपेश की आवाज सुन चौंक पड़ी-'कितने दे दिए?'

रति जबाब न दे हल्की मुस्कान के साथ आगे बढ़आयी। मगर ड्राइंग रूम से गुजरते हुए मम्मी जी की आँखें अपने चेहरे पर टिकी देख 'अरे,वापस कर जाएगी।' कहते हुए वह खिसिया उठी।

पति का ठहाका और मम्मी जी की छुपी मुस्कान रति को चिड़ा गयी। अब चौतरफा होने वाले हमले से बचने के लिए अपनी थाली उठा जल्दी से कमरे में घुस गयी।

खाना खाते हुए रति ने अपने को एक वेव सीरीज़ में उलझा लिया।आँख के कोने से दिख रहा था बगल में बैठे रूपेश का तना चेहरा।रति जानती है आगे का हाल।

हमेशा एक कान में ही ईयर फोन लगाती है, अभी दूसरे कान में भी लीड लगा ली थी रूपेश के पिन चुभोते शब्दों से बचने के लिए।मगर रूपेश का बड़बड़ाना बदस्तूर जारी था।

उसका ध्यान न देना रूपेश को और खिजा जाएगा, यह सोच-रति ने एक तरफ की लीड कान से निकाल एक गहरी सांस ले रूपेश की तरफ मुंह मोड़ दिया-'अभी लॉक डाउन में उसके पति को काम नहीं मिल रहा है, एक माह की बच्ची है...अगर एक हजार रुपया दे दिया तो कौन सा पहाड़ टूट पड़ा...टी वी पर मजदूरों का दर्द तो तुम लोगों को बहुत सालता है।'

रति के 'तुम लोग' ने बाहर बैठी मम्मी जी को सुलगा दिया हालाँकि उसने जानबूझकर नहीं कहा था मगर तीर तो निकल चुका।

'अब वो देगी पैसे? अजी...हवा खाओ!!'रूपेश की तरफ से अब पनि नहीं गोली चली।

'मूर्ख है बिलकुल!' गोली बेअसर देख दूसरी गोली दागी रूपेश ने।

'हमेशा यही मूर्खता करती है।'

रति जानती है आज दिन भर ये बौछार चलेगी और जब गुस्सा हल्का भी पड़ जाएगा तो माँ-बेटा को बहुत दिनों के लिए मजाक, हंसी के लिए एक मसाला मिल गया कि कैसे कुछ लोग दया माया में कर्ण के नाती पोते बने हैं।

'मूर्ख हूँ,तो मूर्ख ही रहूँगी ना।' कह रति ने दूसरे कान में फिर से लीड ठूंस ली।

लीड लगाते-लगाते भी रति ने सुन लिया था–'ढीठ औरत।'

सम्पर्क : 104,घनश्याम पैलेस (बाटा शोरूम के पीछे) इंडियन ऑयलपेट्रोलपंप और मुंशी पुलिया चौराहे के पास

सेक्टर-16, इंदिरा नगर, लखनऊ-226016, मो. 7839040416

Email: ilasingh1967@gmail.com

जन सहायता हास्पिटल

अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त

(आकस्मिक सेवा निःशुल्क उपलब्ध)

24/7 EMERGENCY SERVICE

कटरियाँ (इन्डस्ट्रियल एरिया के सामने, नेशनल हाइवे-2) रामनगर मार्ग, वाराणसी

मो0- 9984499616, 9415441990

माँ-बेटे

पूजा गुप्ता

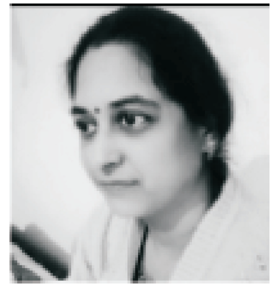

रविवार का दिन आराम का दिन। आम लोगों के समान डॉक्टर भी सुबह के समय अपने दवाखाने में सेवा देने के बाद शाम के वक्त दोस्त-परिवार वालों के साथ गुजारना पसंद करते हैं। ऐसे ही रविवार की एक शाम आयुष्मान नर्सिंग होम में वार्ड ब्वॉय और नर्स टीवी पर रविवार की फिल्म देखकर टाइम पास कर रहे थे। फिल्म के बीच में आने वाले विज्ञापनों से वार्ड ब्वॉय की फिल्म देखने की निरंतरता टूटती तो खिन्न होकर वह टिप्पणी भी करता। वार्ड ब्वॉय और नर्स के साथ-साथ भर्ती मरीजों के रिश्ते नाते वाले भी मजबूरी और बेबसी के चलते फिल्म देखने की कोशिश कर रहे थे। नर्सिंग होम के सामने एक आटो रिक्शे के रुकने की आवाज आई। वार्ड ब्वॉय ने काँच से बाहर देखा। आटो रिक्शे वाले को पैसे देने के बाद एक व्यक्ति, अचेत महिला को गोद में उठाकर नर्सिंग होम में दाखिल हुआ। वृद्ध महिला को बेंच पर लेटाते हुए पूछा, 'डॉक्टर साहब हैं?'

'आज संडे है, डॉक्टर साहब नहीं आते हैं।' वार्ड ब्वॉय ने बताया।

'मैं गिरीश वर्मा, मैं डॉक्टर का रिश्तेदार हूँ।'

'डॉक्टर साहब के सारे मरीज तो रिश्तेदार ही होते हैं। रिश्तेदारों को मैं जानता हूँ। आठ साल से काम कर रहा हूँ, आपको तो कभी नहीं देखा?' वार्ड ब्वॉय ने अपना अनुभव बताया।

'हम उनके दूर के रिश्तेदार हैं।' व्यक्ति ने गलती सुधारते हुए कहा, 'देखिए यह मेरी माँ है। बूढ़ी है, बाथरूम में गिर गई फिर होश नहीं आया। रुक-रुक कर साँस ले रही थी अब अचेत है। छह माह पहले लकवा पड़ा था। जल्दी से डॉक्टर साहब को बुला दें।'

'देखिए मरीज की ऐसी हालत को देखते हुए डॉक्टर का इंतजार करने से बेहतर भर्ती कराना होगा।'

नर्स ने सलाह दी, 'यहाँ डॉक्टर साहब के असिस्टेंट हैं। कहें तो भर्ती कर दूँ?'

'मैं अकेले निर्णय नहीं ले सकता, मेरे तीन और भाई हैं, उनके आए बिना मैं क्या करूँ?' गिरीश ने असमर्थता जाहिर की।

'ठीक है, जैसा आप उचित समझें। लेकिन जल्दी कीजिए, मरीज को कुछ भी हो सकता है, वैसे भी माँ जी की हालत गंभीर दिख रही है।'

नर्सिंग होम में एक पुरुष और एक महिला दाखिल हुए।

'क्यूँ रे गिरीश, क्या हुआ माँ को?' आगंतुक ने पूछा।

'रमेश भैया, माँ बाथरूम में गिरकर बेहोश हो गई। हाथ-पाँव ठंडे पड़ने लगे। आटो रिक्शे में लेकर यहाँ आया हूँ। डॉक्टर हैं नहीं, ये लोग कहते हैं भर्ती करा दो वरना..!' इतना कह गिरीश रो पड़ा।

'भर्ती कराने में क्या दिक्कत है?' रमेश ने पूछा।

'क्यों भाई साहब माँ को भर्ती क्यों नहीं कर लेते?' रमेश ने वार्ड ब्वॉय से पूछा।

'दो हजार जमा कर दीजिए। मरीज भर्ती कर लेंगे।' वार्ड ब्वॉय ने टीवी से निगाहें हटाए बिना जवाब दिया।

'भाई डॉक्टर साहब हमारे पहचान के हैं।'

'पैसे जमा कराने का नियम भी उन्हीं का है। देखिए, आप पैसे जमा कर दें ताकि मरीज को दवा-दारू मिल सके।'

'क्यूँ रे गिरीश पैसे क्यों नहीं जमा किया?' रमेश ने पैसे पर जोर देते हुए कहा।

'रमेश भैया चार महीने से माँ मेरे यहाँ है। उनकी देखभाल और दवा-दारू का खर्च मैं ही उठा रहा हूँ। नगर निगम के मोहर्रिर को मिलता ही कितना है। हम चारों भाई ने मिलकर तय किया था कि तीन-तीन महीने माँ को अपने पास रखेंगे।'

'शैलजा, माँ की देखभाल करो, मैं डॉक्टर को लेकर आ रहा हूँ।' रमेश स्कूटर लेकर नर्सिंग होम से बाहर निकला। एक टेलीफोन बूथ पर रुक कर उसने सबसे बड़े भाई शिवप्रकाश को फोन लगाया।

'भैया माँ बहुत सीरियस है। आयुष्मान नर्सिंग होम में गिरीश उनको लेकर आया है। आप जल्दी पहुँचें। और हाँ तीन हजार रुपए भी रख लेंगे, मैं भी कुछ रकम लेकर डॉक्टर साहब को लेते हुए पहुँच रहा हूँ।' इतना कहकर रमेश ने फोन काट दिया।

'किसका फोन था?' शिवप्रकाश की पत्नी सविता ने पूछा।

'चलो आयुष्मान नर्सिंग होम, माँ भर्ती है, रमेश का फोन था, एक-दो हजार रुपए भी रख लो।'

'पैसे रखना जरूरी है?' सविता ने पूछा।

'बड़ा हूँ, फर्ज तो निभाना पड़ेगा।'

'क्या रमेश के पास पैसे नहीं हैं?' सविता बोली और वे दोनों नर्सिंग होम के लिए निकल गए।

'क्यों रे गिरीश, भर्ती करने के लिए पैसे नहीं थे तो फोन क्यों नहीं किया?' शिवप्रकाश ने सिगरेट जलाते हुए पूछा।

'भैया, रमेश भैया को फोन किया था। वे आपको फोन करेंगे कह रहे थे, इसी कारण फोन नहीं किया।'

'क्यों तुम फोन कर देते तो क्या होता?'

'भैया, आपके यहाँ जब भी फोन लगाया, आप नहीं हैं का जवाब मिला है। भाभी से पूछ लीजिए।'

'खैर, चिंता मत करो। मैं देखता हूँ।' शिवप्रकाश काउंटर पर पहुँचा। 'मैडम माँ को भर्ती करना है।'

'ठीक है यह फॉर्म भर दीजिए और दो हजार जमा कर दीजिए।'

'हमें डॉक्टर साहब अच्छे से जानते हैं।'

'सर, मरीज को भर्ती करने से पहले कन्सेंट जरूरी है।' शिवप्रकाश ने माँ का नाम, पिता का नाम और उम्र तत्परता से लिखा। लेकिन पते के कालम पर कलम रुक गई।

'एक्सक्यूज मी मैडम, यह रुपए रखिए।

मैं फॉर्म भर कर देता हूँ।'

'सॉरी सर, फॉर्म जरूरी है। मरीज को कुछ हो जाने पर बहुत लफड़ा होता है।'

'अच्छा, गिरीश इधर आ। माँ को अभी कहाँ रहना था रमेश के पास या महेश के पास?'

'महेश भैया के पास, भैया।' शिवप्रकाश ने महेश का पता फॉर्म में लिखा और महेश वर्मा के नाम से दस्तखत कर दिया। नर्स ने फॉर्म लेकर मरीज को एडमिट कर जनरल वार्ड के चार नंबर बेड पर भेजने के लिए वार्ड ब्वॉय और नर्स को कहा। स्ट्रेचर लाकर दोनों माँ को चार नंबर बेड पर ले गए। असिस्टेंट ने ब्लड-प्रेशर नापा, थर्मामीटर लगाया और फिर ग्लूकोज की बोतल चढ़ा दी। शिवप्रकाश, सविता और गिरीश कोने में खड़े थे। रमेश अपनी पत्नी के साथ शिवप्रकाश और सविता के पैर छुए।

'क्यों रमेश कैसे हो?' शिवप्रकाश ने पूछा।

'बस भैया, क्या बताऊँ धंधे में लगातार घाटा हो रहा है। आपके पैसे नहीं दे पा रहा हूँ। आज मेरी लाचारी देखिए, माँ को भर्ती कराने के पैसे भी नहीं हैं मेरे पास।'

'फोन पर तो तुम पैसे लेकर आने की बात कह रहे थे।'

'घबराहट में बोल गया होगा भैया, वरना मेरी स्थिति तो गिरीश से गई गिरी है। भैया यह वक्त इन बातों का नहीं है। अभी तो माँ की जान बचाना जरूरी है।'

'जान बचाने के लिए तुम्हारे बड़े भैया हैं। उसके बाद कौन देखेगा? महेश को भी बुला लो ताकि वो यह न कहे कि उसको बताया नहीं गया।' सविता ने मौन तोड़ा।

'वह जोरू का गुलाम क्या पूछेगा भाभी। माँ को रखने की जिम्मेदारी उसकी थी लेकिन ताला लगाकर भाग गए।' गिरीश ने अपना गुस्सा निकाला।

'देखो हम तीनों यहीं हैं। माँ की देखभाल करने का नियम चारों ने बनाया था। महेश को बात माननी होगी। सबसे पहले वह गिरीश को एक माह का पैसा दे दे। माँ को रखने और दवा-दारू के खर्चे के लिए, माँ ठीक होती हैं तो तीन माह अपने पास रखें।' शिवप्रकाश ने बड़प्पन झाड़ते हुए कहा।

'यदि नहीं रखेगा तो?' रमेश ने पूछा।

'कैसे नहीं रखेगा। माँ सब की है, जिम्मेदारी भी सबकी है।'

'बड़े भैया, मेरी कमाई इतनी नहीं है कि मैं तीन माह भी रख सकूँ लेकिन सब पैसे की मदद करें तो मैं माँ को जिंदगी भर अपने पास रख सकता हूँ।' गिरीश ने सुझाव दिया।

महेश और उसकी पत्नी भी नर्सिंग होम पहुँचे।

'माँ कैसी हैं भैया?' महेश ने बिना अभिवादन किए पूछा।

'तुम्हें माँ से क्या? अपने घर में नहीं रख सकते। ताला लगाकर भाग जाते हो। बड़े आए पूछने वाले।' गिरीश ने नाराजगी दिखाई।

'मैं तुम जैसे छोटे लोगों के मुँह नहीं लगता। जरूरी काम था तो गया था।'

'एक माह से इसी शहर में हो। माँ का ख्याल था तो क्यों नहीं आए लेने।' गिरीश ने सवाल किया।

'मैंने ठेका नहीं ले रखा है। मेरी अपनी परेशानी है, मैं माँ को नहीं रख सकता। हाँ, पैसे की सहायता करना हो तो मैं कर सकता हूँ।'

'महेश पैसे का घमंड ठीक नहीं। फिर भी तुम्हारे पास पैसे हैं तो गिरीश को माँ का एक महीने का खर्च और दवा-दारू का खर्च दे दो।'

'कितना खर्च हुआ गिरीश तेरा, बता?'

'भैया यह जगह हिसाब करने की नहीं है, माँ को बचाने की है।' गिरीश रो पड़ा।

नर्सिंग होम में डॉक्टर की कार ने प्रवेश किया। कार पार्क कर डॉक्टर सबके पास रुके, और कहा, 'आज सारा वर्मा परिवार एक साथ, अच्छी बात है।' डॉक्टर ने जनरल वार्ड में प्रवेश किया। चार नंबर बेड के पास रुककर मरीज की नब्ज टटोली। 'विवेक, टॉर्च लेकर आओ।' वार्ड ब्वॉय टॉर्च लेकर पहुँचा। डॉक्टर ने मरीज की आँखें खोली और टॉर्च से रोशनी डाली, कोई प्रतिक्रिया नहीं पाकर पलकें बंद की और चादर ओढ़ा दिया। बाहर निकलकर डॉक्टर ने शिवप्रकाश को बुलाया।

'सॉरी शिवप्रकाश, माँ मर चुकी हैं। गर्मी के दिन हैं लाश ज्यादा देर नहीं रखी जा सकती, सवेरे जल्दी अंतिम संस्कार करवा देना वरना दुर्गंध आने लगेगी।'

'जी डॉक्टर साहब।'

'मैं डिस्चार्ज पेपर बना देता हूँ। मैडम, शिवप्रकाश जी ने जो पैसे दिए हैं वापस कर दो।'

'सर एक ग्लूकोज बॉटल लगा था।'

'कोई बात नहीं। शिवप्रकाश जी पैसे वापस ले लेंगे। घर की बात है ओके।'

भारी कदमों के साथ शिवप्रकाश वापस आया।

'माँ हम लोगों को छोड़कर चली गई। डॉक्टर साहब का कहना है गर्मी का मौसम है, अंतिम संस्कार सुबह जल्दी करना है वरना दुर्गंध आने लगेगी। मेरे घर में अंतरा और मिनी की पीएमटी की परीक्षा में एक सप्ताह है इसलिए अंतिम संस्कार और सब कार्यक्रम तुम तीनों में से किसी एक के यहाँ कराना ठीक रहेगा।'

'मेरी तो आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। आपका पैसा लौटा नहीं पा रहा हूँ।' रमेश ने हाथ खड़े कर दिए।

'मैं भी पंद्रह दिन का समय नहीं दे पाऊँगा, हाँ पैसे की मदद कर सकता हूँ।' महेश ने अपना पल्ला झाड़ा।

'बस भैया बहुत सुन लिया। बाबूजी के गुजर जाने के बाद माँ ने हम लोगों को भूखे रहकर पाला। आज मर गई हैं तो जगह नहीं है। मैं ले जाऊँगा माँ को, मैं करूँगा सब काम। हाँ आप लोगों के पास वक्त होगा तो आ जाना। वरना लोग कहेंगे चार बेटे अर्थी को कंधा भी एक साथ नहीं दे सके!' कहते-कहते गिरीश फफक पड़ा।

संपर्कः
भगवानदास की गली
आदर्श स्कूल के सामने
गणेश गंज
मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)
पिन कोड - 231001
मोबाइल - 7007224126
ईमेल - guptaabhinandan57@gmail.com

माँसी-माँ

सपना चन्द्रा

कमला और उसकी अम्मा गुमसुम सी बैठी धरती को निहारे जा रही थी.दोनों के ही आँखों से आँसू बहे जा रहे थे.

चौदह वर्षीय सोमी सुबह ही अपनी दीदी कोमल को आया हुआ देख खुशी से नाच उठी थी.पर स्कूल जाने की तैयारी करनी थी सो उसमें वह लग गयी.

स्कूल जाते-जाते ही उसने कहा था शाम को खूब मजे करेगें दीदी।आती हूँ मेरा इंतजार करना.

नन्हीं सी पीहू को प्यारी सी चुमी देकर सोमी स्कूल चली गयी.शाम को बड़ी खुशी-खुशी स्कूल से अपने घर आई थी यह सोंचकर कि अब दीदी से खूब गप्पें करेंगें.

छोटकू सी पीहू को खूब लाड़ करेगी,कितना मज़ा आएगा.उसकी गोल-गोल मोटी सी आँखें कितनी प्यारी लगती हैं और तो और उसकी लाल-लाल गाल सेब की तरह लगते हैं.लगता है कि खा ही जाऊँ.

परंतु घर में प्रवेश करते ही खामोशी का माहौल नजर आया. इतना चुप-चुप क्यूँ हैं ये लोग.घर का वातावरण बदलने के लिए तो दो लोग ही काफी हैं फिर ऐसा क्यूँ है.

सोमी अपना स्कूल बैग रखते हुए सोंचने लगी,ये क्या हुआ इन दोनों को,पहले दीदी के आने पर अम्मा कितनी खुश रहती थी.आज क्या हो गया है..?

मन में उठते प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए सोमी के मन में कौतूहल मची थी.वह माँ से कुछ पुछती फिर न जाने क्यूँ उस ओर कदम उठते-उठते रह गए थे.

माहौल की उदासीनता बता रही थी कि कुछ गहरी बात जरूर है.इस खामोशी को वह तोड़ना चाहती थी.

वहीं बगल के कमरे में सोती हुई पीहू को हल्की चपत लगाकर उठा दिया.

'माफ़ करना मेरी नन्ही पीहू ,मैंने तुझे सोते से जाग दिया.तुझे चपत भी लगाई.पर तू जानती है न मैं तुझसे कितना प्यार करती हूँ।

मेरे बाद तू ही तो है,तेरे आने के बाद से ही मैं भी बड़ों की गिनती में आ गई,वरना सब मुझे छोटी-छोटी कहकर बुलाते.'जो मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था.'

पीहू के रोने पर भी कमला टस से मस न हुई.अम्मा ने ही आवाज लगाई..

'सोमी देख!पीहू क्यूँ रो रही है,जा उसे जरा टहला दे तो सो जाएगी।नहीं तो हल्ला मचाती रहेगी.'

'माँ मैं तो पीहू के पास ही हूँ,पता नहीं क्यूँ रोने लग गई.शायद भुख लगी है इसे,मैं आती हूँ लेकर दीदी के पास.'

'अरे ना ना,अभी थोड़ी देर पहले ही तो उसे दुध पिलाया था.तू टहला दे न हो जाएगी.शाम को तेरे बापू आएंगे तो डब्बा का दुध मँगवा लेगें इसके लिए.'

'क्यूँ अम्मा,आप ही तो कहती थीं बच्चे के लिए माँ का दुध अमृत होता है.अभी तो पीहू कितनी छोटी सी है.

'अब वह दूध जहर है चुका है इसके लिए.'

क्या हुआ है दीदी को जो यह डिब्बा का दुध पियेगी..?'

'चुप कर! बहुत बोलती है,सारी बातें तुझे ही समझ में आ जाएगी तो हम बेकार ही बैठे हैं.

जितना कहा है उतना कर समझी.बड़ों के मामले में ज्यादा टाँग नहीं अड़ाते.'

'अम्मा मैं इतनी भी छोटी नहीं रही,समझ सकती हूँ आपकी बात बताईए न.'

सोमी की जिद देखकर अम्मा ने बताना ही मुनासिब समझा,और वक्त की नजाकत को देखते हुए यह जरुरी भी था.

आखिर पीहू को संभालना उसे ही था.

'मेरी बात ध्यान से सुन सोमी,तेरी दीदी को ब्रेस्ट कैंसर होने का शक जताया है डॉक्टरों ने....

तेरी दीदी के ससुराल में सिर्फ बुढ़ी सास है और एक नौकर.फिलहाल तेरे जीजाजी भी बहुत दूर हैं तो इस हालत में हमें बहुत ही धैर्य से काम लेना होगा.'

'पीहू के देखभाल की जिम्मेवारी तुझपर ही है.माँ और मासी में कोई फर्क नहीं होता,मासी तो मां से ज्यादा प्यार करती है.पीहू तेरे साथ घुल-मिल जाएगी तो अच्छा रहेगा. बहुत बड़ा बोझ हल्का हो जाएगा.'

'मैं संभाल लूँगी माँ,आप चिंता मत करिए.'

'तेरी पढ़ाई भी तो है सोमी,इस्सार दसवीं की परीक्षा देकर नई है तुझे.कैसे करेगी सब मेरी बच्ची..?'

'माँ मैं कर लूँगी,आप दीदी का ध्यान रखिए.'

कोमल की देखभाल तो हो ही रही थी. डॉक्टरों से मिलना-जुलना, उनसे विशेष राय लेना या जैसा जो कह रहा था करते जा रहे थे.कभी ठीक रहती कभी परेशान हो जाया करती.उसकी बढ़ती तकलीफ ने पीहू से उसे दूर कर दिया था.वह चाहकर भी उसे दुलार-प्यार नहीं कर पाती थी.

दिन-प्रतिदिन कोमल की तबीयत बिगड़ती ही जा रही थी.शहर छोटा होने के कारण उचित इलाज मिलना मुश्किल हो रहा था।कर भी क्या सकते थे रामनाथ जी, एकमात्र वो ही कमाने वाले,एक जवान बेटी और अब बीमार बेटी के साथ-साथ नन्हीं सी बच्ची की जिम्मेदारी.

अब इंतजार था तो कोमल के पति की वापसी की,अच्छे इलाज के लिए कहीं किसी बड़े शहर में ले जाना पड़ा तो कैसे कर पाएंगें.लोग तो सलाह मश्विरा ही दे सकते थे.

कोमल के पति से बातचीत में उसकी बिगड़ती तबीयत की जानकारी देते पर लग रहा था कि उसने भी हाथ खड़े कर दिये हो.बहाने पर बहाने ऐसा भी कोई करता है कि पत्नी बीमार है,एक दुधमुंही बच्ची है जरा सी भी फ़िक्र नहीं.

'कैसा पति और पिता है वह'...

ना जाने क्यूँ दिल बैठा जा रहा था.

इधर सोमी घर पर रहकर ही दसवीं की तैयारी कर रही थी.पीहू की देखभाल में कोई कोर-कसर न रखती.थकान से आंखें सूजी हुई लगती पर जैसे उसने अपने आप को झोंक ही दिया था.अपनी दीदी को भी ढाँढस बँधाती रहती कि सब ठीक हो जाएगा,पर वह भी अच्छी तरह जान गयी थी कुछ ठीक नहीं होने वाला.

उसे मन ही मन बहुत गुस्सा आ रहा था अपने जीजाजी पर ,क्या यही होती है पति-पत्नी के रिश्ते..?

मैं कभी विवाह नहीं करूंगी.अपने पैरों पर खड़ी होकर पीहू की अच्छी परवरिश करनी है मुझे.वह रोज अपनी दीदी को मौत के मुँह में जाते देख रही थी.

एक दिन कोमल ने सोमी को अपने पास बुलाया और कहा -सोमी मैंने पीहू को सिर्फ जन्म दिया है पर उसे पाल तो तू रही है.अब मेरा समय शेष हो रहा है लेकिन मुझे कोई चिंता नहीं.अच्छा ही होगा अम्मा-बाबूजी को कुढ़ते देखती हूँ तो तकलीफ और बढ़ जाती है.

एकबार पीहू को दिखा दे सोमी दूर से ही,मेरे पास मत लाना.

सोमी पीहू को गोद में लिए आती है.कोमल बड़े ही प्यार से उसे देखती है और देखती ही रह जाती है.

सोमी को लगा दीदी पीहू को आँखों में उतार रही है.काफी देर तक खड़े रहने के बाद उसे लगा कि कोमल के शरीर में कोई हरकत नहीं हो रही है.

उसने आवाज दी -दीदी, दीदी!पर वह तो बहुत दूर जा चुकी थी.

रसोई घर से आवाज सुनकर अम्मा दौड़ी आयी,'क्या हुआ सोमी..?'

'अम्मा,अम्मा!वो दीदी'.. हिचकियों के बीच ही वह इशारे करती है.

द..इ...इ...इ..दी...

अम्मा के कलेजे पर ऐसी चोट लगी जैसे किसी ने जोर से मुक्का मारा हो.अपनी आँखों के सामने ही अपने संतान को मरा देख आँखें पथरा जाती है, उनकी भी पथरा गयी.

सोमी पीहू को कलेजे से चिपकाए एक कोने में सुबक-सुबक कर रोने लगी.

दीदी!.आप थी तो माँ होने का एहसास रहता था मैं इसकी मासी थी.अचानक से पीहू के चेहरे पर नजर डाली तो उसे मुस्कुराता हुआ पाया.

उसे कहाँ पता था उसकी माँ अब नहीं रही.

उसे तो मासी की गोद और मासी का स्पर्श ही समझ में आता था.

सोमी ने पीहू को जोर से अपनी बांहों में कस लिया ...मेरी पीहू,मेरी जान!

कहलगांव भागलपुर, बिहार

करवा चौथ का महत्व

करवा चौथ कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को मनाया जाता है। विवाहित महिलाएँ पति की दीर्घ आयु के लिए करवा चौथ का व्रत और इसकी रस्मों को पूरी निष्ठा से करती हैं। विवाहित महिलाएँ भगवान शिव, माता पार्वती और कार्तिकेय के साथ-साथ भगवान गणेश की पूजा करती हैं और अपने व्रत को चन्द्रमा के दर्शन और उनको अर्घ्य अर्पण करने के बाद ही तोड़ती हैं।

सबसे पहले यह व्रत शक्ति स्वरूपा देवी पार्वती ने भोलेनाथ के लिए रखा था। इसी व्रत से उन्हें अखंड सौभाग्य की प्राप्ति हुई थी। इसीलिए सुहागिनें अपने पतियों की लंबी उम्र की कामना से यह व्रत करती हैं और देवी पार्वती और भगवान शिव की पूजा करती हैं।

निर्जला व्रत होने के कारण इस व्रत को करने में खास सावधानी भी बरतनी होती है। करवा चौथ का व्रत रखने से पहले ऊर्जा देने वाला खाना खाएं। अपनी डाइट में एंटी-ऑक्सीडेंट्स रिच फूड, विटामिन सी युक्त चीजें, कीवी को भी शामिल कर सकते हैं। इससे रोग प्रतिरोधी क्षमता को बढ़ावा मिल सकता है। व्रत के पहले नारियल पानी पीने से शरीर को एनर्जी तो मिलती ही है साथ ही शरीर हाइड्रेट भी रहता है। व्रत खोलने के बाद सबसे पहले पानी पिएं जूस ले। एकदम से मसालेदार भारी लगने वाला भोजन व्रत के बाद न खाएं। व्रत खोलते समय बेहद हल्का भोजन लें। ऐसा आहार लें जो आसानी से पच जाए। चावल व अन्य ऐसे आहार से दूर रहें जो पाचन में अधिक समय लेते हैं।

मरीजों की सेवा भी करनी है एवं करवा चौथ का व्रत और इसकी रस्मों को पूरा करते हुए कर्तव्य को भी निभाना है।

परम्परा के बेड़ियाँ

वीना सिंह

सहर के चमक-धमक बीच एगो बढ़िया फ्लैट। बाहर से सजा-धजा, भीतर से बढ़िया, बाकिर दीवालन के बीच जइसे कवनो अदृश्य दरार खिंच आई होखे। बरिसन गाँव में रहके आपन जिम्मेदारी निभा चुकल सावित्री देवी पहिलकी बेर बेटा-बहू क लगे कुछ दिन रहइले आइल रहली।ट्रेन से उतरके बेटा संगे ई चमचमात महानगर में कदम रखली त उनकर मन खुशी से भर गइल। सोचे लगली - अब बेटा-बहू के बीच रह के चैन से दिन कटाई। बाकिर घर में घुसते ही उनकर अनुभवी आँख देख लेली कि बेटा-बहू के बीच किछु ठीक नइखे। राजू - ऊ उनका इकलौता बेटा - पहिले मोटा-ताजा, हँसमुख आ मिलनसार रहल। अब दुबल- पतला, थकाइल आ चिड़चिड़ लागे लागल। माई के मन कचोट उठल। राजू न हँसे, न मुसकाए। आँख के नीचे गहिरा घेरा पड़ गइल। सावित्री देवी समझ गइली कि बेटा के जिनगी में कवनो उलझन बा, जेकरा के बहू ना सम्हार पावतिया।

एक बेर भोरहीं नाश्ता पर सावित्री देवी बहू शीला से सीधा सवाल कइली - 'बहुरिया, ई हमार राजू एतना सूख काहे गइल बा? खाना ठीक से नइखु बनावत? देखतानी, न त ऊ ढंग से बात करेला, न हँसेला, आ कई बेर त खुदे रसोई में घुस के बना लेला। ई सब चल का रहल बा?' शीला सकपका गइल, फेर हिम्मत सम्हार के कहली - 'माईजी, मेहनत से बनाइले हीं, बाकिर उहाँ के हर चीज में दोष लागे। कबो नमक बेसी, कबो मसाला कम, कबो रंग फीका। अब हम का करीं? एही से कई बेर खुदे बना लेला। हम त चाहिला कि उहाँ के आराम मिलो।' सावित्री देवी मन ही मन ठान लीहल - 'आजु बेटा से पूछब जरूर।' दुपहरिया राजू कमरा में आराम करत रहल। माई धीरे से दरवाजा खोलली, बेटा के माथा सहलावत पुछली - 'बाबू, बहुरिया के हाथ के खाना काहे ना खा ताड़? काहे नाराज रहताड़?' राजू झुँझला के बोलल - 'माई, आप चिंता मत करीं। हम जइसे बानी, ठीक बानी।' माई के दिल पसीज गइल - 'कइसे न चिंता करीं? देख त, केतना सूख गइल बाड़ऽ।' राजू ठंडी साँस भरत बोलल - 'माई, शीला हमार इज्जत नइखे करत। दफ्तर से आवेनी त न पानी पूछे, न चाय।उल्टे हमरा सामने कुर्सी पर बैठ जाले। आप त पिताजी सामने चारपाई परो ना बइठत रहीं। आ खाना? अइसन कि निगलल मुश्किल। खाइला के बाद बर्तन खुदे उठावे के पड़ेला। ऊ हरदम आपन पढ़ाई-लिखाई आ मोबाइल में लागल रहेली।'

सावित्री देवी के माथा तन गइल - 'ई का बात भइल? पतिराम के मान न राखी, मोबाइल में घुसल रहली? ई त ठीक नइखे।' ओह दिने बहुरिया के बोलवइलस आ डाँट दिहली - 'बहुरिया, ई सब ठीक बा? पतिदेव के अनादर, बर्तन न उठावल, मोबाइल में लागल रहल? शीला माथा पकड़ के बइठ गइल। कहली - 'माईजी, ई सब गलतफहमी ह। रोजे समय पर चाय-नाश्ता, खाना, दवाई, साफ कपड़ा - सब आप तक ना पहुँचे ला?' 'हाँ, ई त बा।' 'त फिर काम करत घरी कबहूँ मोबाइल हाथ में देखनी? पढ़ाई करत देखनी?'

'नाहीं।'

'त फिर ई सब शिकायते कहाँ से आइल? माईजी, ई त उहाँ के आपन घर ह, होटल नइखे। का हर बेर पानी-चाय लेके सामने खड़ा रहब? आ बर्तन - कबहूँ कहलिअ कि आप उठाईं? नइखे न! ऊ खुदे रख देला त उहे आदत ह। हमरा का पता कि ओकरा से उहाँ के 'मान घटे' ह। ऊ आपन जूठा बर्तन उठवेला, हमरा जूठा ना। ई कइसन बिडंबना ह कि हम उठाई त मान न घटे, ऊ उठाईं त इज्जत घट जाला।'

सावित्री देवी चुप पड़ गइली।

शीला फेर कहलस - 'ठीक बा, खियावत बेरा मोबाइल न चलाइब। बाकिर आप कह दीं कि ऊ लोग मोबाइल-टीवी देखत-देखत न खाए। नियम सबका पर बराबरी से लागे के चाहीं, ना?'

सावित्री देवी धीरे से बोली - 'बात त तोहार ठीक बा बहुरिया। बाकिर ए समाज में बराबरी कहाँ? औरतिए के झुकल पड़े ला। न झुके त परिवार टूट जाला। तू ही झुक जा। जा, ओकरा मना ला,
आपन हाथ से खिला दे।'

शीला मान त गइल, बाकिर मन-मन सोचल - 'ई समाज कबहूँ नइखे बदलै वाला। हर बेर औरतिए के झुकल पड़े ला - कबो पति खातिर, कबो बेटा खातिर, कबो भाई आ बाप खातिर। औरतिए औरत के दबावे में लागल रहेली। जबले औरतन आपन संबल ना बनिहें, तबले ई पितृसत्ता के जंजीर टूटे वाला नइखे।'

रात भर शीला के नींद नइखऽ लगल। मायके के याद आइल। बप्पा हमेशा कहस - 'बिटिया, जिनगी में बराबरी के हक कबहूँ मत छोड़िहऽ।' अम्मा सिखवले रहली - 'सम्मान के असली मतलब दूसर के झुकवला में नइखे, आपन अस्थिरता में बा।' शादी के बाद ऊ सोचले रहली कि पति-पत्नी मिलके घर चलइहें। बाकिर धीरे-धीरे देखली कि ओकरा भूमिका बस सेवा आ त्याग ले सीमित हो गइल बा।

राजू के सोच में माई के परवरिश के असर साफ झलकत रहल। बचपन से ऊ घर

के राजा बनावल गइल। छोट-छोट काम माई कर देली। अब उहे आदत पत्नी से उम्मीद बन गइल। सावित्री देवी के एह बात के एहसासे ना भइल कि ऊ बेटा के भीतर एगो अहंकार बो दिहली, जेकरा से ओकर जिनगी के जड़ खोखला हो रहल बा।

समय बीतल। घर में खामोशी पसरे लागल। एगो दिन राजू गुस्से में खाना छोड़ दिहलस। शीला चुपचाप आँसू पोछ के बच्चा गोदी में ले कमरा में चली गइल। ई देख सावित्री देवी भीतर से हिल गइल। सोचली - 'का सचमुच बहुरिया के गलती बा? कि बेटा के आदते बिगाड़ले बा?' राति राजू ऑफिस से देर से आइल। थकाइल आँख, हाथ में मोबाइल। देखलस, शीला बच्चा सुलावत बइठल बिया, खुद बिना खइले। सावित्री देवी बेटा लगे आके बोली - 'बेटा, जे इज्जत तू खोजत बाड़ऽ, ऊ सेवा से ना, बराबरी से मिलेला। बहुरिया तोहर साथी ह, नौकरानी ना। तू अगर बराबरी ना दिहऽ त घर के चैन, खाना के स्वाद - सब गइले।'

राजू चुप भइल। गलती के एहसास त भइल, बाकिर अहंकार रोड़ा बनल रहल। धीरे से कहली - 'देखब माई, आगे कइसे सुधरेला।' ओही घड़ी शीला मन ही मन ठान लिहलस - 'अब बिना तर्क के कबहूँ ना झुकब। माईजी के सम्मान करब, बाकिर आपन पहचान खो के ना। बदलाव अगर लावे के बा, त शुरुआत हमहीं से करब।' ऊ भीतर एगो नया हिम्मत महसूस कइलस।

पवन शर्मा की पाँच कविताएँ

1. धरती की हथेलियाँ

उसकी हथेलियाँ
पथरीली ज़मीन की तरह कठोर हैं,
फिर भी उनमें
धान के पौधों की हरियाली छिपी रहती है।
वह जानता है
कहाँ से गुज़रती है हिरण की डगर,
कहाँ झरना
अपने गीत को सबसे गहरे स्वर में गाता है।
उसकी आँखों में
सदियों की थकान ठहरी है,
लेकिन होठों पर
अब भी हंसी की लौ
बीड़ी की राख से झिलमिलाती है।

2. खामोशी का प्रतिरोध

उसके माथे पर पसीने की लकीरें
मानो धरती पर उग आई
नई नदियाँ हों।
धान रोपते समय
उसकी पीठ झुकती है
लेकिन गला भर आता है गीतों से।
वह चुपचाप बचा लेती है
भविष्य के लिए
एक मुट्ठी चावल,
एक मुट्ठी सपने।
उसकी खामोशी
दरअसल, प्रतिरोध की गहराई है–
जिसे कोई आँक नहीं सकता।

3. पगडंडी और गणित

किताबों में झुका उसका चेहरा
कभी-कभी उठता है
खुले आकाश की ओर,
जहाँ बादल
फुटबॉल की तरह दौड़ते हैं।
गणित की संख्याएँ
उसे पगडंडियों जैसी लगती हैं–
कभी उलझी हुई,
कभी सीधी राह दिखाती हुई।
वह सोचता है,
क्या यह पढ़ाई
पिता की टूटी हुई चप्पलों
और थकी हुई पीठ के बोझ
को हल्का कर पाएगी?

4. खिड़की से आगे

कक्षा की खिड़की से झाँकती
वह अपने सपनों को देखती है–
मानो किसी उजले आसमान का
एक टुकड़ा।
उसकी कॉपी के पन्नों पर
सिर्फ़ उत्तर नहीं,
माँ की अधूरी कहानियाँ भी दर्ज हैं।
वह जानती है–
पढ़ाई ही है
जो धुएँ से भरे रसोईघर के भीतर
उसके लिए
एक दरवाज़ा खोल सकती है।
उसकी निगाहें कहती हैं–
ज़िंदगी को केवल झेलना नहीं है,
उसे बदलना भी है।

5. सपनों का नक्शा

छोटे-से स्कूल में
लकड़ी की बेंचों पर बैठे
लड़के-लड़कियाँ
चाक से रच रहे हैं
अपनी दुनिया के नक्शे।
उनकी आवाज़ें
अभी धीमी हैं,
लेकिन वे जानती हैं–
कल यही स्वर
वनों से टकराकर
शहरों की दीवारों तक गूंजेगा।
उनकी आँखों में
भविष्य का वही उजाला है
जो सूरज उगने से पहले
क्षितिज पर चमकता है।

विद्या भवन, वार्ड नंबर-17, सुकरी चर्च, जुन्नारदेव
जिला- छिंदवाड़ा (मध्यप्रदेश), पिन 480551
मोबाइल: 9425837079/8319714936

अशोक सिंह की कविताएँ

बेटियाँ

घर की बोझ नहीं होती हैं बेटियाँ
बल्कि ढोती हैं घर का सारा बोझ

वे हैं तो
सलामत हैं आपके
कुर्ते के सारे बटन
बची है उसकी धवलता

उनके होने से ही
चलते हैं आपके हाथ
आपकी आँखें ढूँढ़लेती हैं
अपनी गुम हो गयी कलम

घड़ी हो या छड़ी
चश्मा हो या अखबार
या कि किताबें कोट और जूते
सब कुछ होता है यथावत
बेतरतीव बिखरी नहीं होती हैं चीजें

वे होती हैं तो
मकड़ियाँ फैला नहीं पाती जाले
तस्वीरों पर जम नहीं पाती धूल
मुरझाते नहीं कभी गमले के फूल

उनके होने पर
समय से पहले ही आने लगती है
त्योहारों के आने की आहट

वे हैं तो
समय से मिल जाती है चाय
समय से दवाईयाँ
और तो और
समय पर
पहुँच पाते हैं आप दफ्तर
उनके होने से ही

उनके होने से ही
ताजा बनी रहती है घर की हवा
बचा रहता है मन का हरापन
और 'घर ' घर की तरह लगता है
उनके होने से ही!

अपने गाँव की पुस्तैनी जमीन बिकने की खबर सुनकर

(अपने बड़े चाचा मिथलेश सिंह के लिए)

परदादा जब तक रहे
अरजते रहे जमीन जायदाद
दादा भी जीते जी
बेचे नहीं कभी धूर-भर भी जमीन

रही जब तक
पिताजी के हाथों घर-गृहस्थी
बचाये रखे बाप-दादे की पुस्तैनी सब कुछ
कई-कई साल सूखा अकाल
और महामारी की मार झेलकर भी

गाँव छोड़ जैसे ही आये पिता शहर
चाचा के हाथ गया कारोबार और चाचा
जमीनदारी की टूटी तलवार की मूंठ थामे
तनी मूँछो की झूठी आन बचाने खातिर
बेचने लगे साल-दर-साल जमीन

जमीन बिक रही है
बीघा का बीघा साल-दर-साल

बूढ़ी दादी आँगन में टूटी खाट पर पड़ी
सरंग निहारती निःशब्द बतिया रही है
दादा से न जाने क्या-क्या

और इन सब बातों से बेखबर चाचा
दुआरी पर लगा दरबार
बावन बीघा पुदीने की बात करते
टान रहे हैं दम लगाकर चिलम

चिलम से उठ रही है आग
और उसमें जलकर राख हो रहे हैं
दादा के सपने

माँ कहती है
बूढ़ी दादी को रात-रात भर नहीं आती नींद
उनके सपनों में आकर बिछ जाती है अक्सर
बिकी हुई जमीन
और देती है उलाहन कलप-कलप रोते हुए

माँ ने भी सुना है
बिके खेत में लगी
पकी धान की बलियों को
दादी से फुसफुसाहट में कुछ कहते हुए

अब भी मेड़ों पर झुकी धान की बालियाँ
प्रतीक्षारत हैं दादी के चरण छूने को
मौजूद है अब भी
जमीन की आत्मा पर उनके पाँव के निशान

सुना है जबसे
दादी को आने लगे हैं बिकी जमीन के सपने
दादी बड़बड़ाने लगी है ऊल-जलूल
रात-बिरात उठ-उठकर

और ऐसे में माँ
चाचा के जमीन बेचने की आदत के खिलाफ
आवाज उठाने को
जुटा रही है साहस
चाची के साथ मिलकर!

टूटा हुआ आदमी

टूटे हुए आदमी को
एक कबाड़खाने की तरह लगती है
सारी दुनिया

उसके पास होता है एक टूटा हुआ दिल
जिसमें होते हैं ढेर सारी टूटे-फूटे सपनें

रोशनी अच्छी नहीं लगती उसे
अच्छी नहीं लगती महफिल की रौनकें
जीवन की रंगीनियाँ दंश की तरह चुभती हैं

सारे जमाने से हो जाती है विरक्ति
रिश्ते-नाते सब के सब लगने लगते हैं झूठे

रंगों में भी हो जाती है उसकी
दिलचस्पी खत्म
यहाँ तक कि हरे पेड़ भी
हरे नजर नहीं आते
और चाँदनी तो मानो चिलचिलाती
धूप लगती है

वह नपे-तुले शब्दों में करता है बातें
और भीड़-भाड़ से रहता है अक्सर दूर

सब कुछ टूटा-टूटा सा दिखता है
यहाँ तक कि वह आदी हो जाता है
देखने का पूरी साबूत दुनिया को भी
टुकड़े-टुकड़े में

गंभीरता की चादर ओढ़
वह करता है अपने अकेलेपन में वास
और पार्क की आखिरी बेंच
या किसी सुनसान सड़क की पुलिया पर बैठ
करता है घंटों खुद से बातें

सभागार की सबसे पिछली सीट में
अक्सर अनामंत्रित की तरह बैठता है वह
और दर्ज कराते अपनी उपस्थिति
अनुपस्थित रहता है बहस से।

अकाल और मँहगाई में त्योहारों का आना

सूखा हो या अकाल
या फिर मँहगाई की मार
त्योहार आ ही जाते हैं बिन बुलाये
अपने निर्धारित समय पर

हर साल की तरह
इस साल भी आ ही जायेंगे वे
बिन बुलाये मेहमान की तरह
पर इस बार मँहगाई के शोर में
हम सुन नहीं पायेंगे उनके आने की आहट

इस बार फिर
अपनी उपवास करती माँ के लिए
नहीं ला पायेंगे हम
बाजार से खरीदकर फल
और माँ मेरी इस मजबूरी को एहसासती
फलहारी के नाम पर चला लेगी
पाव-भर दूध और साबूदाने से ही काम

जी-भर मनचाया पकवान
पका नहीं पायेगी पत्नी इस बार भी
थोड़े बहुत पकेंगे भी किसी तरह
तो फीकी रहेगी उसकी मिठास

इस बार भी
किसी त्योहार पर
वर्षों से मैके आने के सपने संजोये
छोटी बहन को भी हम सपरिवार,
नहीं लिवा पायेंगे अपने घर

बाबूजी को
नया कुर्ता सिलाकर देने का हमारा सपना
रह जायेगा इस बार भी अधूरा

रह जायेगी इस बार भी
पत्नी के सपनों में अटकी
वह सितारा वाली साड़ी
पिछले साल जिसका मोल भाव कर
छोड़ दी थी मात्र पचास रू0 की वजह से

इस बार खरीददारी में हम
साथ लिवा नहीं जायेंगे बच्चों को बाजार
बस किसी तरह
फुटपतिया कमीज और पतलून से ही
फुसला लेंगे उन्हें

न चाहते हुए भी
बच्चों की जिद के आगे झुकते
हम जायेंगे मेला खाली जेब
और लौट आयेंगे खाली हाथ
न मिठाई न सिनेमा-सर्कस
दस दुकान दर-दाम पूछ-पूछकर
गर्म जलेबियों की गरमा-गरमा मिठास से ही
तृप्त कर लेंगे आत्मा

रेलगाड़ी और हवाई जहाज लेने के
बच्चों की जिद्द को भी
दो टके की बाँसुरी और घिरनी से ही
मना लेंगे हम किसी तरह

हम मेले में चलेंगे
जेब में हाथ डाल
और हमारे आगे-आगे चलेगा
हमारी जेब का खलीपन

बस, कुछ इस तरह से ही
मना लेंगे हम महँगाई में त्योहार!

सिर्फ तुम तक ही सीमित नहीं मेरी दुनिया

माफ करना!
मेरी दुनिया सिर्फ तुम तक ही सीमित नहीं है

तुम्हारे रिश्ते की सीमा तक ही नहीं है
इसका विस्तार
उसके पार भी
दूर तक फैली दुनिया से है मेरा सरोकार

मैं अकेले जब कुछ सोच रहा होता हूँ
तो जरूरी नहीं कि
तुम्हारे ही बारे में सोचूँ

यह भी जरूरी नहीं
कि जब मैं कुछ लिख रहा होता हूँ
तो तुम्हारे नाम प्रेम-पत्र ही लिख रहा होऊँ

हो सकता है मैं
किसी के जलने-मरने
और देश के सुलगने की खबरें लिख रहा होऊँ
या फिर रोते हुए बच्चों के लिए लोरियाँ
या फिर गाँव में बीमार पड़ी माँ को खत

देखो मैं अभी तुम्हारे साथ नहीं जा सकता
मुझे पिताजी के लिए दबाईयाँ लानी है
और बच्चे को छोड़ने जाना है स्कूल

ऑफिस भी तो जाना है जरूरी
और अपने मित्र राहुल को भी
उसकी किताबें लौटानी हैं

बीमार पड़ोसी दीनबंधु को
देखने भी जाना है अस्पताल
और शाम जन-पुस्तकालय में आयोजित
विचार गोष्ठी में शामिल होकर रखना है
झारखण्ड की दशा-दिशा पर अपना विचार

इसलिए फिलहाल तुम जाओ
अभी नहीं जा सकता मैं तुम्हारे साथ!

सम्पर्क : जनमत शोध संस्थान
पुराना दुमका, केवटपाड़ा दुमका-814101
(झारखण्ड)
मो.: 9110072128/9431339804
ई-मेलः ashok.dumka@gmail.com

पीएम ने रखी सौर पीवी परियोजना की आधारशिला

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आंध्र प्रदेश के श्री सत्य साईं जिले के रामागिरी में सोलर एनर्जी कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड की 300 मेगावाट (एसी) सौर पीवी परियोजना की वर्चुअल माध्यम से आधारशिला रखी। यह परियोजना SECI की सबसे बड़ी स्व-स्वामित्व वाली सौर पीवी स्थापना है और भारत की नवीकरणीय ऊर्जा यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

यह आधारशिला 25 सितंबर 2025 को राजस्थान के बांसवाड़ा में आयोजित सेवा पर्व समारोह के एक भाग के रूप में रखी गई। इस अवसर पर राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ किसानराव बागड़े, राजस्थान के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा, केंद्रीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री प्रहलाद जोशी भी उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम में राजस्थान की उपमुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंदा बैरवा, राजस्थान की उपमुख्यमंत्री श्रीमती दीया कुमारी, आंध्र प्रदेश के ऊर्जा मंत्री गोट्टीपति रवि कुमार, हिंदूपुर के सांसद बी. के. पार्थसारथी और राजस्थान एवं आंध्र प्रदेश सरकार के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, 'हमारा प्रयास सबका साथ, सबका विकास, स्वच्छ ऊर्जा के साथ सभी का विकास और प्रत्येक परिवार के लिए बेहतर अवसरों पर केंद्रित है।'

रामगिरी और मुथुवाकुंटला गाँवों में 1,047 एकड़ में फैली यह परियोजना सीपीएसयू योजना चरण II, भाग III के तहत विकसित की गई है। बिजली मध्य प्रदेश पावर मैनेजमेंट कंपनी लिमिटेड (एमपीपीएमसीएल) द्वारा खरीदी जाएगी, जिसके लिए आवश्यक समझौता हो चुका है।

यह परियोजना निर्माण और संचालन, दोनों चरणों में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोज़गार के अवसर पैदा करेगी, स्थानीय बुनियादी ढाँचे के विकास को बढ़ावा देगी और क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास में

योगदान देगी। यह सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा संचालित नवीकरणीय ऊर्जा विकास का एक ऐसा मॉडल बनने की उम्मीद है जो राष्ट्रीय ऊर्जा प्राथमिकताओं को सामुदायिक लाभों के साथ संरेखित करेगा।

भारतीय सौर ऊर्जा निगम लिमिटेड (SECI) भारत सरकार की 100% हिस्सेदारी वाला एक अग्रणी नवरत्न केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम (CPSE) है, जो देश में नवीकरणीय ऊर्जा (RE) के विस्तार पर केंद्रित है। सरकार द्वारा एक नोडल एजेंसी के रूप में नियुक्त, SECI देश के नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों को पूरा करने और नवीन परियोजना विन्यासों के साथ नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र का नेतृत्व करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो 2025 में एनटीपीसी स्टॉल छोड़ रहा अपनी अलग छाप

ग्रेटर नोएडा में 25 से 29 सितंबर तक आयोजित हो रहे यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो 2025 में एनटीपीसी का स्टॉल इस वर्ष भी आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। मुख्य अतिथि गौतम देब, क्षेत्रीय कार्यकारी निदेशक (उत्तरी क्षेत्र) एवं कार्यकारी निदेशक (पीएम) ने स्टॉल का शुभारंभ किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि चंद्रमौलि काशिना, कार्यकारी निदेशक एवं परियोजना प्रमुख (एनटीपीसी दादरी), ए.के. मिश्र, मुख्य महाप्रबंधक (प्रचालन एवं अनुरक्षण), विल्सन अब्राहम, महाप्रबंधक (मानव संसाधन), अन्य वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

'एनटीपीसी की 50 वर्षीय यात्रा' थीम पर आधारित यह स्टॉल संगठन की गौरवशाली विरासत, सतत् विकास और राष्ट्र निर्माण में योगदान को प्रदर्शित कर रहा है। इस बार के मुख्य आकर्षणों में वीआर गेम्स, काइनेटिक वॉल, फ्लिपबुक और इंटरएक्टिव पैडल क्विज़ शामिल हैं, जो आगंतुकों को आधुनिक और रोचक अनुभव प्रदान कर रहे हैं। अपनी सुंदर एवं भव्य साज-सज्जा के कारण स्टॉल दर्शकों के बीच विशेष आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। गौतम देब ने स्टॉल का अवलोकन कर वहाँ प्रदर्शित उपलब्धियों एवं प्रयासों की सराहना की। उन्होंने प्रदर्शनी के आयोजन में एनटीपीसी दादरी के योगदान को सराहा।

उल्लेखनीय है कि एनटीपीसी दादरी द्वारा लगातार तीसरे वर्ष एनटीपीसी उत्तरी क्षेत्र की ओर से इस बहुप्रतीक्षित ट्रेड शो में स्टॉल का आयोजन किया जा रहा है। ●

प्रधानमंत्री ने राजस्थान में एनटीपीसी के नोख सोलर पीवी प्रोजेक्ट का किया उद्‌घाटन

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राजस्थान के फलौदी में राजस्थान सोलर पार्क डेवलपमेंट कंपनी लिमिटेड (आरएसडीसीएल) के नोख सोलर पार्क का 25 सितंबर, 2025 को उद्‌घाटन किया, जहां एनटीपीसी 735 मेगावाट सौर क्षमता विकसित कर रही है।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने राजस्थान के बांसवाड़ा में ASHVINI की महि बांसवाड़ा राजस्थान परमाणु ऊर्जा परियोजना (MBRAPP – 4x700 MW) की आधारशिला भी रखी। लगभग ₹42,000 करोड़ के निवेश से बनने वाली यह परियोजना देश के सबसे बड़े परमाणु ऊर्जा संयंत्रों में से एक होगी, जो विश्वसनीय बेस-लोड ऊर्जा प्रदान करेगी और पर्यावरण संरक्षण तथा विकसित हो रहे परमाणु ऊर्जा परिदृश्य में भारत की अग्रणी भूमिका को और मजबूत करेगी।

नोख सोलर पार्क (925 मेगावाट), एक अक्षय ऊर्जा परियोजना, भारत की स्वच्छ ऊर्जा क्षमता में महत्वपूर्ण योगदान देगा, बड़ी मात्रा में हरित ऊर्जा उत्पन्न करेगा और हर वर्ष लाखों टन कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन से बचाएगा। यह परियोजना एनटीपीसी उत्तरी क्षेत्र मुख्यालय द्वारा विकसित की जा रही है। ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करने के साथ-साथ यह प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से हजारों रोजगार के अवसर भी सृजित करेगी और आर्थिक विकास को गति प्रदान करेगी।

यह परियोजना चरणबद्ध रूप से चालू की जा रही है, और भविष्य में इसकी और क्षमता ऑनलाइन लाई जाएगी। परियोजना पूरा होने पर यह एनटीपीसी के हरित ऊर्जा पोर्टफोलियो में महत्वपूर्ण योगदान देगा और भारत सरकार के ऊर्जा संक्रमण के दृष्टिकोण के अनुरूप 2070 तक नेट-जीरो उत्सर्जन हासिल करने की प्रतिबद्धता को और मजबूत करेगा।

नोख परियोजना के चालू होने के साथ ही, एनटीपीसी अपनी अक्षय ऊर्जा उपस्थिति का विस्तार जारी रखता है, और भारत के स्वच्छ ऊर्जा परिवर्तन एवं सतत विकास में अपनी अग्रणी भूमिका को और सुदृढ़ करता है।

उद्‌घाटन समारोह में सांसद गजेंद्र सिंह शेखावत (जोधपुर) वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से शामिल हुए, वहीं श्री पब्बा राम बिश्नोई, विधायक फलोदी और श्री सुखराम पिंडेल, SDM उपस्थित रहे। समारोह में गौतम देब, क्षेत्रीय कार्यकारी निदेशक (उत्तर),एनटीपीसी ने भी वर्चुअली भाग लिया।

साथ ही इस कार्यक्रम में एम. श्रीनिवास, परियोजना प्रमुख, नोख; समीरन सिन्हा राय, मुख्य महाप्रबंधक, मानव संसाधन एवं एनआरएचक्यू टीम; अजय कुमार शुक्ला, जीएम (आरई-पीएम); अशोक कुमार गौतम और नौख परियोजना टीम, स्थानीय ग्रामीणों, राजस्व अधिकारियों, पुलिस अधिकारियों और RSDCL टीम की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई। ●

मंत्री ने खुर्जा एसटीपीपी की दूसरी इकाई की सराहना की

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड ने खुर्जा, उत्तर प्रदेश में खुर्जा सुपर थर्मल पावर प्रोजेक्ट (2x660 मेगावाट) की दूसरी इकाई (660 मेगावाट) का वाणिज्यिक प्रचालन सफलतापूर्वक शुरू कर दिया। इस महत्वपूर्ण अवसर पर भारत सरकार के केंद्रीय विद्युत, आवास एवं शहरी कार्य मंत्री मनोहर लाल उपस्थित थे, जिन्होंने वर्चुअल माध्यम से दूसरी इकाई के प्रचालन का आधिकारिक उद्घाटन किया। ए. के. शर्मा, ऊर्जा एवं नगर विकास मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार और नरेंद्र भूषण (आईएएस), अपर मुख्य सचिव, ऊर्जा एवं अतिरिक्त ऊर्जा स्त्रोत, उत्तर प्रदेश सरकार तथा अन्य अधिकारी भी वर्चुअल माध्यम से इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में विद्युत क्षेत्र के प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया, जो विद्युत मंत्रालय, श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली से वर्चुअल माध्यम से शामिल हुए, जिनमें श्री घनश्याम प्रसाद, अध्यक्ष, केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण, श्रीकांत नागुलापल्ली (आईएएस), अपर सचिव, विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार; पीयूष सिंह (आईएएस), अपर सचिव, विद्युत मंत्रालय, भारत सरकार; आर. के. विश्नोई, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, टीएचडीसीआईएल शामिल थे। खुर्जा परियोजना नियंत्रण कक्ष से, इस कार्यक्रम में टीएचडीसीआईएल के निदेशक (वित्त) सिपन कुमार गर्ग और टीएचडीसीआईएल के कार्यपालक निदेशक (परियोजना) कुमार शरद के साथ-साथ टीएचडीसीआईएल के वरिष्ठ अधिकारी और परियोजना संघ के प्रतिनिधि, जिसमें एनटीपीसी, बीएचईएल, स्टीग, राइट्स, जीई वर्नोवा, एल एंड टी, एमर्सन और विद्युत क्षेत्र के अन्य प्रमुख हितधारक उपस्थित रहे।

मनोहर लाल, केंद्रीय विद्युत, आवास एवं शहरी कार्य मंत्री, भारत सरकार ने इस महत्वपूर्ण उपलब्धि को प्राप्त करने पर टीएचडीसीआईएल और खुर्जा सुपर थर्मल पावर परियोजना से जुड़े सभी हितधारकों को बधाई दी। उन्होंने विद्युत क्षेत्र के विकास को गति देने, ग्रिड स्थिरता को सुदृढ़ करने और उत्तर प्रदेश तथा राष्ट्र की ऊर्जा आकांक्षाओं को पूरा करने में केएसटीपीपी की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया। मंत्री ने इस बात पर भी बल दिया कि पारंपरिक रूप से एक जलविद्युत कंपनी के रूप में मान्यता प्राप्त टीएचडीसीआईएल ने इस तापीय परियोजना को रिकॉर्ड समय में पूरा करके एक नया मानदंड स्थापित किया है, जो पूरे उद्योग जगत के लिए एक प्रेरणा है।

उप्र के ऊर्जा एवं नगर विकास मंत्री, ए. के. शर्मा ने सीओडी की इस उपलब्धि की सराहना करते हुए कहा कि केएसटीपीपी की दूसरी इकाई भारत की बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं को विश्वसनीय और किफायती विद्युत से पूरा करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह उत्तर प्रदेश को ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। उन्होंने आगे ज़ोर देकर कहा कि यह परियोजना राज्य और क्षेत्र के विद्युत आपूर्ति परिदृश्य को काफ़ी मज़बूत करेगी।

सीईए के अध्यक्ष, घनश्याम प्रसाद ने इस उपलब्धि पर टीएचडीसीआईएल को बधाई दी और कहा कि केएसटीपीपी न केवल उत्तर प्रदेश और उत्तरी भारत में विद्युत आपूर्ति को बढ़ाएगा, बल्कि आधुनिक, कुशल और सतत विद्युत अवसंरचना विकसित करने के लिए देश की प्रतिबद्धता की भी पुष्टि करेगा।

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक आर.के.विश्नोई ने इस अवसर पर विशिष्ट उपस्थिति के लिए केंद्रीय विद्युत, आवास एवं शहरी कार्य मंत्री, मनोहर लाल का आभार व्यक्त किया। उन्होंने उत्तर प्रदेश सरकार के ऊर्जा एवं शहरी विकास मंत्री ए.के. शर्मा की उपस्थिति के लिए भी आभार व्यक्त किया। उन्होंने विद्युत मंत्रालय और एनटीपीसी के निरंतर मार्गदर्शन और सहयोग की सराहना की, जिनके निरंतर प्रोत्साहन ने खुर्जा एसटीपी परियोजना (2x660 मेगावाट) के सफल क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

14 विशेष पैकेजों के माध्यम से निर्मित 1320 मेगावाट के इस संयंत्र ने अपनी पहली इकाई की सीओडी 26.01.2025 को और दूसरी इकाई की 22.09.2025 को प्राप्त की, जिससे कोविड-19 और अन्य चुनौतियों के बावजूद इसे सुचारू रूप से पूरा किया गया। अल्ट्रा-सुपरक्रिटिकल तकनीक, उच्च दक्षता वाले पर्यावरणीय सुरक्षा उपायों और अमेलिया खदान से प्राप्त कैप्टिव कोल लिंकेज से सुसज्जित, इस परियोजना को सालाना 9,264 मिलियन यूनिट विद्युत उत्पादन के लिए परिकल्पित किया गया है, जो भारत की विद्युत क्षमता और विश्वसनीयता में प्रभावी योगदान देगा।

उल्लेखनीय है कि टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की इक्विटी एनटीपीसी और उत्तर प्रदेश सरकार के बीच साझा की जाती है।

एनटीपीसी ने कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन में जीते 127 पुरस्कार

एनटीपीसी लिमिटेड ने जनसंपर्क परिषद् ऑफ इंडिया द्वारा गोवा में आयोजित 19वीं ग्लोबल कम्युनिकेशंस कॉन्फ्रेंस में शानदार उपलब्धि दर्ज की है। कंपनी को कुल 127 पुरस्कारों से नवाजा गया, जिनमें 14 गोल्ड, 28 सिल्वर, 42 ब्रॉन्ज और 43 सांत्वना पुरस्कार शामिल हैं। इसके अलावा, एनटीपीसी को चैंपियंस ऑफ चैंपियन ट्रॉफी में प्रथम रनर-अप भी घोषित किया गया।

यह उपलब्धि कंपनी की निरंतर उत्कृष्ट प्रदर्शन, प्रभावी संवाद क्षमता और हितधारकों से मजबूत जुड़ाव का परिणाम है। एनटीपीसी की पुरस्कार विजेता पहलों में मानव संसाधन प्रथाएं, सामुदायिक विकास और सीएसआर परियोजनाएं, कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन कैंपेन, डिजिटल प्लेटफॉर्म, कर्मचारी सहभागिता गतिविधियां और फिल्में शामिल रहीं। विभिन्न स्टेशनों और क्षेत्रों से मिले इन पुरस्कारों ने संगठन की सहयोगात्मक और नवाचारपूर्ण कार्यशैली को उजागर किया है।

एनटीपीसी लिमिटेड भारत की सबसे बड़ी एकीकृत विद्युत कंपनी है, जो देश की कुल बिजली आवश्यकताओं का लगभग एक-चौथाई योगदान देती है। कंपनी की कुल स्थापित क्षमता 83 गीगावॉट है और 30.90 गीगावॉट अतिरिक्त क्षमता निर्माणाधीन है, जिसमें 13.3 गीगावॉट नवीकरणीय ऊर्जा शामिल है। एनटीपीसी का लक्ष्य 2032 तक 60 गीगावॉट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता हासिल करना है, जिससे भारत के नेट जीरो संकल्प को मजबूती मिलेगी। थर्मल, हाइड्रो, सौर और पवन ऊर्जा परियोजनाओं के विविध पोर्टफोलियो के साथ एनटीपीसी देश को विश्वसनीय, किफायती और सतत ऊर्जा उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। कंपनी स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों को अपनाते हुए नवाचार और हरित भविष्य की दिशा में निरंतर अग्रसर है।

दिवाकर कौशिक ने क्षेत्रीय कार्यकारी निदेशक की सम्हाली कमान

दिवाकर कौशिक ने गत 24 सितंबर को एनटीपीसी नवा रायपुर के पश्चिमी क्षेत्र-II के क्षेत्रीय कार्यकारी निदेशक का अतिरिक्त कार्यभार ग्रहण किया है। वर्तमान में वे एनएसपीसीएल (एनटीपीसी-सेल पावर कंपनी लिमिटेड) के सीईओ के पद पर कार्यरत हैं।

एनआईटी कुरुक्षेत्र से मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढाई के पश्चात श्री कौशिक 1987 में एक कार्यकारी प्रशिक्षु के रूप में एनटीपीसी में शामिल हुए। उनके श्रेय के लिए उन्होंने IGNOU से मानव संसाधन प्रबंधन में MBA किया। श्री कौशिक को संचालन, ईआरपी और आईटी के क्षेत्रों में समृद्ध और विविध अनुभव है। उन्होंने 38 वर्षों के अपने करियर में कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया और उत्तर प्रदेश में एनटीपीसी औरैया, हरियाणा में एनटीपीसी फरीदाबाद, उत्तर प्रदेश में एनटीपीसी सीसी ईओसी नोएडा, उत्तर प्रदेश में एनटीपीसी दादरी और महाराष्ट्र में एनटीपीसी मौदा में कार्य किया। अपने शानदार करियर में श्री कौशिक ने उत्तर प्रदेश में एनटीपीसी औरैया, आंध्रप्रदेश में एनटीपीसी सिम्हाद्री और छत्तीसगढ़ में एनटीपीसी लारा परियोजना प्रमुख का दायित्व भी निभाया। अपने समृद्ध और विविध अनुभव के साथ, एनटीपीसी पश्चिम क्षेत्र-II उनके कुशल मार्गदर्शन और प्रभावी नेतृत्व के तहत आने वाले दिनों में बहुत लाभान्वित होगा।

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

(जन्म 15 अक्टूबर 1931)

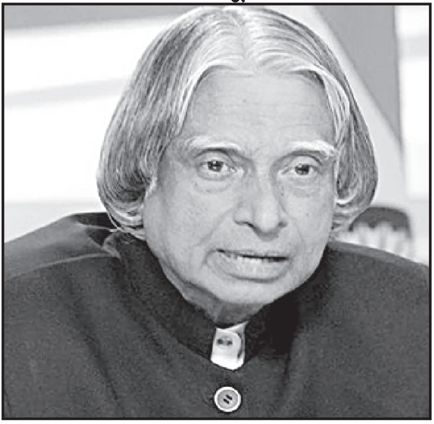

अबुल पकिर जैनुल्लाब्दीन अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को रामेश्वरम् तमिलनाडु में हुआ था। भारत के पूर्व राष्ट्रपति प्रसिद्ध वैज्ञानिक और अभियन्ता के रुप में विख्यात थे। उन्हें मिसाइल मैन के रुप में भी जाना जाता रहा। गरीबी में पले-बढ़े कलाम का प्रारम्भिक जीवन काफी संघर्षो भरा रहा। अपने पढ़ाई के लिए उन्हें अखबार बेचकर पैसे जुटाने पड़ते थे। 1962 में वे भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन में आये और उन्हें पहला स्वदेशी उपग्रह एसएलबी तृतीय प्रक्षेपास्त्र बनाने का श्रेय हासिल हुआ। जुलाई 1980 में इन्होंने रोहिणी उपग्रह को पृथ्वी की कक्षा के निकट स्थापित किया था। भारत को अन्तर्राष्ट्रीय अन्तरिक्ष क्लब का सदस्य बनाने 'इसरो लान्च व्हीकल प्रोग्राम' को परवान चढ़ाने का श्रेय भी इन्हीं को जाता है। इन्होंने अग्नि व पृथ्वी जैसी मिसाइल्स को स्वदेशी तकनीक से बनाया। फरवरी 1982 में डाक्टर अब्दुल कलाम को डी.आर.डी.एल. का निदेशक नियुक्त किया गया। इनकी प्रतिभा को देखते हुए गैर राजनीतिक होते हुए भी राष्ट्रपति बनाया गया। इन्हें देश के अनेक बड़े पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिसमें 1981 में पद्मभूषण, 1990 में पद्मविभूषण, 1997 में भारत रत्न प्रदान किया गया। इनका कार्यकाल 25 जुलाई 2002 से 25 जुलाई 2007 तक रहा। 27 जुलाई 2015 को शिलोंग में एक कार्यक्रम के दौरान हृदयगति रुकने से डा. कलाम का निधन हो गया।

लच्छू महाराज

(जन्म 16 अक्टूबर 1944)

लच्छू महाराज का जन्म 16 अक्टूबर 1944 को उत्तर प्रदेश के बनारस नगरी में हुआ था। इनके पिता का नाम वासुदेव महाराज था, बारह भाई-बहनों में चौथे नम्बर पर थे लच्छू महाराज, जो फ्रांसीसी महिला टीना से विवाहित थे। जाने-माने तबला वादक लच्छू महाराज ने भारत सरकार की ओर से 27 देशों का दौरा किया था और अनेक फिल्मों में

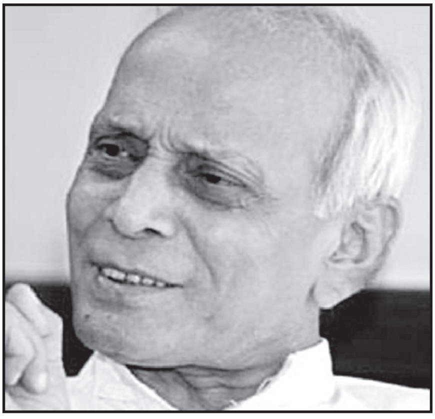

तबला बजाया। हिन्दी फिल्मों के प्रसिद्ध अभिनेता गोविन्दा लच्छू महाराज के भांजे हैं। गोविन्दा ने लच्छू महाराज को ही गुरु माना था और तबला वादन सीखा था। 1972 में केंद्र सरकार ने पद्मश्री से नवाजा मगर लच्छू महाराज ने यह पुरस्कार लेने से इंकार कर दिया और कहा कि श्रोताओं की वाह और तालियों की गूंज ही कलाकार का पुरस्कार होता है। लच्छू महाराज का निधन 27 जुलाई 2016 को हुआ। अंतिम संस्कार बनारस के मणिकर्णिका घाट पर हुआ। इनकी एक पुत्री है जो स्वीटजरलैंड में है।

ठाकुर प्रसाद सिंह

(जन्म 26 अक्टूबर 1924)

ठाकुर प्रसाद सिंह का जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी शहर के ईश्वरगंगी मुहल्ले में 26 अक्टूबर 1924 को हुआ था। भारत में नवगीत

विधा के कवियों में इनका नाम प्रमुखता से लिया जाता है। इन्होंने हिन्दी तथा प्राचीन भारतीय इतिहास व पुरातत्व में उच्चशिक्षा प्राप्त की थी। कई वर्षों तक अध्यापन और पत्रकारिता के बाद ठाकुर प्रसाद सिंह उत्तर प्रदेश सूचना विभाग में नियुक्त हुए तथा हिन्दी संस्थान के भी निदेशक बनाये गये। ठाकुर प्रसाद सिंह ने कई पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया, नाटक तथा उपन्यास भी लिखे। कविता के क्षेत्र में इनके महामानव (प्रबन्ध काव्य) एवं वंशी और मादल (गीत संग्रह) विशेष चर्चित रहे। इनके कई कविता संग्रह और कहानियां प्रकाशित हैं। इनकी प्रमुख रचनाएं कुब्जा सुन्दरी, आदिम, पहिए, 15 अगस्त, कठपुतली, गहरे सागर के मोती, पुराने घर नये लोग, हिन्दी निबन्ध और निबन्धकार हैं।

विजेन्द्र कुमार सिंह

(जन्म 29 अक्टूबर 1985)

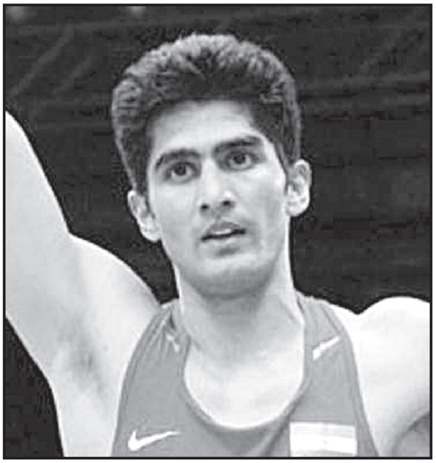

भारतीय ओलम्पिक के इतिहास में मुक्केबाजी की स्पर्धा में कांस्य पदक जीतने वाले प्रथम भारतीय मुक्केबाज विजेन्द्र कुमार सिंह का जन्म हरियाणा के भिवानी जिले में हुआ है। विजेन्द्र ने 2004 में एथेंस ओलम्पिक में सर्वप्रथम भाग लिया। किन्तु वह बेल्टर वेट वर्ग में तुर्की के मुस्तफा कारागोलेयू से 20-25 से पराजित हो गये। राष्ट्रमण्डल खेल वर्ष 2006 में इंग्लैंड के नील पिरकिन्स को सेमीफाइनल में पराजित कर फाइनल में प्रवेश किया, किन्तु दक्षिण अफ्रीका के वोनगानी मविलासी से पराजित हो गये और कांस्य पदक ही जीत सके। दोहा ओलम्पिक में भी इन्हें कांस्य पदक से ही संतोष करना पड़ा। 2008 बिजिंग में कांस्य पदक के बाद भारत सरकार ने इन्हें अर्जुन पुरस्कार से नवाजा। राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार भी इनके नाम दर्ज है।

पंडित कमलापति त्रिपाठी

(पुण्यतिथि 8 अक्टूबर)

पंडित कमलापति त्रिपाठी का जन्म 3 सितम्बर 1905 को हुआ था। उनके पिता का नाम पंडित नारायणपति त्रिपाठी था। मूल रुप से वे पंडी के तिवारी परिवार से थे जिससे उनको पंडी तिवारी कहा जाता था। औरंगजेब के समय इनका परिवार बनारस आकर बस गया था। पंडित जी ने काशी विद्यापीठ से शास्त्री एवं डी लिट की उपाधि प्राप्त की। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी, 1921 में असहयोग आंदोलन व सविनय अवज्ञा आन्दोलन में जेल जाने, तीन साल तक जेल में बिताने के बाद आजाद भारत में एक सफल राजनीतिज्ञ के रुप में कमलापति जी की पहचान बनी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष तक के सफर में इन्होंने देश के रेलमंत्री के रुप में ऐतिहासिक कार्य किया। कमलापति त्रिपाठी 4 अप्रैल 1971 से 12 जून 1973 तक उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे। वर्ष 1973 से 1978, 1978 से 1980 और 1985 से 1986 में राज्यसभा, 1980 से 1984 तक वे लोकसभा के सदस्य थे। कमलापति त्रिपाठी हिन्दी तथा संस्कृत के विद्वान और ग्रन्थकार थे। उन्होंने 'आज' तथा 'संसार' नामक समाचार पत्रों का सम्पादन भी किया। महान राजनीतिज्ञ कमलापति जी का निधन 8 अक्टूबर 1990 को वाराणसी में हुआ।

इंदिरा गांधी

(पुण्यतिथि 31 अक्टूबर)

इंदिरा प्रियदर्शिनी गांधी का जन्म 19 नवम्बर 1917 को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में हुआ था। श्रीमती गांधी भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु की इकलौती पुत्री थीं। इंदिरा गांधी को केवल इस कारण नहीं जाना जाता कि वह पंडित नेहरु की पुत्री थी, बल्कि इंदिरा गांधी अपनी प्रतिभा और राजनीतिक दृढ़ता के लिए विश्वराजनीति के इतिहास में लौह-महिला के नाम से जानी जाती हैं। और भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री भी थी। स्वतंत्रता आन्दोलन में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। इनकी शिक्षा विश्वभारती विश्वविद्यालय बंगाल, इंग्लैंड की आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी और शांति निकेतन में हुई। राजीव गांधी और संजय गांधी इनके दो पुत्र हुए। अमेरिका और फ्रांस में हुए जनमत सर्वे में इन्हें सबसे विख्यात महिला का खिताब मिला था। पहली बार अगस्त 1964 से फरवरी 1967 तक राज्यसभा, 1971 में लोकसभा के लिए चुनी गयी। सूचना और प्रसारण मंत्री भारत सरकार 1964-1966, फिर 1966 से प्रधानमंत्री प्रथम बार, 13 मार्च 1967 को

दूसरी बार और 18 मार्च 1971 को तीसरी बार शपथ लीं। अदम्य साहस, युद्ध कौशल, राजनीतिक कूटनीतिज्ञ और कुशल प्रशासक के रुप में चर्चित इंदिरा जी को स्वर्ण मंदिर पर आपरेशन ब्लू स्टार के प्रतिकार में पांच महीने के बाद ही 31 अक्टूबर 1984 को उनके आवास पर तैनात दो सिक्ख अंगरक्षकों ने गोली मारकर हत्या कर दी। भारत और भारतीय राजनीति को विश्व पटल पर स्थापित कर वे अमर हो गयीं। कहा जाता है कि देश में ऐसा प्रधानमंत्री अभी तक दूसरा पैदा नहीं हुआ।

अजय मिश्र बड़े कथाकार थे

13 नवम्बर 1946 को बनारस के एक संस्कृतज्ञ परिवार में जन्मे श्री अजय मिश्र काशी के एक बड़े कथाकार थे। उनके पिता बलदेव प्रसाद मिश्र अपने समय के चर्चित कथाकार, व्यंग्य लेखक तथा प्रखर आलोचक रहे। मई 1956 में पिता के असामयिक निधन के बाद 10 वर्ष की अल्पायु से ही जीवन के कटुतम अनुभवों से साक्षात्कार तथा शिक्षा में अनेक बार व्यवधान झेलते हुए श्री मिश्र ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से 1970 में स्नातक की उपाधि ली। श्री मिश्र ने विद्यार्थी-जीवन से ही

लेखन को आजीविका का सहारा बनाया। सन् 65 में 'आज', 'भारत', 'स्वतंत्र भारत', 'नवजीवन' तथा 'नवभारत टाइम्स' से शुरू कर 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', 'धर्मयुग', 'त्रिपथगा' तथा सरस्वती में 76 तक नियमित लेखन किया तथा नागरी प्रचारिणी सभा की 'नागरी पत्रिका' में पुस्तक समीक्षा लिखी। 71 में 'कालक्षेप' के लिए धनबाद में स्वतंत्र पत्रकारिता की। सन् 77 से आनंद बाजार पत्रिका समूह के 'संडे', 'रविवार', 'बिजनेस स्टैंडर्ड' तथा 'द टेलीग्राफ' में दक्षिण बिहार में संवाददाता के रूप में नियमित काम किया। इनके अनेक महत्वपूर्ण लेखों का तमिल, कन्नड़ तथा गुजराती में अनुवाद हो चुका है।

श्री मिश्र ने का.हि.वि.वि. की 'निकाय' पत्रिका का संपादन किया। वि.वि. पत्रिका 'परिवेश' की परिकल्पना तथा संयोजन में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। वार्षिक प्रकाशन 'उलूक' तथा 'पहली अप्रैल' में सम्पादकीय योगदान किया। धनबाद में 'दस्तक' तथा 1989 से 1992 तक धनबाद 'आज' का सम्पादन किया। अजय मिश्र अगस्त 2001 से धनबाद के 'आवाज' में 'अंततः' नाम से दैनिक व्यंग्य स्तम्भ तथा 'प्रभात खबर' में 'खरी-खोटी' स्तम्भ के अन्तर्गत सामयिक टिप्पणियां लिखते रहे। अनेक पत्र-पत्रिकाओं के लिए पुस्तक समीक्षा लिखी। प्रमुख साहित्यिक पत्रिकाओं में व्यंग्य के मूल स्वर के साथ बनारस पर अनेक कहानियाँ छपीं। बनारस पर केन्द्रित उपन्यास 'पक्का महाल' तथा बनारस पर ही कविता, कहानी तथा लेख संग्रह का प्रकाशन निरंतर जारी रहा। 31 जुलाई 2019 को आप सदा के लिए हमसे विदा हो लिए।

पूरे मनुष्य थे बुद्धिसागर तिवारी

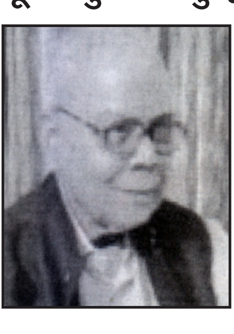

बुद्धिसागर तिवारी काशी के प्रतिष्ठित और प्रबुद्ध नागरिक थे। इनकी पार्थिव काया 5 अगस्त 2019 को पंचतत्व में विलीन हो गई। श्री तिवारी चोटिल होने के कारण अस्वस्थ चल रहे थे। उनके सिर में चोट लगी थी। उनका इलाज चल रहा था और अनुमान लगाया जा रहा था कि वे शीघ्र स्वस्थ हो जायेंगे। तिवारी जी अस्सी की डुँमराव कालोनी में रहते थे। परिवहन विभाग के उच्चाधिकारी के रूप में उन्होंने अपनी सेवाएँ दी थीं। उपायुक्त पद तक वे पहुँचे थे, अवकाश प्राप्ति के बाद अस्सी की दो अड़ियों (पोई और कल्लू) के प्रतिष्ठित सदस्य बन गए थे। तिवारी जी साहित्यिक अभिरुचि के धनी थे। बहु पठित थे और शब्दशास्त्री की भाँति शब्दों की विवेचना किया करते थे। अधिकारी रहते हुए उन्होंने 100 से अधिक कवि सम्मेलनों का आयोंजन किया था और साहित्यकारों की मदद की थी। सेवा से निवृत्त होने के बाद वे अपने आवास पर साहित्यिक गोष्ठियों का आयोजन करते और कविताओं का आस्वाद लेते थे। प्रतिमाह एक कवि का सम्मान करना उनके आयोजन का एक हिस्सा था। वे कविता संग्रहों और गीत संकलनों के प्रकाशन में आर्थिक सहयोग करते थे। कोई भी कवि या साहित्यकार अपनी पुस्तक उन्हें भेंट करता तो कम-से-कम उस पुस्तक की पाँच प्रतियाँ खरीदते थे और काव्य रसिकों में बाँट देते थे।

तिवारी जी की इच्छा थी कि रामदरश मिश्र पर एक पुस्तक का सम्पादन कराया जाय। काशी के कवि पत्रकार लोलार्क द्विवेदी से वे बार-बार यह काम करने के लिए कहते थे किन्तु अपने जीवन काल में ऐसा होते हुए देख न सके। गीत विधा में उनकी गहरी रुचि थी और गीतकारों के संग्रह पढ़ा करते थे। श्री द्विवेदी ने उन्हें नचिकेता के संपादन में प्रकाशित गीत संग्रह पढ़ने को दिया तो बहुत प्रसन्न हुए। ऐसा लगा जैसे उन्हें गीतों का खजाना मिल गया हो। तिवारी जी सहज, सरल और सबके बीच उठने-बैठने वाले व्यक्ति थे। गाँव गिराँव परिवार उन्हें श्रद्धांजलि देता है।

साहित्यकार राजेन्द्राचार्य

साहित्यकार राजेन्द्राचार्य का 27 अगस्त 2019 को निधन हो गया। उनकी किताब 'नवदृष्टि गीता' भौतिक विज्ञान, और साम्यवाद जैसे आधुनिक विषयों को भी भारतीय चिन्तन की सनातन परिधि में युक्ति संगत ढंग से लाने वाली पहली पुस्तक है।

विचार और विवेचन में श्री राजेन्द्राचार्य (डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय) की नवता है जो इनकी अस्मिता को अनन्यता प्रदान करती है। 25 जून 1947 को उत्तर प्रदेश के कौशांबी जनपद-अंतर्गत अर्का गांव में जन्मे श्री राजेन्द्राचार्य ने काशी में रहकर संस्कृत में साहित्याचार्य और हिन्दी में एम.ए., पी.एच.डी. किया। केंद्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय (सारनाथ) और स्नातकोत्तर महाविद्यालय गाजीपुर में चार-चार वर्ष अध्यापन करने के बाद ये उत्तर प्रदेश की प्रशासनिक सेवा में आ गये और जून 2007 में प्रमुख सचिव स्तर के अधिकारी पद से सेवानिवृत्त हुए।

छात्र-जीवन की खिलती वय से ही संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में साहित्य रचते आ रहे श्री राजेन्द्राचार्य की प्रमुख कृतियां हैं : (प्रकाशित) वेदमहत्त्वम्, कर्मविमर्शः (काव्य), गांव-बेगांव (उपन्यास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा पुरस्कृत) और फूटती नदी (कविता संग्रह)। प्रकाशनाधीन- कालिदास का फलितार्थ, लौकिक रुद्राष्टाध्यायी, तदर्थ (निबंध), नदी में नदी (गीत)। श्री राजेन्द्राचार्य उ.प्र. हिन्दी-उर्दू साहित्य अवार्ड कमेटी द्वारा 'साहित्य शिरोमणि' (2004) सम्मान, अखिल भारतीय संत सम्मेलन द्वारा 'विद्यासागर' उपाधि, आर्यावर्त विद्वत् परिषद् तथा आदि बदरिकाश्रम एवं द्वारिकापीठ के श्री शंकराचार्य द्वारा महामहोपाध्याय आदि सम्मान प्राप्त कर चुके थे। साहित्यिक पत्रिका 'नान्दी' और 'हमारा भारत' का संपादन भी कर रहे थे।

गाँव गिराँव परिवार की ओर से उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

गुजरात का गौरव 'रानी की वाव'

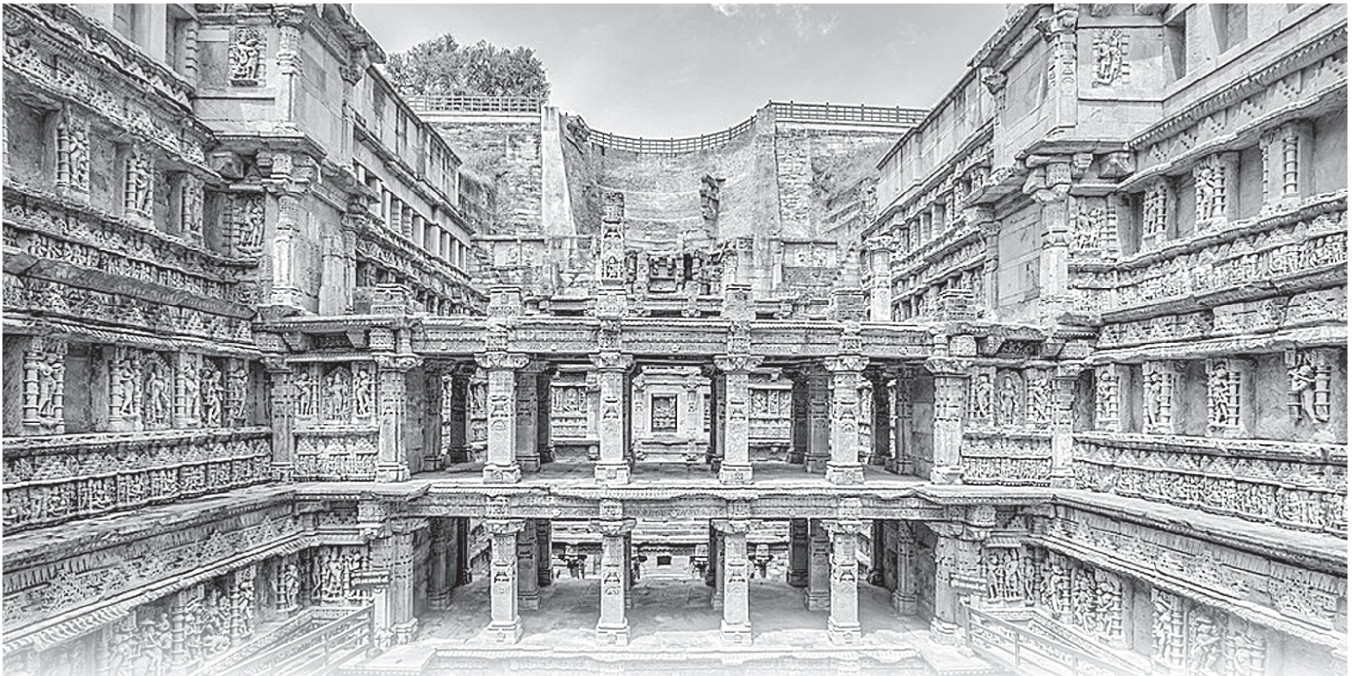

गुजरात के पाटन नगर में स्थित रानी की वाव (सीढ़ीदार बावड़ी) भारतीय स्थापत्य और शिल्पकला का अनमोल खजाना है। इसे यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल का दर्जा प्राप्त है और यह गुजरात आने वाले हर पर्यटक के आकर्षण का केंद्र है। यह बावड़ी केवल जल संग्रहण की संरचना नहीं है, बल्कि धार्मिक, सांस्कृतिक और कलात्मक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

रानी की वाव का निर्माण 11वीं शताब्दी में सोलंकी वंश की रानी उदयमती ने अपने पति राजा भीमदेव प्रथम की स्मृति में करवाया था। इस कारण इसका नाम 'रानी की वाव' पड़ा। यह संरचना न केवल प्रेम और श्रद्धा का प्रतीक है, बल्कि उस युग की स्थापत्य दक्षता का भी अद्भुत उदाहरण है।

स्थापत्य विशेषताएँ-

रानी की वाव लगभग 64 मीटर लंबी, 20 मीटर चौड़ी और 27 मीटर गहरी है। इसमें सात मंज़िलें हैं और हर मंज़िल पर सुंदर सीढ़ियाँ तथा चौक बनाए गए हैं। बावड़ी की दीवारों पर लगभग 500 मुख्य मूर्तियाँ और 1000 से अधिक छोटी मूर्तियाँ उकेरी गई हैं।

इनमें भगवान विष्णु के विभिन्न अवतार, देवी-देवताओं, अप्सराओं, ऋषियों और दैनंदिन जीवन के दृश्य अंकित हैं।

इसकी सबसे खास विशेषता यह है कि जब कोई यात्री नीचे उतरता है, तो उसे लगता है मानो वह पृथ्वी की गोद में किसी भव्य मंदिर की ओर बढ़ रहा हो।

कलात्मक सौंदर्य

बावड़ी की नक्काशी इतनी बारीक है कि पत्थरों पर बने चेहरे, आभूषण और मुद्राएँ जीवंत प्रतीत होती हैं। इसमें दशावतार (विष्णु के दस अवतार) की मूर्तियाँ विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं।

वर्तमान स्थिति और पर्यटन

रानी की वाव भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित है। हर वर्ष हजारों पर्यटक यहाँ आते हैं।

2014 में इसे यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया और 2016 में इसे भारत की नई ₹100 के नोट की डिजाइन पर भी स्थान दिया गया। यहाँ अक्सर रानी की वाव फेस्टिवल भी आयोजित किया जाता है, जिसमें लोकनृत्य, संगीत और सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं।

कैसे पहुँचे?

निकटतम हवाई अड्डा : अहमदाबाद (लगभग 125 किमी)

रेलवे स्टेशन : मेहसाणा और पाटन

सड़क मार्ग : अहमदाबाद और गांधीनगर से पाटन तक सड़क द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है।

रानी की वाव भारतीय शिल्पकला, स्थापत्य और संस्कृति का अद्वितीय उदाहरण है। यह न केवल जल प्रबंधन का एक प्राचीन और वैज्ञानिक मॉडल है बल्कि प्रेम, श्रद्धा और कला की जीवित मिसाल भी है। पाटन आने वाला हर यात्री इस धरोहर को देखकर भारत की महान सांस्कृतिक परंपरा पर गर्व महसूस करता है।

गजब का निखार लाएं टमाटर स्क्रब फेशियल

त्वचा की देखभाल के लिए ढील बिल्कुल भी न छोड़े। अगर आप सही ढंग से स्किन केयर करेंगी तो त्वचा भी शाइन करेगी। स्किन केयर में सबसे मुख्य स्टेप पहला क्लीनिंग होता है, अगर आपकी स्किन अच्छे साफ नहीं हुई तो कुछ भी अप्लाई कर लें आपको इससे कोई भी फायदा नहीं होगा। स्किन को साफ रखने के लिए हम सभी वेश वॉश को प्रयोग करते हैं। हालांकि, अगर आपने हैवी मेकअप या वाटर प्रूफ स्किन व मेकअप प्रोडक्ट्स को अप्लाई किया है, तो ऐसे में केवल फेस वॉश यूज करना काफी नहीं है। आप डबल क्लींजिंग मेथड़ अपनाना सकते हैं।

स्किन की डबल क्लींजिंग

डबल क्लींजिंग की मदद से आप दो स्टेप में स्किन को साफ करते हैं। आप तेल से मेकअप, सनस्क्रीन, धूल-मिट्टी और एक्स्ट्रा ऑयल को साफ करें। इसके बाद मुल्तानी मिट्टी से पोर्स को डीप क्लीन करो, ऑयल सोखो और फेस को फ्रेश और ग्लोइंग महसूस कराओ। तो बिना देर किए आपको बताते हैं देसी तरीके से घर पर स्किन की डबल क्लींजिंग कैसे करें।

ऑयल क्लींजिंग

डबल क्लींजिंग के लिए आप सबसे पहले ऑयल क्लींजिंग जरुर करें। दो-तीन चम्मच बादाम का तेल लें। यदि आपकी स्किन ड्राई है तो नारियल का तेल अच्छा रहेगा, अगर आपकी स्किन ऑयली है तो इसके लिए बादाम या तिल का तेल बेस्ट रहेगा। ऑयल को आप हल्का सा गर्म करके और फिर चेहरे पर लगाकर 2-3 मिनट तक सर्कुलर मोशन से हल्के मसाज करें। इसके अलावा, आप टी-जोन, गाल और जॉलाइन पर खास ध्यान दें। स्किन को हल्के गुनगुने पानी से धो सकते हैं।

मुल्तानी मिट्टी से क्लींजिंग करें

इसके बाद आप मुल्तानी मिट्टी से क्लींजिंग कर सकते हैं। सबसे पहले आप एक से दो चम्मच मुल्तानी मिट्टी लें और इसमें गुलाब जल मिक्स करके पेस्ट बना दें। यदि आपकी स्किन ड्राई हो तो गुलाब जल की जगह दूध का इस्तेमाल कर सकते हैं और आप इसकी एक पतली लेयर स्किन पर लगाएं कम से कम 5-10 मिनट के लिए छोड़ दें। अच्छे से सूख जाने के बाद आप सर्कुलर मोशन में मसाज कर सकते हैं। यह आपकी स्किन को एक्सफोलिएट करेगा। आखिर में गुनगुने पानी से चेहरे को धो लें।

मॉइश्चराइजर लगाएं

डबल क्लींजिंग मेथड़ के बाद आप अपनी स्किन टाइप के अनुसार मॉइश्चराइजर जरुर लगाएं। चाहे आप एलोवेरा जेल चेहरे पर अप्लाई कर सकते है। ●

बालों को बनाएं स्मूथ व शाइनी

आजकल बालों के झड़ने की समस्या कॉमन होती जा रही है। वहीं कुछ लोग ड्राई बालों से परेशान हैं, तो किसी का हेयर फॉल हो रहा है। इन समस्याओं की वजह हमारी खराब लाइफस्टाइल, अनहेल्दी आदतें हैं, जोकि बालों और सेहत पर बुरा असर डालती हैं। ऐसे में अगर आप भी शाइनी और स्मूथ बाल पाने की चाहत रखते हैं, तो आपको अपनी रूटीन में कुछ हेल्दी आदतों को शामिल करना चाहिए। जिससे कि बालों की सेहत में सुधार किया जा सके।

सुबह बालों को कंघी करें- सुबह उठकर जब आप बालों को कंघी करते हैं, तो बाल उलझते नहीं हैं और बालों को फ्रेशनेस भी मिल जाती है। वहीं अगर आपको पूरे दिन स्मूथ और शाइनी बाल चाहिए हैं, तो बालों को कंघी जरूर करें। खासकर अगर आप रात को बाल खोलकर सोते हैं। ऐसे में बाल ज्यादा उलझ सकते हैं और बाल भी ज्यादा गिरते हैं। इसलिए सुबह बालों को कंघी करके सुलझा लें।

प्रोटीन रिच ब्रेकफास्ट- बालों को स्मूथ, शाइनी और हेल्दी बनाने के लिए सुबह प्रोटीन रिच ब्रेकफास्ट करना चाहिए। इससे बालों को जरूरी अमिनो एसिड्स मिलते हैं, जोकि बालों की जड़ों को मजबूती देने का साथ शाइन बढ़ाते हैं।

बार-बार छूने से बचें- बालों को दिनभर स्मूथ बनाए रखने के लिए बार-बार बालों को छूने से बचना चाहिए। सुबह नहाने के बाद गीले बालों पर कंघी करने की भूल नहीं करनी चाहिए। इससे बाल अधिक उलझकर टूटते हैं। कभी भी सुबह गीले बालों पर ड्रायर या अन्य मशीनों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। ●

ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल प्रौद्योगिकी का महत्व

-निर्मल चंद्र

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल प्रौद्योगिकी को अपनाने से हाल ही के दिनों में सकारात्मक बदलाव आया है, जिसके कारण शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और आर्थिक सशक्तिकरण के क्षेत्रों में अत्याधुनिक डिजिटल समाधानों के एकीकरण के माध्यम से शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच के अंतर को कम कर दिया है। परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले करोडों लोगों के जीवन में आ रहीं उपरोक्त समस्याओं में सुधार संभव हुआ है। वर्तमान सरकार ने डिजीटलीकरण को बढ़ावा देने के उदेश्य से नीतिगत स्तर पर कई कदम उठाए गए हैं, जिसके अंतर्गत बैंक -खातों को आधार से जोड़ना, नोटबंदी के द्वारा डिजीटलीकरण को बढ़ावा देना आदि कई प्रयास शामिल हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल क्रांति सीखने की खाई को पाटना

कोविड -19 महामारी के दौरान दुनिया भर के लोग कोरोना महामारी के कारण हुई तबाही से भलीभाँति परिचित है। इस संकट में डिजिटल प्रौद्योगिकियां का अधिक से अधिक प्रयोग करते हुए शिक्षा के महत्व पर विशेष बल दिया गया था। महामारी के उस दौर मे डिजिटल प्रौद्योगिकियां एक क्रांति के रूप मे उभर कर सामने आई जिसने ग्रामीण समाज को एक नई दिशा प्रदान की।

प्रधानमंत्री डिजिटल साक्षरता अभियान (पीएमजीदिशा) और पीएम ई-विद्या कार्यक्रम, सरकार की दो प्रमुख पहलें, ग्रामीण एवं सुदूर क्षेत्रों में वयस्कों और छात्रों को डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण और ऑनलाइन शिक्षण सामग्री तक पहुंच प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

शिक्षा मंत्रालय के एक अध्ययन के अनुसार, 2017 में इस अभियान के शुरू होने के बाद से, (पीएमजीदिशा) कार्यक्रम ने 5.5 करोड़ से अधिक ग्रामीण निवासियों को डिजिटल कौशल में प्रशिक्षित किया है, जिससे उन्हें डिजिटल दुनिया में सफलतापूर्वक प्रवेश करने हेतु सक्षम बनाया गया है।

डिजिटल डायग्नोस्टिक्स और टेलीमेडिसिन स्वास्थ्य सेवा में क्रांति ला रहे हैं।

ग्रामीण भारत में, डिजिटल डायग्नोस्टिक्स और टेलीमेडिसिन के उपयोग ने स्वास्थ्य सेवाओं को प्रदान करने में आ रही समस्याओं को खत्म कर दिया है, आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (एबीडीएम) द्वारा एक एकीकृत डिजिटल स्वास्थ्य बुनियादी ढांचा बनाया गया है, जो चिकित्सा सेवाओं और इलेक्ट्रॉनिक स्वास्थ्य रिकॉर्ड करने में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार, महामारी के दौरान, ग्रामीण क्षेत्रों में टेलीमेडिसिन सेवाओं का उपयोग 700ः से अधिक बढ़ गया। यह विशेष स्वास्थ्य देखभाल और भौगोलिक बाधाओं तक सीमित पहुंच के मुद्दों को संबोधित करने में इन प्रौद्योगिकियों की परिवर्तनकारी क्षमता पर प्रकाश डालता है।

कृषि को बढ़ावा देना : सटीक खेती और बाजारों से लिंकेज

ग्रामीण भारत में डिजिटल तकनीक ने कृषि परिवेश को पूरी तरह से बदल दिया है। राष्ट्रीय कृषि बाजार (ई-एनएएम) मंच और डिजिटल इंडिया, भूमि अभिलेख, आधुनिकीकरण कार्यक्रम (डीआईएलआरएमपी) जैसे कार्यक्रमों की मदद से, किसानों के पास अब ऑनलाइन बाजार, मौसम की भविष्यवाणी और भूमि रिकॉर्ड तक के बारे में जानकारी प्राप्त करना डिजिटलीकरण से संभव हो पाया है।

कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा जारी एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि कृषि तकनिकियों को सक्षम बनाने के लिए डिजिटल उपकरणों और सेंसर के उपयोग से विभिन्न राज्यों में फसल की पैदावार में 20-30ः की वृद्धि हुई है, जिससे ग्रामीण समुदायों के जीवन यापन में काफी सुधार हुआ है।

डिजिटल समावेश के माध्यम से वित्तीय सशक्तिकरण को प्रोत्साहित करना

ग्रामीण एवं शहरों के लिए, डिजिटल बैंकिंग सेवाओं के लिए धक्का ने सब कुछ बदल दिया है। पीएमजेडीवाई, या प्रधान मंत्री जन धन योजना जैसी योजनाएं, और यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (ळझ्घ) द्वारा सुविधा प्रदान की गई, डिजिटल, क्रेडिट और बैंकिंग मनी ट्रांसफर तक आसान पहुंच।

भारतीय रिजर्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार, बैंक खातों वाले वयस्क ग्रामीण निवासियों का अनुपात बढ़ गया है। 2014 और 2021 के बीच 53झ से 80झ तक, आर्थिक सशक्तिकरण और वित्तीय समावेशन को आगे बढ़ाने में परियोजनाओं के क्रांतिकारी प्रभाव को दर्शाता है।

महिला सशक्तिकरण के लिए डिजिटल उद्यमिता और कौशल विकसित करना

ग्रामीण महिलाओं को कौशल विकास और उद्यमिता के कार्यक्रमों तक पहुंच प्रदान करके, डिजिटल प्रौद्योगिकियों ने उन्हें सशक्त भी बनाया है।

महिलाएं अब अपने आर्थिक और सामाजिक उत्थान के लिए डिजिटल तकनीकों का उपयोग कर सकती हैं, महिला ई-हाथ प्लेटफॉर्म और दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना (डीडीयू-जीकेवाई) जैसी पहलों के लिए धन्यवाद, जो एक अधिक समावेशी और न्यायसंगत डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र बना रही है।

प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान (पीएमजीडीआईएसएचए), भारतनेट परियोजना और कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) जैसी सरकारी पहलों का लक्ष्य डिजिटल विभाजन को पाटकर ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक समावेशी डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना है। ये कार्यक्रम उच्च गति के इंटरनेट एक्सेस, डिजिटल साक्षरता में प्रशिक्षण और डिजिटल सेवाओं की पेशकश करके ग्रामीण समुदायों को सशक्त बनाना चाहते हैं।

बाधाएं और आगे का रास्ता

भले ही सुधार हुआ है, खराब बुनियादी ढांचे, डिजिटल साक्षरता की कमी और सांस्कृतिक बाधाओं सहित मुद्दे अभी भी ग्रामीण भारत में डिजिटल प्रौद्योगिकियों का व्यापक रूप से उपयोग करने से रोकते हैं। इन मुद्दों को हल करने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि डिजिटल परिवर्तन के लाभों को अंतिम मील तक महसूस किया जाता है, सार्वजनिक, वाणिज्यिक और नागरिक समाज क्षेत्रों द्वारा लगातार प्रयास आवश्यक हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग समावेशी विकास और सतत विकास की वास्तविक क्षमता को उजागर करने की कुंजी है क्योंकि भारत डिजिटल रूप से सशक्त राष्ट्र के अपने दृष्टिकोण के करीब है। ग्रामीण भारत डिजिटल समाधानों की क्षमता का उपयोग करके समृद्धि, सशक्तिकरण और सामाजिक परिवर्तन के एक नए युग की शुरुआत कर सकता है।

शोध छात्र, कृषि प्रसार विभाग, बांदा कृषि एवं प्रौधोगिकी विश्वविद्यालय बांदा उत्तर प्रदेश

गाँव गिराँव हिन्दी मासिक पत्रिका पाठकों के लिए gaongiraw.in पर भी उपलब्ध।

अन्य वेबपेज के लिए देखें

www.gaongiraw.com

www.gaongirawsports.com

एआई और खेती : कृत्रिम बुद्धिमत्ता से कृषि का कायाकल्प

डॉ. पंकज कुमार ओझा

भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि की रीढ़ की हड्डी की भूमिका रही है, जो लाखों लोगों की आजीविका का आधार है। लेकिन बदलते समय, बढ़ती जनसंख्या और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों ने खेती को और जटिल बना दिया है। ऐसे में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) एक गेम-चेंजर के रूप में उभर रही है। यह तकनीक न केवल खेती को अधिक उत्पादक और कुशल बना रही है, बल्कि इसे टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल दिशा में ले जा रही है। ड्रोन, सेंसर, मशीन लर्निंग और डेटा एनालिटिक्स जैसे उपकरणों के साथ, एआई भारतीय किसानों को स्मार्ट और सूचित निर्णय लेने में सक्षम बना रही है। यह लेख इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे एआई भारतीय कृषि को नया रूप दे रही है।

एआई का कृषि में योगदान

एआई एक ऐसी तकनीक है जो डेटा के विश्लेषण, भविष्यवाणी और स्वचालित प्रक्रियाओं के माध्यम से कार्य को आसान बनाती है। कृषि में इसका उपयोग मिट्टी, फसल, मौसम और बाजार की जानकारी को एकत्र करने और विश्लेषण करने में हो रहा है। उदाहरण के लिए, एआई आधारित सॉफ्टवेयर किसानों को यह बताते हैं कि उनकी फसल को कब और कितना पानी चाहिए, कौन सा उर्वरक उपयुक्त है, या कीटों का प्रकोप कब होने की संभावना है। यह डेटा-संचालित दृष्टिकोण न केवल उत्पादन बढ़ाता है, बल्कि लागत को भी कम करता है। भारत जैसे देश में, जहां छोटे और सीमांत किसान बहुसंख्यक हैं, यह तकनीक उनकी आय और जीवन स्तर को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

स्मार्ट खेती और डेटा विश्लेषण

एआई का सबसे बड़ा योगदान स्मार्ट खेती को बढ़ावा देना है। मिट्टी में सेंसर लगाकर, एआई मिट्टी की नमी, पोषक तत्वों की मात्रा और अम्लता का विश्लेषण करता है। इसके आधार पर किसानों को सुझाव दिए जाते हैं कि कौन सी फसल बोई जाए और कब। उदाहरण के लिए, यदि मिट्टी में नाइट्रोजन की कमी है, तो एआई आधारित ऐप्स किसानों को सही मात्रा में उर्वरक का उपयोग करने की सलाह देते हैं। इसके अलावा, सैटेलाइट इमेजरी और ड्रोन से प्राप्त डेटा फसलों की वृद्धि और स्वास्थ्य की निगरानी करता है। यह तकनीक किसानों को सटीक खेती (Precision Farming) अपनाने में मदद करती है, जिससे संसाधनों का उपयोग कम होता है और उत्पादन अधिक।

ड्रोन और रोबोटिक्स का उपयोग

ड्रोन और रोबोटिक्स ने खेती को एक नए स्तर पर पहुँचाया है। एआई से लैस ड्रोन खेतों की हवाई तस्वीरें लेते हैं और फसलों में रोग, कीट या पोषक तत्वों की कमी का पता लगाते हैं। ये ड्रोन न केवल निगरानी करते हैं, बल्कि कीटनाशकों का छिड़काव भी कर सकते हैं, वह भी केवल प्रभावित क्षेत्रों में, जिससे रसायनों का उपयोग कम होता है। दूसरी ओर, स्वचालित ट्रैक्टर और रोबोट बुवाई, निराई और कटाई जैसे कार्यों को तेज और कुशल बनाते हैं। भारत में कुछ स्टार्टअप, जैसे कि DeHaat और TartanSense, ऐसे रोबोट विकसित कर रहे हैं जो छोटे किसानों के लिए सस्ते और उपयोगी हैं।

मौसम पूर्वानुमान और जोखिम प्रबंधन

मौसम की अनिश्चितता भारतीय किसानों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। एआई आधारित मौसम मॉडल अब अधिक सटीक और स्थानीयकृत पूर्वानुमान प्रदान करते हैं। ये मॉडल सैटेलाइट डेटा, ऐतिहासिक मौसम पैटर्न और मशीन लर्निंग का उपयोग करके बारिश, सूखा या तूफान की भविष्यवाणी करते हैं। इससे किसान अपनी फसलों की बुवाई और कटाई का समय बेहतर ढंग से तय कर सकते हैं। इसके अलावा, एआई बीमा कंपनियों को जोखिम का आकलन करने में मदद करता है, जिससे किसानों को प्राकृतिक आपदाओं के खिलाफ बेहतर बीमा कवरेज मिलता है।

जैविक खेती को बढ़ावा

जैविक खेती की मांग बढ़ रही है, और एआई इसमें महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। यह तकनीक रासायनिक उर्वरकों और

कीटनाशकों के उपयोग को कम करने में मदद करती है। उदाहरण के लिए, एआई आधारित सिस्टम फसलों में कीटों की पहचान करते हैं और केवल आवश्यक क्षेत्रों में जैविक कीटनाशकों का उपयोग करने की सलाह देते हैं। इससे न केवल पर्यावरण की रक्षा होती है, बल्कि जैविक उत्पादों की गुणवत्ता और मांग भी बढ़ती है। भारत में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए एआई एक महत्वपूर्ण उपकरण साबित हो सकता है।

भारत में चुनौतियाँ

हालांकि एआई के लाभ अनेक हैं, लेकिन भारत में इसके व्यापक उपयोग में कुछ चुनौतियाँ भी हैं। पहली चुनौती है लागत। ड्रोन, सेंसर और स्मार्ट मशीनें महँगी हो सकती हैं, जो छोटे किसानों के लिए वहन करना मुश्किल है। दूसरी चुनौती है डिजिटल साक्षरता। ग्रामीण क्षेत्रों में कई किसानों को स्मार्टफोन और ऐप्स का उपयोग करने का ज्ञान नहीं है। तीसरी चुनौती है बुनियादी ढांचे की कमी, जैसे कि इंटरनेट कनेक्टिविटी और बिजली। इन समस्याओं का समाधान सामुदायिक स्तर पर तकनीकी प्रशिक्षण, सरकारी सब्सिडी और सहकारी मॉडल के माध्यम से किया जा सकता है।

सरकार और स्टार्टअप की भूमिका

भारत सरकार और निजी क्षेत्र एआई को कृषि में एकीकृत करने के लिए सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं। डिजिटल इंडिया और स्टार्टअप इंडिया जैसी पहलें तकनीकी नवाचार को बढ़ावा दे रही हैं। CropIn, AgriApp, और DeHaat जैसे स्टार्टअप किसानों को सस्ते और उपयोगी एआई समाधान प्रदान कर रहे हैं। ये स्टार्टअप न केवल तकनीक विकसित कर रहे हैं, बल्कि किसानों को प्रशिक्षण भी दे रहे हैं ताकि वे इसका अधिकतम लाभ उठा सकें। सरकार भी डिजिटल एग्रीकल्चर मिशन जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से एआई को बढ़ावा दे रही है।

भविष्य की संभावनाएँ

एआई के साथ भारतीय कृषि का भविष्य उज्ज्वल है। अगले कुछ वर्षों में, हम और अधिक स्मार्ट खेती, डेटा-संचालित निर्णय और टिकाऊ प्रथाओं को देख सकते हैं। एआई न केवल उत्पादन बढ़ाएगा, बल्कि किसानों की आय को दोगुना करने के सरकारी लक्ष्य को भी साकार करेगा। साथ ही, यह तकनीक भारत को वैश्विक कृषि बाजार में और अधिक प्रतिस्पर्धी बनाएगी। भविष्य में, एआई और ब्लॉकचेन जैसी तकनीकों का संयोजन आपूर्ति श्रृंखला को और पारदर्शी और कुशल बना सकता है।

निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता भारतीय कृषि को एक नए युग में ले जा रही है। यह तकनीक न केवल खेती को अधिक कुशल और लाभकारी बना रही है, बल्कि इसे पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊ भी बना रही है। किसानों, सरकार और तकनीकी कंपनियों के सहयोग से, एआई भारत की खेती को वैश्विक स्तर पर और अधिक प्रतिस्पर्धी बना सकती है। यह समय है कि हम इस तकनीकी क्रांति का हिस्सा बनें और भारतीय कृषि को नई ऊँचाइयों तक ले जाएँ।

बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा

काशी : आध्यात्मिकता का सनातन केंद्र

आचार्य पंडित श्यामधर शुक्ल

काशी, जिसे वाराणसी या बनारस के नाम से भी जाना जाता है, भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक राजधानी है। यह न केवल एक शहर है, बल्कि एक जीवंत संस्कृति, आस्था और परंपराओं का संगम है। गंगा के तट पर बसी काशी को विश्व का सबसे प्राचीन जीवंत शहर माना जाता है, जिसे भगवान शिव का निवास और मोक्ष का द्वार कहा जाता है। यहाँ की गलियाँ, घाट, मंदिर और साधु-संतों की मौजूदगी इसे आध्यात्मिकता का एक अनूठा केंद्र बनाती है। यह लेख काशी की आध्यात्मिकता, इसके ऐतिहासिक महत्व और समकालीन प्रासंगिकता पर प्रकाश डालता है।

काशी का ऐतिहासिक और पौराणिक महत्व

काशी का उल्लेख वेदों, पुराणों और उपनिषदों में मिलता है, जो इसे सनातन धर्म का हृदय बनाता है। स्कंद पुराण में काशी को 'आनंदवन' कहा गया है, जहाँ शिव स्वयं निवास करते हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान शिव ने इस शहर की स्थापना की थी, और यहाँ मृत्यु के बाद मोक्ष की प्राप्ति होती है। काशी विश्वनाथ मंदिर, जो भगवान शिव को समर्पित है, यहाँ का सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। इसके अलावा, काशी को बौद्ध और जैन धर्म में भी विशेष स्थान प्राप्त है। भगवान बुद्ध ने अपना पहला उपदेश पास ही के सारनाथ में दिया था, और जैन तीर्थंकरों का जन्म भी यहीं हुआ था। यह ऐतिहासिक और धार्मिक संगम काशी को आध्यात्मिकता का अनमोल रत्न बनाता है।

गंगा और आध्यात्मिकता का अटूट बंधन

काशी की आत्मा गंगा नदी में बसती है। गंगा के घाट, जैसे दशाश्वमेध, मणिकर्णिका, और अस्सी, न केवल स्नान और पूजा के स्थान हैं, बल्कि जीवन और मृत्यु के दर्शन को समझने का केंद्र भी हैं। मणिकर्णिका घाट, जहाँ अंतिम संस्कार किए जाते हैं, यह सिखाता है कि जीवन क्षणभंगुर है, और आत्मा की मुक्ति ही अंतिम लक्ष्य है। गंगा आरती, जो हर शाम दशाश्वमेध घाट पर होती है, आध्यात्मिक ऊर्जा का एक अनुपम दृश्य है। यहाँ के घाटों पर साधु, तीर्थयात्री और पर्यटक एक साथ आध्यात्मिकता का अनुभव करते हैं, जो काशी की विश्वव्यापी अपील को दर्शाता है।

काशी में आध्यात्मिक प्रथाएँ और परंपराएँ

काशी आध्यात्मिक प्रथाओं का एक जीवंत केंद्र है। यहाँ योग, ध्यान, और वेदांत के शिक्षण केंद्रों की भरमार है। काशी के आश्रम और गुरुकुल प्राचीन ज्ञान को आधुनिक पीढ़ी तक पहुँचाते हैं। यहाँ की गलियों में भजन-कीर्तन, मंत्रोच्चार और शास्त्रों की चर्चा एक सामान्य दृश्य है। काशी में हर साल होने वाले उत्सव, जैसे शिवरात्रि, देव दीपावली और गंगा महोत्सव, आध्यात्मिकता को उत्सव के रूप में प्रस्तुत करते हैं। इसके अलावा, काशी में पंचक्रोशी यात्रा और काशी विश्वनाथ के दर्शन तीर्थयात्रियों के लिए विशेष महत्व रखते हैं। ये प्रथाएँ न केवल आस्था को मजबूत करती हैं, बल्कि आत्मिक शांति और एकता का संदेश भी देती हैं।

काशी का समकालीन आध्यात्मिक महत्व

आज के युग में, जब लोग तनाव और भौतिकवाद से जूझ रहे हैं, काशी एक आध्यात्मिक शरणस्थली के रूप में उभर रही है। यहाँ की शांति और सादगी लोगों को आत्म-चिंतन और ध्यान के लिए आकर्षित करती है। काशी में योग और मेडिटेशन रिट्रीट्स की बढ़ती लोकप्रियता इसका प्रमाण है। विश्व भर से लोग यहाँ आकर आध्यात्मिकता, योग और भारतीय दर्शन को समझने का प्रयास करते हैं। काशी का यह आकर्षण इसे एक वैश्विक आध्यात्मिक केंद्र बनाता है, जो विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों को एक मंच पर लाता है।

काशी की चुनौतियाँ और संरक्षण की आवश्यकता

हालांकि काशी आध्यात्मिकता का प्रतीक है, लेकिन इसे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। गंगा में प्रदूषण, अव्यवस्थित शहरीकरण और भीड़भाड़ इसके आध्यात्मिक स्वरूप को प्रभावित कर रहे हैं। गंगा की स्वच्छता और घाटों का रखरखाव एक बड़ी चुनौती है। सरकार की 'नमामि गंगे' परियोजना और स्थानीय संगठनों के प्रयास इस दिशा में सकारात्मक कदम हैं, लेकिन अभी और जागरूकता और सहयोग की आवश्यकता है। काशी की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को संरक्षित करने के लिए सामुदायिक भागीदारी और टिकाऊ विकास जरूरी है।

काशी का वैश्विक प्रभाव

काशी केवल भारत तक सीमित नहीं है; इसका प्रभाव विश्व स्तर पर फैला है। यहाँ की आध्यात्मिकता ने विश्व भर के दार्शनिकों, लेखकों और यात्रियों को प्रेरित किया है। मार्क ट्वेन ने काशी को 'इतिहास से भी पुराना' कहा था, और आज भी यह अपनी प्राचीनता और आधुनिकता के संगम से लोगों को आकर्षित करता है। काशी की गलियों में बुद्ध, शंकराचार्य और तुलसीदास जैसे महान व्यक्तित्वों की छाप है, जो इसे एक जीवंत आध्यात्मिक विश्वविद्यालय बनाती है।

निष्कर्ष

काशी न केवल एक शहर है, बल्कि एक अनुभव है, एक भावना है, और आध्यात्मिकता का एक जीवंत केंद्र है। यहाँ की गंगा, घाट, मंदिर और परंपराएँ जीवन, मृत्यु और मोक्ष के दर्शन को जीवंत करती हैं। काशी वह स्थान है जहाँ भौतिक और आध्यात्मिक दुनिया का मिलन होता है, और हर यात्री को आत्म-चिंतन का अवसर मिलता है। इसे संरक्षित करना और इसकी आध्यात्मिकता को जीवित रखना हम सभी की जिम्मेदारी है। काशी का आलिंगन हर उस व्यक्ति को शांति और प्रेरणा देता है जो इसके आध्यात्मिक आलोक में कदम रखता है।

शक्ति व साहस का पर्व है नवरात्रि

नवरात्रि का मां दुर्गा के नौ रूपों की पूजा और आराधना के लिए समर्पित है जिन्हें शक्ति, साहस, और नारी सशक्तिकरण का प्रतीक माना जाता है। नवरात्रि का अर्थ है 'नौ रातें', और इस दौरान भक्त देवी दुर्गा की विशेष पूजा करते हैं, उपवास रखते हैं, और भक्ति में लीन रहते हैं। नवरात्रि का त्योहार एक बार वसंत ऋतु के दौरान चैत्र नवरात्रि और शरद ऋतु के दौरान शरद नवरात्रि के रूप में मनाया जाता है। शरद नवरात्रि अश्विन के महीने के दौरान मनाई जाती है जो आमतौर पर सितंबर या अक्टूबर में आती है। वहीं चैत्र नवरात्रि हिन्दू कैलेंडर के चैत्र महीने के दौरान मनाई जाती है। चैत्र नवरात्रि आमतौर पर मार्च या अप्रैल महीने में मनाई जाती है। नवरात्रि एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ होता है नौ रातें। इन नौ रातों और दस दिनों के दौरान शक्ति- देवी के नौ रूपों की पूजा की जाती है। दसवां दिन दशहरा के नाम से प्रसिद्ध है।

वसन्त की शुरुआत और शरद ऋतु की शुरुआत, जलवायु और सूरज के प्रभावों का महत्वपूर्ण संगम माना जाता है। इन दो समय मां दुर्गा की पूजा के लिए पवित्र अवसर माने जाते है। त्योहार की तिथियां चन्द्र कैलेंडर के अनुसार निर्धारित होती हैं। यह पूजा वैदिक युग से पहले प्रागैतिहासिक काल से है। नवरात्रि के पहले तीन दिन देवी दुर्गा की पूजा करने के लिए समर्पित किए गए हैं। यह पूजा उनकी ऊर्जा और शक्ति की की जाती है। प्रत्येक दिन दुर्गा के एक अलग रूप को समर्पित है।

नवरात्रि से हमें अधर्म पर धर्म और बुराई पर अच्छाई के जीत की सीख मिलती हैं। यह हमें बताती है की इंसान अपने अंदर की मूलभूत अच्छाइयों से नकारात्मकता पर विजय प्राप्ती और स्वयं के अलौकिक स्वरूप से साक्षात्कार कैसे कर सकता है। भारतीय जन-जीवन में धर्म की महत्ता अपरम्पार है। यह भारत की गंगा-जमुना तहजीब का ही नतीजा है कि सब धर्मों को मानने वाले लोग अपने-अपने धर्म को मानते हुए इस देश में

भाईचारे की भावना के साथ सदियों से एक साथ रहते चले आ रहे हैं। यही कारण है की पूरे विश्व में भारत की धर्म व संस्कृति सर्वोतम मानी गयी है। विभिन्न धर्मों के साथ जुड़े कई पर्व भी है जिसे भारत के कोने - कोने में श्रध्दा, भक्ति और धूमधाम से मनाया जाता है। उन्ही में से एक है नवरात्रि।

नवरात्रि पर्व के नौ दिनों के दौरान आदिशक्ति जगदम्बा के नौ विभिन्न रूपों की आराधना की जाती है। ये नौ दिन वर्ष के सर्वाधिक पवित्र दिवस माने गए हैं। इन नो दिनों का भारतीय धर्म एवं दर्शन में ऐतिहासिक महत्व है और इन्हीं दिनों में बहुत सी दिव्य घटनाओं के घटने की जानकारी हिन्दू पौराणिक ग्रन्थों में मिलती है। माता के इन नौ रूपों को नवदुर्गा के नाम से भी जाना जाता है जो इस प्रकार हैं -शैलपुत्री, ब्रह्माचारिणी, चन्द्रघन्टा, कूष्माण्डा, स्कन्द माता, कात्यायिनी, कालरात्रि, महागौरी और सिध्दिदात्री।

नवरात्रि वर्ष में चार बार आता है। चैत्र, आषाढ़, अश्विन, पौष प्रतिपदा से नवमी तक मनाया जाता है। नवरात्रि के नौ रातों में तीन देवियों महालक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा के नौ स्वरुपों की पूजा होती है जिन्हें नवदुर्गा कहते हैं। दुर्गा का मतलब जीवन के दुख को हटानेवाली होता है। नवरात्रि एक महत्वपूर्ण प्रमुख त्योहार है जिसे पूरे भारत में पूरे उत्साह के साथ मनाया जाता है। नवरात्रि का त्यौहार असत्य पर सत्य की जीत को दर्शाता है। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार नवरात्रि साल में दो बार मनाया जाता है। हिंदी महीनो के मुताबिक पहला नवरात्रि चैत्र महीने में मनाया जाता है और दूसरी बार अश्विन महीने में मनाया जाता है। नवरात्रि नौ दिनों तक निरंतर चलता है जिसमे देवी माँ के अलग अलग स्वरूपों की लोग भक्ति और निष्ठा के साथ पूजा करते है। भारत में नवरात्रि अलग अलग राज्यों में विभिन्न तरीको और विधियों के संग मनाई जाती है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इन्हीं नौ दिनों में मां दुर्गा धरती पर आती है। उनके आने की खुशी में इन दिनों को दुर्गा उत्सव के तौर पर देशभर में धूमधाम से मनाया जाता हैं।

नवरात्रि के पहले दिन बालिकाओं की पूजा की जाती है। दूसरे दिन युवती की पूजा की जाती है। तीसरे दिन जो महिला परिपक्वता के चरण में पहुंच गयी है, उसकि पूजा की जाती है। नवरात्रि के चैथे, पांचवें और छठे दिन लक्ष्मी- समृद्धि और शांति की देवी की पूजा करने के लिए समर्पित है। आठवे दिन पर एक यज्ञ किया जाता है। नौवा दिन नवरात्रि समारोह का अंतिम दिन है। यह महानवमी के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन उन नौ जवान लड़कियों की पूजा होती है जो अभी तक यौवन की अवस्था तक नहीं पहुंची है। इन नौ लड़कियों को देवी दुर्गा के नौ रूपों का प्रतीक माना जाता है। लड़कियों का सम्मान तथा स्वागत करने के लिए उनके पैर धोए जाते हैं। पूजा के अंत में लड़कियों को उपहार के रूप में नए कपड़े, वस्तुयें, फल प्रदान किए जाते हैं।

शक्ति की उपासना का पर्व शारदीय नवरात्र प्रतिपदा से नवमी तक निश्चित नौ तिथि, नौ नक्षत्र, नौ शक्तियों की नवधा भक्ति के साथ सनातन काल से मनाया जा रहा है। आदिशक्ति के हर रूप की नवरात्र के नौ दिनों में क्रमशरू अलग-अलग पूजा की जाती है। मां दुर्गा की नौवीं शक्ति का नाम सिद्धिदात्री है। ये सभी प्रकार की सिद्धियां देने वाली हैं। इनका वाहन सिंह है और कमल पुष्प पर ही आसीन होती हैं। नवरात्रि के नौवें दिन इनकी उपासना की जाती है।

इस पर्व से जुड़ी एक कथा अनुसार देवी दुर्गा ने एक भैंस रूपी असुर अर्थात महिषासुर का वध किया था। पौराणिक कथाओं के अनुसार महिषासुर के एकाग्र ध्यान से बाध्य होकर देवताओं ने उसे अजय होने का वरदान दे दिया। उसको वरदान देने के बाद देवताओं को चिंता हुई कि वह अब अपनी शक्ति का गलत प्रयोग करेगा। महिषासुर ने अपने साम्राज्य का विस्तार स्वर्ग के द्वार तक कर दिया और उसके इस कृत्य को देख देवता विस्मय की स्थिति में आ गए। महिषासुर ने सूर्य, इन्द्र, अग्नि, वायु, चन्द्रमा, यम, वरुण और अन्य देवताओं के सभी अधिकार छीन लिए और स्वयं स्वर्गलोक का मालिक बन बैठा। देवताओं को महिषासुर के प्रकोप से पृथ्वी पर विचरण करना पड़ रहा था तब महिषासुर के इस दुस्साहस से क्रोधित होकर देवताओं ने देवी दुर्गा की रचना की।

ऐसा माना जाता है कि देवी दुर्गा के निर्माण में सारे देवताओं का एक समान बल लगाया गया था। महिषासुर का नाश करने के लिए सभी देवताओं ने अपने अपने अस्त्र देवी दुर्गा को दिए थे और कहा जाता है कि इन देवताओं के सम्मिलित प्रयास से देवी दुर्गा और बलवान हो गईं थी। इन नौ दिन देवी-महिषासुर संग्राम हुआ और अन्ततरू महिषासुर-वध कर महिषासुर मर्दिनी कहलायीं। नवदुर्गा और दस महाविद्याओं में काली ही प्रथम प्रमुख हैं। भगवान शिव की शक्तियों में उग्र और सौम्य, दो रूपों में अनेक रूप धारण करने वाली दशमहाविद्या अनंत सिद्धियां प्रदान करने में समर्थ हैं। दसवें स्थान पर कमला वैष्णवी शक्ति हैं, जो प्राकृतिक संपत्तियों की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी हैं। देवता, मानव, दानव सभी इनकी कृपा के बिना पंगु हैं, इसलिए आगम-निगम दोनों में इनकी उपासना समान रूप से वर्णित है। सभी देवता, राक्षस, मनुष्य, गंधर्व इनकी कृपा-प्रसाद के लिए लालायित रहते हैं।

नवरात्रि के दौरान उपवास करने से शरीर से विषाक्त पदार्थ निकल जाते हैं, जिससे शरीर स्वस्थ और निरोगी रहता है। नवरात्रि के दौरान ध्यान, योग और भक्ति करने से मन को शांति मिलती है, जिससे तनाव और चिंता कम होती है। नवरात्रि व्रत का मूल उद्देश्य है इंद्रियों का संयम और आध्यात्मिक शक्ति का संचय। वस्तुतः नवरात्र अंतःशुद्धि का महापर्व है। आज वातावरण में चारों तरफ विचारों का प्रदूषण है। ऐसी स्थिति में नवरात्र का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है।

अक्टूबर मास का राशिफल

पं0 राम कृपाल शुक्ल

धर्मशास्त्राचार्य, पुराणेतिहासाचार्य एवं कर्मकाण्ड कोविद

मो. 9415820597

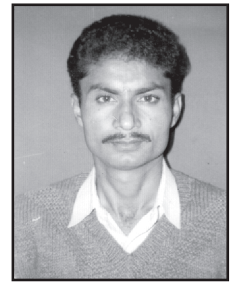

मेष- नौकरी व्यवसाय दोनों ही सामान्य स्थिति में रहेंगे। विपरीत स्थितियों में सुधार होगा। विरोधी परास्त होंगे। दिनचर्या सुधरेगी। गृहभूमि के कार्यों में प्रगति होगी। सरकारी कार्य बनेंगे। परिवार में सहयोग बढ़ेगा। दिनांक 2, 12, 21, 22, 31 नेष्ट हैं।

●

वृषभ- धन-धान्य सुख में वृद्धि होगी। स्त्री के भाग्य का लाभ मिलेगा। धर्माचरण से मन की शक्ति का विकास होगा। नौकरी में अनुकूलता रहेगी। माह के उत्तरार्ध में अधिक लाभकारी परिवर्तन होंगे। पारिवारिक सहयोग उत्तम रहेगा। दिनांक 4, 6, 15, 24, 25 अशुभ हैं।

●

मिथुन- यह माह अच्छे परिवर्तनों के साथ विकास करेगा। आपको भौतिक लाभ के कई अवसर मिलेंगे। जिनकी दशा-अन्तर्दशा अच्छी चल रही है उनकी वाह-वाह होगी। माह के अन्त सन्तान पक्ष से परेशानी हो सकती है। सूर्य का पूजन-पाठ लाभकारी होगा। दिनांक 7, 17, 26, 27 नेष्ट हैं।

●

कर्क- यह मास उत्तम है। विरोधी तत्वों का पराभव सुनिश्चित है। सद्विचारों का उदय होगा। विद्यार्थी प्रतियोगी परिक्षाओं में सफल होंगे। स्वाभिमान एवं मान-सम्मान में वृद्धि होगी। लक्ष्मी की कृपा से धन-धान्य में वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र का विस्तार हो सकता है। दिनांक 9, 11, 20, 28, 29 नेष्ट हैं।

सिंह- आपके लिए यह मास मिलाजुला असर वाला है। श्रमपूर्ण सफलता का योग सुस्पष्ट है। अधिक काम करके सन्तोषप्रद लाभ पा सकेंगे। प्रतियोगिता में बाधा रहेगी। किसी भी क्षेत्र में अपेक्षित नाम नहीं रहेगा। मास का उत्तरार्ध कुछ अच्छा रहेगा। आर्थिक सन्तुलन बिगड़ेगा। दिनांक 2, 12, 21, 30 नेष्ट हैं।

●

कन्या- व्यवसाय में उन्नति का अवसर लेकर यह मास आ रहा है, जैसा चल रहा है वैसा ही चलता रहेगा। अति आत्मविश्वास से हानि हो सकती है। मास के अन्त में कुछ अच्छा रहेगा। विद्या-बुद्धि का विकास होगा। साहस, दिनचर्या और ज्ञानबुद्धि से संतुष्ट रहेंगे। दिनांक 4, 6, 15, 25 नेष्ट हैं।

●

तुला- यह माह आपके लिए अच्छा है। स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। मन में प्रसन्नता रहेगी। गृहस्थ जीवन सुखी रहेगा। नौकरी पेशा वालों के लिए कठिनाइयां रहेंगी। उच्चाधिकारियों से असन्तोष मिलेगा। मास के उत्तरार्ध में कुछ अनुकूल फल प्राप्त करेंगे। बेरोजगारों को रोजगार मिल सकता है। दिनांक 7, 17, 26, 27 नेष्ट हैं।

●

वृश्चिक- यह मास मन में शुभ विचार पैदा करेगा। घर-गृहस्थी के कार्य सुधरेंगे। सत्संगति का लाभ प्राप्त होगा। नेत्र विकार बढ़ सकता है। खर्च में वृद्धि होगी। आमदनी भी बढ़ सकती है। दिनांक 1, 10, 12, 19, 21 नेष्ट हैं।

●

धनु- स्वास्थ सामान्य रहेगा। बुद्धिमानी से बिगड़ा काम बन सकता है। व्यवस्थित दिनचर्या से लाभ होगा। मांगलिक कार्यों में व्यय होगा। उद्योग-व्यापार में लाभ होगा। मास के उत्तरार्ध में मिलाजुला प्रभाव वाला परिवर्तन होगा। दिनांक 2, 4, 12, 22 नेष्ट हैं।

●

मकर- यह माह नौकरी में अनुकूलता देने वाला है। भाग्योदय में स्त्री सहायक होगी। नये-नये सम्पर्क बनेंगे। जितना श्रम उतना लाभ वाला समय है। धर्माचरण से मानसिक विकास होगा। मासान्त अधिक अच्छा रहेगा। दिनांक 4, 6, 15, 25 नेष्ट हैं।

●

कुम्भ- यह माह शुभ परिवर्तक लेकर आ रहा है। कार्यक्षेत्र में ख्याति प्राप्त होगी। अच्छे परिणाम से मन प्रसन्न रहेगा। संतान पक्ष से परेशानी होगी। इसके अलावा सभी पक्ष अनुकूल रहेंगे। दायित्वों की पूर्ति होगी। दिनांक 7, 17, 18, 27 नेष्ट हैं।

●

मीन- आपके लिए यह मास उत्तम है। व्यापार बढ़ेगा और लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होगी। विरोधी परास्त होंगे। जीवनदायी परिस्थिति बनेंगी। अच्छे विचार-व्यवहार से जीवन सुगम रहेगा। विद्यार्थी इस माह में सफलता का अनुभव करेंगे। उत्तम योग है। दिनांक 9, 19, 20, 29 नेष्ट हैं।

●

रजोनिवृत्ति : समस्या और समाधान

डा. संध्या यादव
पूर्व सीनियर रेजिडेंट, बीएचयू
मुख्य चिकित्सक जेपी मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल, फरीदपुर

विश्व रजोनिवृत्ति दिवस 18 अक्टूबर

विश्व रजोनिवृत्ति दिवस दिनांक 18 अक्टूबर को मनाया जाता है। इस दिन का उद्देश्य लोगो को रजोनिवृत्ति के बारे में जागरुकता पैदा करना एवं अच्छे स्वास्थ्य के प्रति सजग बनाना है।

रजोनिवृत्ति 45 से 55 साल के बीच की उम्र में होता है। रजोनिवृत्ति होने पर स्त्री के शरीर में शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार के पविर्तन पाए जाते हैं।

सामान्यतया ये परिवर्तन इतनी धीमी गति से तथा अल्प होते हैं कि स्त्री को कोई असुविधा नहीं होती, किंतु कुछ स्त्रियों को विशेष कष्ट होता है। रजोनिवृत्ति लक्षण हर महिला में अलग-अलग दिखाई देते हैं। किसी में अचानक मासिक धर्म आना बंद हो जाता है तो किसी में यह प्रक्रिया 1-2 साल तक चलती है। कई मामलों में देखा गया है कि कुछ महिलाओं को 45 वर्ष के उम्र से पहले ही मेनोपॉज आ जाता है।

रजोनिवृत्ति के कई लक्षण हैं जैसे नींद न आना रात को बेचैनी और पसीना आना, शरीर के अलग अलग भागों में दर्द रहना, चिड़चिड़ापन और मन उदास रहना, चिंता, थकान, शारीरिक कमजोरी अधिक होना, पेट से संबंधित समस्या होना, पाचनशक्ति कमजोर हो जाना, जी मिचलाना और उल्टियां आना, लगातार कब्ज की समस्या होना,योनि में सूखापन और बालों का झड़ना आदि। हार्मोन में बदलाव और मूड स्विंग की वजह से सिरदर्द भी होने लगता है।

रजोनिवृत्ति के बाद नियमित रूप से व्यायाम करें इससे स्वास्थ्य ठीक रहने के साथ साथ नींद भी अच्छी आएगी,अच्छा महसूस होगा और आप सेहतमंद रहेंगी। नियमित योग तथा प्राणायाम करें। कुछ महिलाओं में रजोनिवृत्ति के बाद हड्डियां भी कमजोर हो जाती हैं इसलिये आहार में दूध, दही, अंडे आदि शामिल करने चाहिये। रजोनिवृत्ति के दौरान डिप्रेशन, स्ट्रेस, अकेले रहने की आदत और अनिद्रा जैसी समस्याएं हो सकती हैं यह समस्या होने पर डॉक्टरी परामर्श अवश्य लें। चूंकि रजोनिवृत्ति उम्र का एक पड़ाव हैं इससे पूरी तरह से निजात पाना मुश्किल है अतः जीवनशैली में बदलाव लाने से कई महिलाएं राहत महसूस कर पाती हैं। रजोनिवृत्ति महिला के जीवन की स्वाभाविक प्रक्रिया है ऐसे में परिवारिक तथा सामाजिक सहयोग एवं सकारात्मक विचार से महिला इस प्रक्रिया को आसानी से पार कर सकती है। ●

मानसिक दिक्कत को न करें नजरअंदाज

विश्व मानसिक स्वास्थ्य संघ ने साल 1992 में विश्वभर के लोगों के मानसिक स्वास्थ्य देखभाल को वास्तविक रूप देने हेतु विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस की स्थापना की थी।इसका मकसद है मानसिक स्वास्थ्य को लेकर लोगों के बीच जागरुकता फैलाना, ताकि दुनियाभर में लोग सिर्फ शारीरिक स्वास्थ्य ही नहीं बल्कि मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे को भी गंभीरता से लें और उसके प्रति सजग और सतर्क बनें। अगर किसी व्यक्ति को किसी तरह की मानसिक दिक्कत होती है तो उसे नजरअंदाज करने की बजाए उसके बारे में बात की जाए और मेंटल हेल्थकेयर को भी उतनी ही अहमियत दी जाए जितनी फिजिकल हेल्थ को दी जाती है। ज्यादातर लोग अपने शरीर को लेकर पूरी तरह से सजग रहते हैं शारीरिक स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखते हैं लेकिन दिमाग को नजरअंदाज कर देते हैं।

भोजन में प्रमुख रूप से फाइबर, प्रोटीन, हेल्दी फैट, कार्बोहाइड्रेट, विटमिन्स और मिनरल्स को सम्मिलित करे अतः संतुलित भोजन करे। संतुलित आहार लेने से हमारी शारीरिक और मानसिक तृप्ति हो जाती है। फिजिकल ऐक्टिविटी और एक्सरसाइज नियमित रूप से करें। खुद को शारीरिक और मानसिक रूप से फिट रखने का यह सबसे अच्छा और आसान तरीका है। रोजाना प्राणायाम करें। अच्छी नींद सूखी, स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक है।

हमेशा उन तरीकों को खोजें जो कि प्रसन्नता देते है और खुद को हर परिस्थिति में खुश रहने का प्रयास करें। ऐसा करना आपके मानसिक स्वास्थ के लिए फायदेमंद होगा।

अपनी जीवनशैली में थोड़ा बदलाव कर इस समस्या को रोकने की कोशिश की जा सकती है। ऐसा इसलिए क्योंकि आज की जीवनशैली की वजह से ही मानसिक विकारों का खतरा काफी तेजी से बढ़ रहा है। ●

बच्चों में फैल रहा है खतरनाक हैंड फुट माउथ सिंड्रोम

भारत में कई जगहों पर, विशेष रूप से दिल्ली और उत्तर प्रदेश के एटा जिले में बच्चों के बीच 'हैंड-फुट-माउथ सिंड्रोम' के मामलों में वृद्धि देखी जा रही है। यूपी के कई जिलों में हैंड फुट माउथ सिंड्रोम वायरस का खतरा बढ़ता ही जा रहा है। 50 से ज्यादा बच्चे अब तक संक्रमित पाए गए हैं। यह वायरस खासतौर पर 10 साल तक के बच्चों को प्रभावित करता है।

क्या हैंड फुट-माउथ सिंड्रोम?

हैंड फुट-माउथ सिंड्रोम एक आम, संक्रामक वायरल बीमारी है जो मुख्य रूप से बच्चों को प्रभावित करती है। यह बीमारी मुंह में, हाथों की हथेलियों पर, और पैरों के तलवों पर दर्दनाक लाल चकत्ते और फफोले पैदा करती है। यह बीमारी कॉक्ससैकी वायरस नामक वायरस के कारण होती है। यह बीमारी आमतौर पर 7 से 10 दिनों में अपने आप ठीक हो जाती है, लेकिन लक्षणों की गंभीरता के अनुसार डॉक्टर की सलाह लेना ज़रूरी है। हालांकि, दुर्लभ मामलों में यह गंभीर भी हो सकती है, खासकर कमजोर प्रतिरक्षा वाले बच्चों में।

हैंड फुट माउथ सिंड्रोम के लक्षण

1. शुरुआती लक्षणः आमतौर पर हल्के बुखार, गले में खराश और भूख न लगना।

2. त्वचा पर चकत्तेः बुखार के 1-2 दिन बाद, मुंह के अंदर, जीभ पर और मसूड़ों पर छोटे, लाल छाले विकसित होते हैं।

3. हाथ और पैरः हाथों की हथेलियों और पैरों के तलवों पर भी लाल दाने या छाले दिखाई देते हैं। ये दाने कभी-कभी नितंबों पर भी हो सकते हैं।

4. अन्य लक्षणः चिड़चिड़ापन, सुस्ती और सिरदर्द।

कैसे फैलाता है?

1. यह बीमारी बहुत संक्रामक होती है और संक्रमित व्यक्ति के लार, नाक से निकलने वाले तरल पदार्थ, या फफोलों से निकलने वाले द्रव के सीधे संपर्क में आने से फैलती है।

2. यह एक संक्रामक बीमारी है और संक्रमित व्यक्ति के लार, बलगम, या छालों में मौजूद तरल पदार्थ के सीधे संपर्क से फैलती है।

3. यह स्कूलों और डेकेयर सेंटरों जैसे भीड़-भाड़ वाले स्थानों में आसानी से फैलती है, जहाँ बच्चे एक-दूसरे के संपर्क में आते हैं और खिलौने जैसी वस्तुओं को साझा करते हैं।

किस तरह करें बचाव?

1. हाथों की सफाईः नियमित रूप से हाथों को साबुन और पानी से धोएं, खासकर शौचालय का उपयोग करने या डायपर बदलने के बाद।

2. सतहों को साफ रखनाः घर और बच्चों के खिलौनों को नियमित रूप से कीटाणुरहित करें।

3. संक्रमित बच्चों को अलग रखनाः यदि बच्चा बीमार है, तो उसे दूसरों से दूर रखें ताकि संक्रमण न फैले।

4. डॉक्टर की सलाह लेंः यदि बच्चे में लक्षण दिखाई दें तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें।

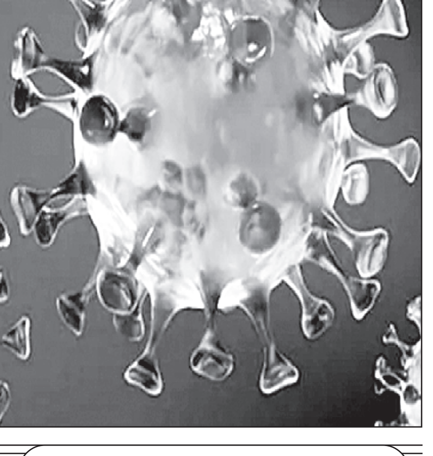

आईएसएसएफ जूनियर विश्व कप उद्घाटित

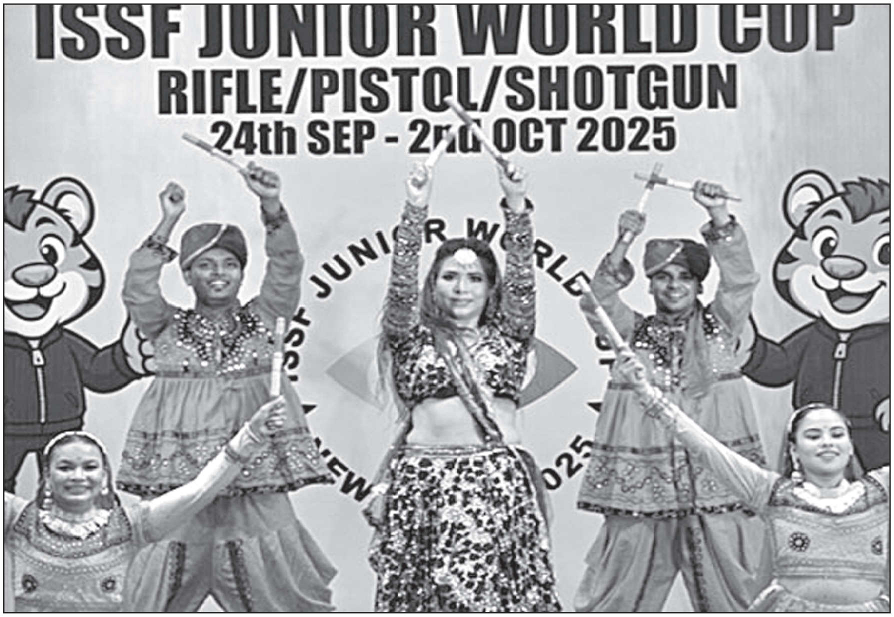

आईएसएसएफ जूनियर विश्व कप राइफल/पिस्टल/शॉटगन नई दिल्ली 2025 का औपचारिक उद्घाटन एनआरएआई के उपाध्यक्ष वी.के. ढल ने डॉ. कर्णी सिंह शूटिंग रेंज में किया। कार्यक्रम की शुरुआत पारंपरिक गणेश वंदना नृत्य के साथ हुई, जिसके बाद भारत की विविध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाते हुए जोशीले भांगड़ा और डांडिया के प्रदर्शन हुए।

एनआरएआई के अध्यक्ष कलिकेश नारायण सिंह देव ने कहा, 'देश में पहली बार आईएसएसएफ जूनियर विश्व कप की मेजबानी करना भारत के लिए गर्व की बात है। जूनियर प्रतियोगिताएं ही भविष्य के ओलंपियनों की खोज का आधार होती हैं और यह आयोजन भारतीय निशानेबाजी के लिए एक मील का पत्थर है। मैं सभी एथलीटों और अधिकारियों का हार्दिक स्वागत करता हूं और आशा करता हूं कि आप न केवल पदक बल्कि भारत और यहां बनी दोस्ती की यादें भी अपने साथ ले जाएंगे।'

आईएसएसएफ के खेल निदेशक पीटर अंडरहिल ने कहा, 'भारत ने विश्व स्तरीय सुविधाओं और प्रतिबद्ध आयोजकों के साथ निशानेबाजी प्रतियोगिताओं की मेजबानी में उच्च मानक स्थापित किए हैं। इस तरह के जूनियर इवेंट हमारे खेल के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण हैं। यह देखना प्रेरणादायक है कि एनआरएआई युवाओं को प्राथमिकता दे रहा है और एक ऐसा मंच तैयार कर रहा है, जहां युवा एथलीट अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर सकें।' ●

2026 एशियाई खेलों में हिस्सा नहीं ले पाएगी पुरुष फुटबॉल टीम

भारतीय फुटबॉल प्रेमियों के लिए बुरी खबर है। दरअसल, साल 2018 में एशियाई खेलों में हिस्सा नहीं ले पाने के बाद भारतीय पुरुष फुटबॉल टीम का अगले साल होने वाले एशियन गेम्स में हिस्सा लेना एक बार फिर असंभव लग रहा है। बता दें कि, भारतीय पुरुष फुटबॉल टीम को एशियाई खेलों में हिस्सा लेने के लिए फिर सरकार की दया पर निर्भर होगी। वहीं जापान के आइची-नागोया में 20वें एशियाई खेल होने हैं। इस बहुत-खेल प्रतियोगिता का 19 सितंबर से 4 अक्टूब 2026 तक होना है। टोक्यो में 1958 और हिरोशिमा में 1994 के बाद नागोया एशियाई खेलों की मेजबानी करने वाला तीसरा जापानी शहर होगा। खेल मंत्रालय ने आइची-नागोया एशियाड के लिए व्यक्तिगत एथलीटों और टीमों की पात्रता के लिए विस्तृत दिशा निर्देश जारी किए। ताजा स्थिति के अनुसार, एशिया में 24वें स्थान पर काबिज फुटबॉल टीम उन सख्त मानदंडों को पूरा नहीं करती है जिनके अनुसार केवल पदक जीतने की क्षमता रखने वाली टीमों और एथलीटों को ही इस महाआयोजन में देश का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना जाएगा। बता दें कि, खेल मंत्रालय की तरफ से जारी परिपत्र में कहा गया है कि फुटबॉल और हॉकी जैसे टीम खेलों और रिले, युगल और मिश्रित युगल जैसी टीम स्पर्धाओं के लिए मानक एशियाई चैंपियनशिप में शीर्ष आठ में स्थान या महाद्वी में टॉप 8 रैंकिंग होगी।

श्रुति हासन ने गायिकी के प्रति जताया प्यार

अभिनेत्री श्रुति हासन ने एक बार फिर अपने प्रशंसकों को अपनी गायिकी से हैरान कर दिया है। गुरुवार को उन्होंने सोशल मीडिया के जरिए अपनी संगीतमय प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

वीडियो में श्रुति ने काले रंग का स्टाइलिश स्लीवलेस बॉडीकॉन टॉप और जींस पहनी है, जिसमें वह बेहद आकर्षक लग रही हैं। उनके खुले बाल उनके लुक को और निखार रहे हैं। पियानो की धुनों के साथ वह अपनी मधुर आवाज में गाना बड़े मन से गा रही हैं।इस वीडियो ने उनके प्रशंसकों का दिल जीत लिया और उनकी बहुआयामी प्रतिभा को एक बार फिर उजागर किया।श्रुति ने वीडियो के साथ एक भावुक कैप्शन भी लिखा, जिसमें उन्होंने अपनी रचनात्मक यात्रा के बारे में खुलकर बात की। उन्होंने लिखा, 'काफी समय हो गया है कोई नया गाना लिखे। सच कहूं तो, मैं लिख नहीं पा रही हूं। यह कभी परफेक्शन की खोज के बारे में नहीं था। जब दिल से भावनाएं निकलती हैं, तो सही समय पर सब कुछ अपने आप सिखा देती हैं। बस वही होना चाहिए जो मैं हूं और वहीं रहना चाहिए जहां मुझे होना चाहिए।'श्रुति हासन न केवल अपनी अभिनय कला के लिए जानी जाती हैं, बल्कि संगीत के क्षेत्र में भी उनकी गहरी रुचि रही है। उन्होंने अपनी आवाज में कई गाने भी गाए हैं और संगीत रचना में भी योगदान दिया है।सोशल मीडिया पर उनके इस पोस्ट को खूब सराहना मिल रही है और प्रशंसक उनके अगले प्रोजेक्ट का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं।

जान्हवी कपूर ने 'संस्कारी' स्टाइल में मनाई नवरात्रि

बॉलीवुड अभिनेत्री जान्हवी कपूर ने नवरात्रि के पावन अवसर पर अपनी आने वाली फिल्म 'सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी' की टीम के साथ पारंपरिक अंदाज में त्योहार का जश्न मनाया, जिसकी झलकियां उन्होंने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर की।तस्वीरों में देखा जा सकता है कि जान्हवी कभी अकेले पोज दे रही हैं, कभी सान्या के साथ नजर आ रही हैं। एक फोटो में वह वरुण की ओर देखकर मुस्कुरा रही हैं। दूसरी तस्वीर में वह चॉकलेट खाती दिख रही हैं। जान्हवी ने इन तस्वीरों को पोस्ट करते हुए कैप्शन में लिखा, ''हैप्पी नवरात्रि संस्कारी स्टाइल।'' इस फिल्म का हाल ही में एक और रोमांटिक गाना 'तू है मेरी' रिलीज किया गया है। इस गाने को संगीतकार जोड़ी सचेत-परंपरा ने गाया और संगीतबद्ध भी किया है, जबकि इसके खूबसूरत बोल कौसर मुनीर ने लिखे हैं। गाना रिलीज के बाद से सोशल मीडिया पर ट्रेंड करने लगा है।गाने के बारे में बात करते हुए जान्हवी कपूर ने कहा, '''तू है मेरी' उन नाजुक और प्यारे पलों को दर्शाता है, जो बिना कुछ कहे भी दिल को छू जाते हैं। इस गाने को लोग बार-बार सुनना चाहेंगे, खासतौर पर तब जब वे किसी से प्यार करते हैं।''

SP
Samajwadi Party
समस्त देशवासियों को
दीपावली, भैया दूज व
डाला छठ की
हार्दिक शुभकामनाएं
हम बदलेंगे
सैयदराजा की तस्वीर
मनोज कुमार सिंह (डब्लू) | पूर्व विधायक
382-सैयदराजा विधानसभा (उ.प्र)

स्व0 मुलायम सिंह यादव अमर रहें!
समाजवादी पार्टी जिन्दाबाद!
मा0 अखिलेश यादव जिन्दाबाद!
समस्त देशवासियों को दीपावली, भैया दूज व
डाला छठ की हार्दिक शुभकामनाएं
विरेन्द्र कुमार बिन्द (डाक्टर)
जिलाध्यक्ष - समाजवादी पार्टी (पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ)
जनपद-चन्दौली मो.- 9984499616

UPI UNIVERSAL

Plasto Industries

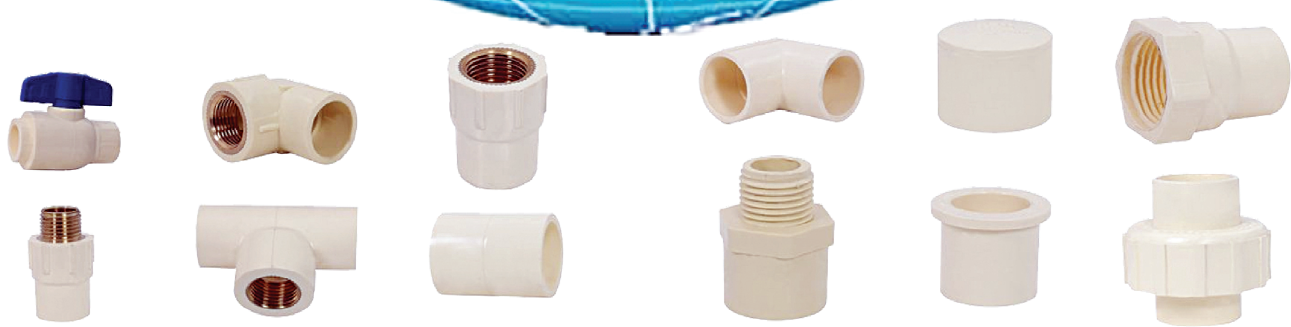

सी-216, सेक्टर-63 नोएडा, गौतम बुद्धनगर

उत्तर प्रदेश पिन-201309 मो0 - 9811191394